इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

इन्दिरा गांधी
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ

BCOC-131
वित्तीय लेखाकरण

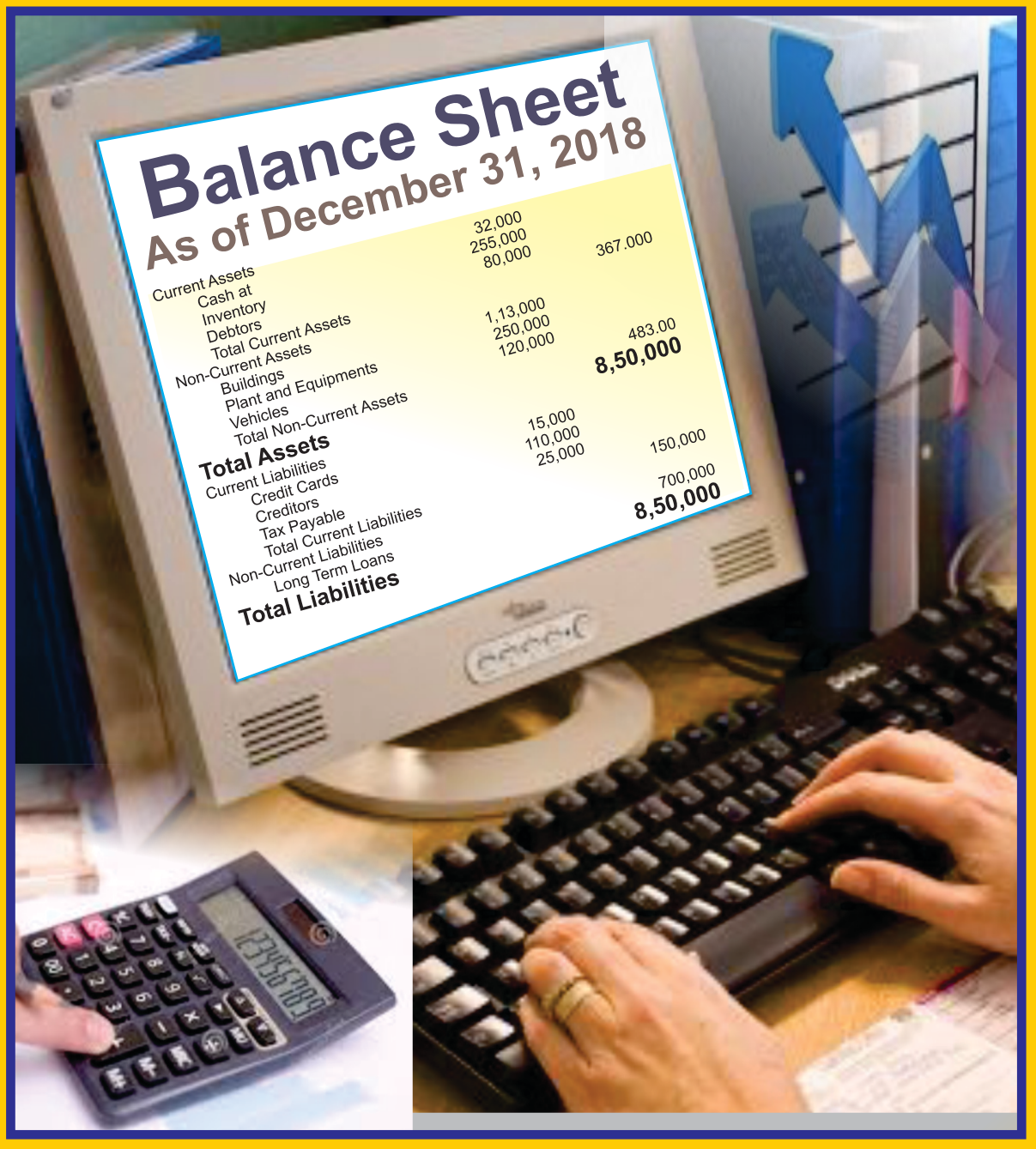

प्रेषण तथा संयुक्त उपक्रम

5

इंदिरा गांधी
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ

BCOC-131
वित्तीय लेखाकरण

खंड

5

प्रेषण तथा संयुक्त उपक्रम

इकाई 15
प्रेषण लेखे-I 5

इकाई 16
प्रेषण लेखे-II 55

इकाई 17
संयुक्त उपक्रम लेखे 77

कार्यक्रम डिजाइन समिति – बी.कॉम (सी.बी.सी.एस.)

प्रो. मधु त्यागी
निदेशक, एस.ओ.एम.एस, इग्नू

प्रो. आर.पी. हुडा
पूर्व कुलपति, एम.डी.
विश्वविद्यालय, रोहतक

प्रो. बी.आर. अनंथन
रानी चेन्नम्मां विश्वविद्यालय,
बेलगाँव, कर्नाटक

प्रो. आई. वी. त्रिवेदी
पूर्व कुलपति, एम.एल. सुखादिया
विश्वविद्यालय, उदयपुर

प्रो. पुरुषोत्तम राव (सेवानिवृत्त)
डिपार्टमेंट ऑफ कामर्स
उस्मानिया विश्वविद्यालय,
हैदराबाद

प्रो. डी.पी.एस. वर्मा (सेवानि.)
डिपार्टमेंट ऑफ कामर्स
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. के.वी. भानुमूर्ति (सेवानि.)
डिपार्टमेंट ऑफ कामर्स
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. कविता शर्मा
डिपार्टमेंट ऑफ कामर्स
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. खुर्शीद अहमद बट
डीन, वाणिज्य एवं प्रबंधन संकाय,
कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर

प्रो. डेवब्रत्ता मित्रा
डिपार्टमेंट ऑफ कामर्स
उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय,डार्जिलिंग

प्रो. आर.के. (सेवानि.)
प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ, इग्नू

संकाय सदस्य
एस.ओ.एम.एस. इग्नू

प्रो. एन.वी. नरसिम्हम
प्रो. नवल किशोर
प्रो. एम.एस.एस. राजू
प्रो. सुनील कुमार
डॉ. सुबोध केशरवानी
डॉ. रशमी बंसल
डॉ. मधुलिका पी. सरकार
डॉ. अनुप्रिया पाण्डेय

पाठ्यक्रम डिजाइन समिति

प्रो. मधु त्यागी
निदेशक, एस.ओ.एम.एस, इग्नू

प्रो. ए.ए. अंसारी,
जामिया मिलिया ईस्लामिया, दिल्ली

सुश्री सुरभि गुप्ता
विवेकानंदा कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संकाय सदस्य
एस.ओ.एम.एस. इग्नू

प्रो. एन.वी. नरसिम्हम
प्रो. नवल किशोर
प्रो. एम.एस.एस. राजू
प्रो. सुनील कुमार
डॉ. सुबोध केशरवानी
डॉ. रशमी बंसल
डॉ. मधुलिका पी. सरकार
डॉ. अनुप्रिया पाण्डेय

पाठ्यक्रम निर्माण दल

लेखाविधि-I : **ई.सी.ओ.-2**

प्रो. सुनील कुमार द्वारा संशोधित
इकाइयाँ 10, 11, 12 व 13

श्री विनोद प्रकाश, एम.एल.एन. कालेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. एम.एस.एस. राजू (पाठ्यक्रम समन्वयक)

प्रो. सुनील कुमार (संपादक एवं पाठ्यक्रम समन्वयक)

प्रो. एन.वी. नरसिम्हम, (संपादक)

अनुवाद

श्री रामतप पांडेय
श्री विनोद प्रकाश, एम.एल.एन. कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
प्रो. स्मिता चतुर्वेदी, एस.ओ.एच., इग्नू
डॉ. परमानंद पांचाल
प्रो. वी.रा. जगन्नाथन
श्री बी.डी. जोशी

सामग्री निर्माण

श्री वाई. एन. शर्मा
सहायक कुलसचिव (प्रकाशन)
एम.पी.डी.डी., इग्नू, नई दिल्ली

श्री सुधीर कुमार
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)
एम.पी.डी.डी., इग्नू, नई दिल्ली

अगस्त, 2019
©इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2019
ISBN : 978-93-89499-44-5
सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के बारे में विश्वविद्यालय कार्यालय मैदान गढ़ी, नई दिल्ली से अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव, सामग्री निर्माण एवं वितरण विभाग द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।
लेजर टाइप सेटिंग : राजश्री कम्प्यूटर्स, वी–166ए, भगवती विहार (नजदीक सेक्टर–2, द्वारका, उत्तम नगर, नई दिल्ली–110059
मुद्रक : मैसर्स ए–वन ऑफसेट प्रिंटर्स, 5/34, कीर्ति नगर, इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली–110015 द्वारा मुद्रित।

खंड 5 प्रेषण तथा संयुक्त उपक्रम

व्यापार में यह एक आम प्रथा है कि प्रेषण (consignment) के आधार पर ऐसी कुछ फर्मों को माल भेजा जाता है, जो प्रेषक (consignor) की ओर से वस्तुओं को बेचने की जिम्मेदारी लेती हैं। प्रेषक प्रत्येक प्रेषण के लाभ तथा हानि को अलग-अलग जानना चाहता है। अतः इसके खाते में कुछ विशिष्टताएं शामिल होती हैं। कभी-कभी विशेष परियोजना अथवा कार्य को संयुक्त रूप से करने के लिए दो अथवा अधिक व्यक्ति सहमत होते हैं। इसे संयुक्त उपक्रम (joint venture) कहा जाता है। इस स्थिति में संयुक्त-उपक्रम के भागीदारों को सह-उपक्रमी (co-partners) कहा जाता है, जो संयुक्त उपक्रम व्यवसाय के लाभ तथा हानि में से अपने हिस्से को निश्चित रूप से अलग-अलग जान लेना चाहते हैं। इस कार्य में वे संयुक्त उपक्रम व्यवसाय के लिए अलग लेखे तैयार करते हैं अथवा इन्हें केवल अपनी-अपनी लेखा पुस्तकों में लिख लेते हैं। तीन इकाइयों के इस खंड में उन पद्धतियों का ब्यौरा दिया गया है, जो प्रेषण तथा संयुक्त उपक्रमों से संबंधित विविध लेन-देनों के रिकार्ड करने के लिए सामान्यतः अपनाई जाती हैं।

इकाई 15 में परेषण से संबंधित विविध संकल्पनाओं पर विचार किया गया है और प्रेषण लेन-देन के रिकार्ड करने के लिए लेखांकन की मूल रूपरेखा का वर्णन किया गया है। इस इकाई में उन सामान्य और असामान्य हानियों के लेखांकन की चर्चा की गयी है जो रास्ते में या प्रेषिती के गोदामों में होती हैं।

इकाई 16 में यह स्पष्ट किया गया है कि अगर प्रेषक लागत से अधिक मूल्य पर माल भेजता है तो प्रेषण लेखे कैसे तैयार किये जाते हैं और ऐसी स्थिति में प्रेषण के लाभ का हिसाब करते समय किस तरह के समायोजन करने होते हैं।

इकाई 17 में संयुक्त-उपक्रम के लेन-देनों के लिए लेखा की विविध पद्धतियों का वर्णन किया गया है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 15 प्रेषण लेखे-I

इकाई की रूपरेखा

15.0 उद्देश्य

15.1 प्रस्तावना

15.2 प्रेषण संबंधी संकल्पनाएं

15.2.1 प्रेषण किसे कहते हैं?

15.2.2 प्रेषण के पक्ष

15.2.3 प्रेषण की विशेषताएं

15.2.4 विक्रय एवं प्रेषण में अंतर

15.2.5 प्रेषण से संबंधित महत्वपूर्ण शब्द

15.3 लेखांकन प्रविष्टियां

15.3.1 प्रेषक की पुस्तकें

15.3.2 प्रेषिती की पुस्तकें

15.4 सीधे लेजर में लेखा करना

15.5 अनबिका स्टॉक

15.5.1 अनबिके स्टॉक का मूल्यांकन

15.5.2 अनबिके स्टॉक का लेखाकरण

15.6 माल की हानि

15.6.1 सामान्य हानि

15.6.2 असामान्य हानि

15.6.3 जब सामान्य हानि तथा असामान्य हानि दोनों एक साथ हों

15.7 सारांश

15.8 शब्दावली

15.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

15.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

15.11 स्वपरख प्रश्न/अभ्यास

15.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग्य हो सकेंगे कि:

- प्रेषण के अर्थ को स्पष्ट कर सकें;
- प्रेषण तथा विक्रय के अंतर को स्पष्ट कर सकें;
- प्रेषण तथा प्रेषिती की पुस्तकों में प्रेषण से संबंधित सौदों की आधारभूत लेखांकन कार्यविधि का वर्णन कर सकें;

- प्रेषण से संबंधित लेन-देनों का लेखा सीधे ही प्रेषक तथा प्रेषिती के लेजर खातों में कर सकें;
- अनबिके स्टॉक का मूल्य ज्ञात कर सकेंगे;
- सामान्य तथा असामान्य हानियों की प्रकृति का वर्णन कर सकें;
- सामान्य हानि की अवस्था में अनबिके स्टॉक का मूल्य ज्ञात कर सकें; और
- माल की सामान्य तथा असामान्य हानियों के लिए की जाने वाली प्रविष्टियों तथा लाभ पर पड़ने वाले उनके प्रभाव का वर्णन कर सकें।

15.1 प्रस्तावना

उत्पादन अपने वितरण के लिये बहुधा विक्रय एजेंटों/वितरकों (selling agents/distributors) का उपयोग करते हैं। कृषि संबंधी वस्तुओं के संबंध में यह बात विशेष रूप से लागू होती है। विक्रय एजेंट/वितरक कई प्रकार से कार्य करते है। इनमें से एक है प्रेषण (consignment) के आधार पर माल प्राप्त करना। इस प्रणाली के अंतर्गत एजेंट (अभिकर्ता) प्रेषक से माल प्राप्त करता है तथा उन्हें उसकी ओर से बेचने का उत्तरदायित्व लेता है। वह बहुधा प्रेषक से प्राप्त संपूर्ण माल बिक जाने के बाद उसका हिसाब चुकता कर देता है। इस तरह इसके लेखांकन में कुछ विशेषताएं आ जाती हैं। इस इकाई में आप प्रेषण से संबंधित संकल्पनाओं के बारे में तथा प्रेषक एवं प्रेषिती की पुस्तकों में प्रेषण से संबंधित आधारभूत लेखांकन कार्यविधि के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। जब सारा माल बिक जाता है तो प्रत्येक प्रेषण पर हुए लाभ को ज्ञात करने की विधि के बारे में भी आप पढ़ चुके हैं। व्यवहार में आप देखेंगे कि विक्रय-विवरण प्रस्तुत करते समय कुछ माल अनबिका रह सकता है। ऐसी स्थिति में जबकि माल रास्ते में हो अथवा जब माल प्रेषिती के गोदाम में रखा हो तो उसके हानि होने की संभावना बनी रहती है। इस इकाई में आप यह जानकारी प्राप्त करेंगे कि अनबिका माल का मूल्य किस प्रकार ज्ञात किया जाता है तथा लेखा पुस्तकों में उसका लेखा किस प्रकार किया जाता है। आप इस बारे में भी जानकारी प्राप्त करेंगे कि यातायात में अथवा प्रेषिती के गोदाम में होने वाली सामान्य तथा असामान्य हानियों के लिए क्या प्रविष्टियां की जाती हैं तथा स्टॉक के मूल्यांकन और प्रेषण पर हुए लाभ पर उनका क्या प्रभाव पड़ता है।

15.2 प्रेषण संबंधी संकल्पनाएं

आप जानते हैं कि उत्पादक कई बार विक्रय एजेंटों/वितरकों को प्रेषण के आधार पर माल भेजते हैं। आइए अब हम यह समझने का प्रयास करें कि वास्तव में प्रेषण से हमारा क्या तात्पर्य है, यह विक्रय से किस प्रकार भिन्न है तथा प्रेषक एवं प्रेषिती के बीच किस प्रकार का संबंध होता है।

15.2.1 प्रेषण किसे कहते हैं ?

जब कोई विनिर्माता अथवा व्यापारी किसी एजेंट के पास अपनी तरफ से बेचने के लिए कुछ माल भेजता है जिस पर एजेंट को कमीशन दिया जाना है तो ऐसे माल को प्रेषण पर भेजा गया माल (goods sent on consignment) कहा जाता है। दूसरे शब्दों में, इसके अंतर्गत

एक उत्पादक/व्यापारी विभिन्न स्थानों पर नियुक्त अपने विक्रय एजेंटों को अपनी ओर से बेचने के लिए अपना माल भेजता है जिस पर उनको निर्धारित दर से कमीशन किया जाना है। किसी फर्म द्वारा किसी दूसरी फर्म को विक्रय के लिए इस, आधार पर माल भेजने की प्रक्रिया को प्रेषण (consignment) कहते हैं तथा इस प्रकार का सौदा प्रेषण सौदा कहलाता है। माल भेजने वाले व्यक्ति के लिए यह निर्गत प्रेषण होता है तथा माल प्राप्त करने वाले व्यक्ति के लिए यह आगत प्रेषण होता है।

15.2.2 प्रेषण के पक्ष (Parties to Consignment)

आप जानते हैं कि प्रेषण में एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को पहले व्यक्ति की ओर से बेचने के लिए माल भेजा जाता है। अतः प्रेषण में दो पक्ष होते हैं – (1) वह व्यक्ति जो माल भेजता है तथा (2) वह व्यक्ति जिसे माल भेजा जाता है। वह व्यक्ति जो एजेंट को माल भेजता है प्रेषक (consignor) कहलाता है तथा वह व्यक्ति जिसे विक्रय के लिए माल भेजा जाता है प्रेषिती (consignee) कहलाता है।

यदि '**क**' नामक कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति '**ख**' को विक्रय के लिए माल भेजता है तो '**क**' प्रेषक कहलाएगा तथा '**ख**' प्रेषिती कहलाएगा। प्रेषक प्रधान (principal) होता है तथा प्रेषिती एजेंट होता है। उनके पारस्परिक संबंध 'एजेंसी के कानून' द्वारा तथा उनके बीच हुए अनुबंध की शर्तों के द्वारा परिचालित होते हैं। प्रेषिती एक विशेष प्रकार का एजेंट होता है जिसके अधिकार में माल होता है। वह उन व्यक्तियों को माल के स्वामित्व का हस्तांतरण करता है जो व्यक्ति उससे माल खरीदते हैं चाहे वह माल का विक्रय प्रधान के निर्देशों के विरूद्ध ही क्यों न करता हो। मान लीजिए कि प्रेषक प्रेषिती को एक निश्चित मूल्य से कम मूल्य पर माल न बेचने का निर्देश देता है। अब यदि प्रेषिती माल को निश्चित मूल्य से कम मूल्य पर बेचता है तो भी क्रेता के पास माल का स्वामित्व विशुद्ध (दोषमुक्त) होगा। हां, प्रेषक प्रेषिती से अनुबंध की शर्तों का उल्लंघन करने के कारण क्षतिपूर्ति की मांग अवश्य कर सकता है। अन्य एजेंटों की भांति प्रेषिती को चाहिए कि यह प्रेषक के सामने सही हिसाब प्रस्तुत करे, उसके प्रति इमानदार रहे तथा उसके निर्देशों के अनुसार ही कार्य करे। उसे पारिश्रमिक प्राप्त करने का तथा प्रेषक की ओर से उसके द्वारा किए गए व्ययों की रकम को प्राप्त करने का अधिकार होता है।

15.2.3 प्रेषण की विशेषताएं (Features of Consignment)

- प्रेषक प्रेषिती को माल लाभ पर बेचने के उद्देश्य से भेजता है।
- प्रेषण के अंतर्गत माल को प्रेषक की संपति माना जाता है तथा उसे पूर्ण रूप से प्रेषक के जोखिम पर ही बेचा जाता है। प्रेषिती माल स्वयं नहीं खरीदता, वह केवल प्रेषक की ओर से उसे बेचने का उत्तरदायित्व लेता है। वह किसी हानि के लिए अथवा माल के नुकसान के लिए उत्तरदायी नहीं होता। लेकिन प्रेषिती को किसी प्रकार की लापरवाही नहीं दिखानी चाहिए।
- प्रेषक प्रेषिती को माल बेचता नहीं है। अतः वह प्रेषिती से माल के मूल्य का भुगतान करने की मांग तब तक नहीं कर सकता जब तक कि उसका विक्रय नहीं हो जाता तथा वास्तव में माल के विक्रय की रकम प्राप्त नहीं हो जाती।
- प्रेषक द्वारा माल भेजने पर किए गए व्यय की रकम भी प्रेषिती से वसूल नहीं की जा सकती।
- प्रेषिती कमीशन की एक निश्चित दर पर माल बेचने के लिए सहमत होता है तथा वह अपना कमीशन माल के विक्रय से प्राप्त रकम में से काट सकता है।

- एजेंट की जिम्मेदारी उस समय शुरू होती है जब वह माल का विक्रय कर देता है तथा रकम वसूल कर लेता है। वह प्रधान की ओर से प्राप्त की गई रकम के लिए ऋणी हो जाता है। प्रेषक तथा प्रेषिती के संबंध प्रधान तथा एजेंट के संबंधों जैसे ही होते हैं।
- चूंकि प्रेषण कोई विक्रय नहीं होता तथा प्रेषिती जो कुछ भी करता है प्रेषक की ओर से करता है, इसलिए माल प्राप्त करने तथा उसे बेचने में प्रेषिती द्वारा किए गए समस्त व्ययों की पूर्ति प्रेषक द्वारा की जानी चाहिए।
- प्रेषिती के पास यदि कुछ अनबिका माल बच जाता है तो वह प्रेषक का होता है।
- चूंकि प्रेषिती प्रेषक की ओर से कार्य करता है इसलिए प्रेषण पर भेजे गए माल के विक्रय पर हुआ लाभ तथा हानि भी प्रेषक की होती है।

15.2.4 विक्रय एवं प्रेषण में अंतर (Distinction between Sale and Consignment)

यद्यपि विक्रय तथा प्रेषण दोनों में ही माल का कब्जा एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को हस्तांतरित किया जाता है, लेकिन वे एक दूसरे से कई बातों से भिन्न होते है। विक्रय तथा प्रेषण पर भेजे गए माल के अंतर को नीचे स्पष्ट किया गया है।

क्रम संख्या तथा मद	विक्रय	प्रेषण
1. पक्ष	विक्रेता एवं क्रेता	प्रेषक एवं प्रेषिती
2. माल पर स्वामित्व तथा अधिकार	माल का स्वामित्व तथा अधिकार माल के क्रेता को हस्तांतरित कर दिया जाता है।	माल पर वैधानिक स्वामित्व एवं अधिकार परेशिती को हस्तांतरित नहीं किया जाता। जब तक माल बेचा नहीं जाता तब तक वह प्रेषक के पास ही रहता है।
3. संबंध	माल के विक्रेता तथा क्रेता के बीच का संबंध लेनदार तथा देनदार के बीच के संबंध जैसा होता है।	प्रेषक तथा प्रेषिती के बीच का संबंध प्रधान तथा एजेंट के बीच के संबंध जैसा होता है। प्रेषिती को प्रेषक की ओर से विक्रय करना होता है।
4. व्यय	माल के विक्रय के बाद किए गए व्यय क्रेता द्वारा वहन किए जाते हैं।	प्रेषित माल के संबंध में प्रेषिती द्वारा किए गए व्यय प्रेषक द्वारा वहन किए जाते हैं।
5. जोखिम	जैसे ही माल का विक्रय हो जाता है, माल से संबंधित जोखिम माल के क्रेता को हस्तांतरित कर दी जाती है। यदि विक्रय के बाद माल नष्ट	जब तक प्रेषित माल का विक्रय नहीं होता तब तक उनसे संबंधित जोखिम प्रेषक को ही उठानी पड़ती है। यदि माल नष्ट हो जाता है तो

	हो जाता है तो यह हानि क्रेता को उठानी पड़ती है।	यह हानि प्रेषक को उठानी पड़ती है।
6. वापसी	माल की वापसी संभव नहीं होती क्योंकि एक बार बेचे गए माल को वापस नहीं लिया जाता।	यदि कुछ माल प्रेषिती द्वारा बेचा नहीं गया है तो उसकी वापसी हो सकती है।
7. विक्रय-विवरण	क्रेता को विक्रेता के सम्मुख कोई विक्रय-विवरण प्रस्तुत नहीं करना पड़ता।	प्रेषिती को समय-समय पर प्रेषक के सम्मुख विक्रय-विवरण प्रस्तुत करना पड़ता है।
8. अनबिका माल	विक्रेता द्वारा एक बार बेचा गया माल यदि पुनः नहीं बिक पाता तो विक्रेता को कुछ नहीं करना पड़ता।	प्रेषिती के पास अनबिके माल को प्रेषक स्टॉक की तरह माना जाता है।

ऊपर दिए गए विक्रय प्रेषण के बीच के अंतर से क्रेता तथा प्रेषिती के अधिकारों एवं कर्तव्यों का अंतर भी भली-भांति स्पष्ट हो जाता है।

बोध प्रश्न क

1. निम्नलिखित को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा सही उत्तर पर टिक (3) का निशान लगाइए।

   i) प्रेषक तथा प्रेषिती का संबंध होता है –

      अ) क्रेता तथा विक्रेता जैसा

      ब) प्रधान तथा एजेंट जैसा

      स) देनदार तथा लेनदार जैसा

   ii) प्रेषिती के पारिश्रमिक के लिए जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह है–

      अ) कमीशन

      ब) दलाली

      स) कटौती

   iii) प्रेषण पर भेजे गए माल की जोखिम के लिए उत्तरदायी पक्ष है –

      अ) प्रेषिती

      ब) प्रेषक

      स) दोनों

   iv) जब तक माल का विक्रय नहीं हो जाता तब तक माल का वैधानिक स्वामित्व हस्तांतरित नहीं किया जा सकता –

      अ) विक्रय की स्थिति में

      ब) प्रेषण की स्थिति में

      स) दोनों ही स्थितियों में

2. बताइये कि निम्नलिखित कथन **सही** हैं अथवा **गलत**।

i) प्रेषण पर माल भेजना प्रेषक द्वारा माल के विक्रय के समान होता है।

ii) प्रेषण के संबंध में प्रेषिती द्वारा किए गए सभी वैध व्यय प्रेषक द्वारा वहन किए जाते हैं।

iii) प्रेषक के लिए प्रेषण निर्गत प्रेषण होता है तथा प्रेषिती के लिए वह आगत प्रेषण होता है।

iv) प्रेषक के अंतर्गत जब माल भेजा जाता है तो इसे विक्रय माना जाता है।

v) माल की प्राप्ति पर प्रेषिती प्रेषक का देनदार नहीं हो सकता।

15.2.5 प्रेषण से संबंधित महत्वपूर्ण शब्द (Important Terms in Consignment)

प्रेषण से संबंधित कुछ ऐसे शब्द हैं जिनका प्रयोग, प्रेषण में सामान्यतः होता रहता है। ये शब्द हैं कच्चा बीजक, विक्रय-विवरण, आवर्ती तथा अनावर्ती व्यय, कमीशन, अग्रिम आदि। इन शब्दों को निम्नलिखित प्रकार से स्पष्ट किया गया है :

कच्चा बीजक (Proforma Invoice) : चूंकि प्रेषण पर भेजे गए माल को विक्रय नहीं माना जा सकता, इसलिए प्रेषक वास्तविक बीजक नहीं बनाता। वह केवल कच्चा बीजक बनाता है और इसे माल के साथ प्रेषिती के पास भेज देता है। कच्चा बीजक प्रेषिती को माल के मूल्य, माल पर किए गए व्यय, उपयोग में लाए गए परिवहन के साधन तथा माल के न्यूनतम विक्रम मूल्य आदि के संबंध में सूचना देने के उद्देश्य से बनाया जाता है। कच्चे बीजक का प्रारूप चित्र 15.1 में दिया गया है।

Figure 15.1
Specimen of Proforma Invoice

BABAR TRADERS

Proforma Invoice — 222, Mount Road, Chennai

For Goods Sent on consignment basis to: — Oct. 10, 2018

M/s Hari Kishan Enterprises, Hauz Khas, New Delhi.

Serial No.	Particulars		Amount
		Rs.	Rs.
	Rs. 500 Bush Radio sets at Rs. 600 each		3,00,000
	Charges		
	Packing and Cartage	4,000	
	Freight	3,000	
	Insurance	6,000	13,000
	Total		3,13,000
	Goods despatched vide R. R. No. Smt. G.834866, Dated 10/10/18 Freight to pay.		

E. & 0. E.

For Babbar Traders
(D. BABBAR)
Partner

नोटः E. &.O.E. का अर्थ है भूल-चूक लेनी देनी (भू.चू.ले.दें.), जिसका आशय है कि यदि बीजक में कोई गलती हो गई हो अथवा बीजक में कोई बात नहीं लिखी गई तो बीजक में उनका सुधार होने पर ही बीजक सही माना जाएगा।

उपर्युक्त बीजक में बब्बर ट्रेडर्स तो प्रेषक है तथा हरि किशन एंटरप्राइजेज प्रेषिती है। 3,00,000 रु. मूल्य का माल प्रेषित किया गया है जिस पर 13,000 रुपयों की रकम विभिन्न व्ययों के रूप में खर्च की गई है।

विक्रय-विवरण (Account Sales) : चूंकि प्रेषिती एक एजेंट के समान होता है तथा प्रेषक की ओर से माल बेचता है, इसलिए उसे विक्रय से प्राप्त रकम, व्यय, कमीशन आदि से संबंधित जानकारी प्रेषक को देनी होती है। वह इस प्रकार की जानकारी एक विवरण के माध्यम से देता है जिसे विक्रय-विवरण कहा जाता है। विक्रय विवरण में बेचे गए माल की मात्रा तथा माल से संबंधित अन्य विवरण में विक्रय से प्राप्त रकम, प्रेषिती द्वारा किया गया व्यय, उसे प्राप्य कमीशन तथा प्रेषिती द्वारा प्रेषक को देय शेष रकम का उल्लेख किया जाता है। विक्रय विवरण बनाते समय प्रेषिती प्रेषण पर किए गए व्यय तथा उसका देय कमीशन घटा देता है। यदि कुछ रकम अग्रिम दी हुई होती है तो उसे भी इस शेष में से घटा दिया जाता है। प्रेषिती प्रेषक को देय रकम के लिए एक बैंक ड्राफ्ट अथवा एक विनिमय-पत्र भेजता है जिस पर उसकी स्वीकृति होती है। उदाहरण 1 में यह भली-भांति स्पष्ट हो जाएगा कि विक्रय-विवरण किस प्रकार बनाया जाता है।

उदाहरण 1

1 जनवरी, 2018 को बम्बई के बब्बर ट्रेडर्स ने मद्रास के हरि किशन इन्टरप्राइजेज को 500 बुश रेडियो सेट प्रेषण पर भेजा। प्रत्येक रेडियो सेट की लागत 750 रु. थी। प्रेषण को प्राप्त करने के बाद हरि किशन इन्टरप्राइजेज ने अग्रिम राशि के रूप में बब्बर ट्रेडर्स को 25,000 रु. का एक बैंक ड्राफ्ट भेजा। हरि किशन इन्टरप्राइजेज 1,500 रु. मालभाड़ा, 2,000 रु. चुंगी, 2,500 रु. गोदाम किराया और अन्य विक्रय के रूप में भुगतान किया। 1 मार्च, 2018 को हरि किशन इन्टरप्राइजेज ने एक विक्रय विवरण भेजा जिसमें दिखाया गया थ सभी रेडियो सेट 850 रु. प्रति सेट की दर से बिक गये। उन्हें इस विक्रय पर 10% कमीशन मिलना था। विक्रय विवरण तैयार कीजिए।

हलः

ACCOUNT SALES
of 500 Bush Radio Sets Received from Babbar Traders, Mumbai

S.No.	Particulars		Amount
	Sale Proceeds: 500 Bush Radio Sets sold at Rs. 850 each		4,25,000
	Less:		
	Freight	1,500	
	Octroi	2,000	
	Godown rent & selling expenses	2,500	6,000
			4,19,000
	Less: Commission Rs. 4,25,000 × 10%		42,500
			3,76,500
	Less: Advance (Bank Draft)		25,000

	Balance due to Babbar Traders remitted as per draft enclosed	3,51,500
E. & 0. B. Dated 01/03/18		For Hari Kishan Enterprises HARIKISHAN Managing Partner

कमीशन (Commission): यह प्रेषित माल को बेचने में प्रेषिती द्वारा प्रदान की गई सेवाओं के बदले में प्रेषक द्वारा प्रेषिती को दिया जाने वाला पारिश्रमिक होता है। यह कमीशन दो प्रकार का हो सकता है :–

अ) साधारण कमीशन तथा ब) विशेष कमीशन

अ) साधारण कमीशन : इस प्रकार का कमीशन साधारणतया विक्रय से प्राप्त कुल रकम पर एक निश्चित प्रतिशत की दर से दिया जाता है। यदि इस संबंध में विशेष रूप से कुछ निर्धारित न किया गया हो तो कमीशन शब्द का आशय साधारण कमीशन से ही होता है। प्रेषिती अशोध्य ऋणों (bad debts) के लिए उत्तरदायी नहीं होता तथा यदि उसे केवल साधारण कमीशन नही दिया जाता है तो वह इस बात की भी गारंटी नहीं देता कि उधार माल खरीदने वाले सभी लोगों से भुगतान प्राप्त हो जाएगा।

ब) विशेष कमीशन : यह एक कमीशन होता है जो प्रेषिती को साधारण कमीशन के अतिरिक्ति दिया जाता है। इसे दो वर्गों में बांटा जा सकता है – (i) अतिरिक्त कमीशन (ii) आश्वासी कमीशन।

i) अतिरिक्त कमीशन (over-riding commission) : यह वह कमीशन होता है जो साधारण कमीशन के अतिरिक्त दिया जाता है तथा इस प्रकार का कमीशन तभी दिया जाता है जबकि एजेंट को बाजार में कोई नया उत्पाद प्रस्तुत करने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ा हो अथवा उसे किसी विशेष क्षेत्र में अन्य एजेंटों के कार्य संपादन के निरीक्षण का कार्य सौंपा गया हो। इस प्रकार का कमीशन प्रेषक द्वारा निर्धारित मूल्य से अधिक मूल्य पर माल के विक्रय के लिए भी दिया जाता है।

ii) आश्वासी कमीशन (delcredere commission) : साधारणतया सभी प्रकार की हानियां प्रेषक को ही वहन करनी पड़ती हैं। लेकिन कई बार प्रेषक आशा करता है कि अशोध्य ऋणों से हुई हानि के लिए तथा ऋणों की वसूली के लिए प्रेषिती को भी उत्तरदायी होना चाहिए। इस उत्तरदायित्व के बदले में उसे कुछ अतिरिक्त कमीशन दिया जाता है जिसे आश्वासी कमीशन कहा जाता है। **साधारणतया आश्वासी कमीशन की गणना कुल विक्रय की रकम पर ही की जाती है,** यदि इस संबंध में कोई विशेष समझौता न हुआ हो कि कमीशन केवल उधार विक्रय की रकम पर ही दिया जाएगा। इस प्रकार के कमीशन के भुगतान से प्रेषिती पर एक अतिरिक्त दायित्व आ जाता है तथा यह उसे विवेकपूर्ण ढंग से तथा सावधानी पूर्वक कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।

उदाहरण 2 में कमीशन की गणना के संबंध में विस्तृत जानकारी दी गई है। इससे आपको साधारण कमीशन तथा विशेष कमीशन ज्ञात करने में निश्चित रूप से सहायता मिलेगी।

उदाहरण 2

राजधानी साइकिल्स लि. ने प्रेषण आधार पर विक्रय के लिए कलकत्ता के बैनर्जी एंड कं. को 2,000 डाइनेमो भेजे। इनमें से प्रत्येक डाइनेमों की लागत 50 रु. थी। प्रत्येक डाइनेमों

का सामान्य विक्रय मूल्य 60 रु. है। प्रेषिती को इस प्रकार कमीशन मिलने हैं : i) सामान्य विक्रय मूल्य पर 5%, ii) अतिरिक्त विक्रय पर 10% अतिरिक्त कमीशन और iii) उधार विक्रय की रकम की वसूली की गारंटी देने के लिए कुल विक्रय की रकम पर 1½ आश्वासी कमीशन। बैनर्जी एंड कं. द्वारा भेजे गए विवरण के अनुसार प्रति डाइनेमों 60 रु. की दर से 500 की तथा प्रति डाइनेमों 75 रु. की दर से 200 की नकद बिक्री तथा और प्रति डाइनेमों 75 रु. की दर से 400 की तथा प्रति डाइनेमों 80 रु. की दर से 400 की उधार बिक्री हुई। प्रेषिती के कमीशन की गणना कीजिए।

हल:

Total Sales:

500 units @ Rs 60 each	30,000
200 Units @ Rs 75 each	15,000
400 units @ Rs 75 each	30,000
400 Units @ Rs 80 each	32,000
	1,07,000

i) **Normal Commission**

5% on normal price of goods sold.
Number of Units sold are: 1,500 (500 + 200 + 400 + 400)
Normal selling price per unit Rs. 60

Normal Sale: 1500 × 60 = Rs. 90,000

Normal Commission: $\frac{5}{100} \times 90{,}000$ = Rs. 4,500

ii) **Additional Commission :** 10% on amount realized in excess of the normal price

	Rs.
Total Sales Value:	1,07,000
Normal Sales Value:	90,000
Excess Sales Value:	17,000

Additional Commission: $\frac{10}{100} \times 17{,}000$ = Rs. 1,700

iii) **Del Credre Commission**

$1\frac{1}{2}\%$ on Total Sales

$\frac{3}{100} \times 1{,}07{,}000$ = Rs. 1,605

Total Commission (i) + (ii) + (iii) Rs.4,500+ Rs. 1,700 + Rs. 1,605 =Rs.7,805

व्यय (expenses) : माल के प्रेषण से संबंधित व्ययों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :

(i) अनावर्ती व्यय तथा (ii) आवर्ती व्यय।

i) **अनावर्ती व्यय (non-recurring expenses) :** ऐसे सभी व्यय जो माल को प्रेषिती के गोदाम तक पहुंचाने पर किए जाते हैं अनावर्ती प्रकृति के होते हैं इस प्रकार के व्यय साधारणतया संपूर्ण प्रेषण पर किए जाते हैं। अनावर्ती व्यय आंशिक रूप से प्रेषक द्वारा तथा आंशिक रूप से प्रेषिती द्वारा किए जाते हैं। प्रेषक साधारणतया प्रेषिती को माल भेजते समय कुछ व्यय करता है, जैसे – पैकिंग व्यय, वाहन व्यय (ढुलाई), लदाई व्यय, बीमा व्यय, रेलभाड़ा आदि। प्रेषिती प्रायः प्रेषक से माल प्राप्त करते समय कुछ व्यय करता है जैसे जहाज से माल उतारने का व्यय, सीमा शुल्क, माल छुड़ाने से संबंधित व्यय, चुंगी, आदि।

ii) **आवर्ती व्यय (recurring expenses) :** इस प्रकार के व्यय माल के प्रेषिती के स्थान पर अथवा गोदाम तक पहुच जाने के बाद किए जाते हैं। ये व्यय आवर्ती प्रकृति के होते हैं, क्योंकि इस प्रकार के व्यय प्रेषक तथा प्रेषिती द्वारा बार-बार किए जाते हैं। प्रेषक द्वारा किए जाने वाले आवर्ती व्ययों के उदाहरण हैं – विज्ञापन-व्यय, बिलों को भुनाने पर किया गया व्यय, चेक की वसूली पर दिया गया कमीशन, यात्रा व्यय, सेल्समैनों के व्यय, अशोध्य ऋण आदि। प्रेषिती द्वारा किए जाने वाले आवर्ती व्ययों के उदाहरण हैं – गोदाम का किराया, गोदाम का बीमा, विक्रय वृद्धि के लिए किए गए व्यय, आदि।

अग्रिम (advance) : प्रेषक द्वारा प्रेषिती से उसके पास भेजे गए माल की जमानत के रूप से कुछ अग्रिम रकम की मांग करना एक सामान्य व्यापारिक प्रथा है। यह रोकड़ के रूप से अथवा बैंक ड्राफ्ट के रूप में अथवा विनिमय पत्र के रूप में हो सकती है। प्रेषिती प्रेषक से माल प्राप्त करने से पहले अथवा उसके बाद कुछ अग्रिम रकम भेजता है। प्रेषिती से प्राप्त अग्रिम को प्रेषण खाते (consignment account) में क्रेडिट नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि यह विक्रय से प्राप्त रकम का एक भाग नहीं है। जब खातों का अंतिम रूप से निपटारा किया जाता है, उस समय इस अग्रिम राशि को प्रेषिती द्वारा देय रकम में से घटा दिया जाता है। कुछ अवस्थाओं में प्रेषिती पर एक बिल लिखा जा सकता है, यदि वह अग्रिम रकम देने की स्थिति में न हो। प्रेषक इस बिल को बैंक से भुना सकता है। ऐसी स्थिति में अग्रिम के रूप में स्वीकृत बिल की रकम को विक्रय से प्राप्त रकम में से घटा दिया जाएगा। **बैंक को दी गई कटौती को सीधे ही लाभ-हानि खाते में ले जाया जा सकता है चूंकि यह वित्त जुटाने की लागत को प्रदर्शित करती है।**

बोध प्रश्न ख

1. विक्रय विवरण (Account Sales) तथा विक्रय खाते (Sales Account) में अंतर बताइए?

   .....

   .....

   .....

2. किन परिस्थितियों में प्रेषिती विशेष कमीशन प्राप्त कर सकता है?

   .....

   .....

   .....

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

i) E. & O. E. (भू. चू. ले. दे.) की मूल शब्दावली है .....।

ii) अशोध्य ऋणों का उत्तरदायित्व लेने पर प्रेषक प्रेषिती को ..... कमीशन देता है।

iii) ..... व्यय ऐसे व्यय होते हैं, जो माल के प्रेषिती के गोदाम तक पहुंचने के बाद किए जाते हैं।

iv) प्रेषिती भेजे गए माल की ..... के रूप में प्रेषक को अग्रिम देता है।

v) प्रेषिती द्वारा माल को वाहन से उतरवाने के खर्चों को ..... व्यय कहा जाता है।

15.3 लेखांकन प्रविष्टियां (Accounting Treatment)

प्रत्येक प्रेषण से संबंधित लेन-देनों का लेखा इस प्रकार किया जाता है कि प्रत्येक प्रेषण का लाभ अथवा हानि अलग-अलग ज्ञात किया जा सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रेषक प्रत्येक प्रेषण के लिए एक प्रेषण खाता (consignment account) बनाता है प्रेषित माल की लागत सहित समस्त व्ययों को डेबिट किया जाता है तथा विक्रय से प्राप्त रकम को और अंतिम स्टॉक को क्रेडिट किया जाता है। इसके अतिरिक्त वह प्रेषिती से होने वाली बकाया रकम ज्ञात करने के लिए एक प्रेषिती का खाता (consignee's account) भी खोलता है। दूसरी ओर प्रेषिती अपनी पुस्तकों में केवल प्रेषक का खाता (Consignor's account) खोलता है जिसमें वह प्रेषक को भेजी गई रकम को, प्रेषण पर किए गए अपने व्ययों को, तथा उसे प्रेषण पर प्राप्य कमीशन को डेबिट करता है। प्रेषक के खाते को मुख्य रूप से विक्रय से प्राप्त रकम से क्रेडित किया जाता है। आइए अब हम अध्ययन करें कि प्रेषण से संबंधित लेन-देनों का लेखा प्रेषक तथा प्रेषिती की पुस्तकों में किस प्रकार किया जाता है।

15.3.1 प्रेषक की पुस्तकें (Books of the Consignor)

आप जानते हैं कि प्रत्येक लेन-देन का लेखा पहले सहायक बही में किया जाता है तथा उसके बाद ही लेजर से संबंधित खातों में उसकी खतौनी की जाती है। अतः प्रेषण से संबंधित सभी लेन-देनों का लेखा पहले जर्नल में किया जाता है। विभिन्न लेन-देनों के संबंध में की जाने वाली प्रविष्टियां इस प्रकार हैं :

1. **प्रेषिती को माल भेजने पर :** आप जानते हैं कि प्रेषण पर भेजे गए माल को माल का विक्रय नहीं माना जा सकता। इसलिए विक्रय खाते को क्रेडिट नहीं किया जाएगा। इसके स्थान पर प्रेषित माल की लागत से प्रेषण पर भेजे गए माल के खाते (goods sent on consignment account) को क्रेडिट किया जाएगा तथा प्रेषण खाते को डेबिट किया जाएगा। अतः जर्नल प्रविष्टि इस प्रकार होगी :

Consignment A/c Dr.
To Goods Sent on Consignment A/c
(Being the value of the consignment)

यदि प्रेषण पर माल एक से अधिक प्रेषितियों को भेजा जाता है तो प्रेषण खातों में भिन्नता लाने के लिए प्रेषण खाते के साथ स्थानों के नाम जोड़ दिए जाते हैं जैसे – कलकत्ता का प्रेषण खाता, भोपाल का प्रेषण खाता, आदि।

2. **प्रेषक द्वारा किए गए व्यय** : प्रेषक द्वारा माल के प्रेषण पर किए गए समस्त व्ययों को प्रेषण खाते में डेबिट किया जाता है तथा इस प्रकार ऐसे व्यय प्रेषित माल की लागत में जुड़ जाते हैं। इसके लिए प्रविष्टि इस प्रकार होगी :

Consignment A/c Dr.
To Cash/Bank A/c
(Being the expenses incurred on the consignment)

3. **प्रेषिती द्वारा दी गई अग्रिम रकम के लिए** : प्रेषिती से प्राप्त अग्रिम को विक्रय से प्राप्त रकम नहीं माना जा सकता और इसी कारण इसे प्रेषण खाते में क्रेडिट नहीं किया जाना चाहिए। इसकी प्रविष्टि इस प्रकार होगी :

Cash/Bank/Bills Receivable A/c Dr.
To Consignee's A/c
(Being an advance from the consignee)

4. **प्रेषिती से प्राप्त बिल को बैंक से भुनाने पर** : यदि प्रेषक प्राप्य बिल को अपने बैंक से भुना लेता है तो इसके लिए प्रविष्टि इस प्रकार होगी :

Bank A/c Dr.
Discount A/c Dr.
To Bills Receivable A/c
(Being bill discounted with the bank)

5. **प्रेषिती से विक्रय विवरण प्राप्त करने पर** : जब माल का विक्रय हो जाता है तो प्रेषिती प्रेषक को कुल विक्रय तथा उसके व्ययों और कमीशन की रकम के संबंध में सूचना देने के लिए एक विक्रय विवरण भेजता है। इस संबंध में निम्नलिखित तीन प्रविष्टियां की जाएंगी :

अ) प्रेषिती द्वारा किए विक्रय के लिए

Consignee's A/c Dr.
To Consignment A/c
(Being gross proceeds of sales)

ब) प्रेषिती के व्ययों के लिए

Consignment A/c Dr.
To Consignee's A/c
(Being expenses incurred by the consignee in dealing with consignment)

स) प्रेषिती के कमीशन के लिए

Consignment A/c Dr.
To Consignee's A/c
(Being commission payable on sale proceeds)

6. **प्रेषिती द्वारा वापस किए गए माल के लिए** : कई बार प्रेषिती द्वारा दोषयुक्त या पुराना माल प्रेषक को वापस भेज दिया जाता है। जब ऐसे माल की प्राप्ति होती है, तो इसके लिए जर्नल प्रविष्टि इस प्रकार होगी :

Goods Sent on Consignment A/c Dr.
To Consignment A/c
(Being goods returned by the consignee)

7. **अशोध्य ऋणों के लिए** : जब प्रेषिती को आश्वासी कमीशन दिया जाता है तो अशोध्य ऋणों के लिए कोई प्रविष्टि नहीं की जाती क्योंकि इस प्रकार की हानि खुद प्रेषिती को ही उठानी पड़ेगी। लेकिन जब आश्वासी कमीशन नहीं दिया जाता तो अशोध्य ऋणों से हुई हानि प्रेषक को उठानी पड़ेगी तथा इसके लिए प्रविष्टि इस प्रकार होगी :

Consignment A/c Dr.
To Consignee's A/c
(Being value of bad debts)

8. **प्रेषिती द्वारा पूर्ण भुगतान के रूप में भेजी गई रकम के लिए** : खाते के चुकता भुगतान के लिए प्रेषिती द्वारा प्रेषक को शेष रकम भेजनी पड़ेगी। यदि प्रेषिती द्वारा प्रेषक को बकाया रकम का भुगतान कर दिया जाता है तो प्रविष्टि इस प्रकार होगी :

Cash/Bank/Bills Receivable A/c Dr.
To Consignee's A/c
(Being balance due from the consignee received).

9. **प्रेषण पर हुए लाभ अथवा हानि के लिए** : जब आप प्रेषण खाते का शेष निकालेंगे तो यह लाभ अथवा हानि को प्रदर्शित करेगा। यदि क्रेडिट पक्ष का योग डेबिट पक्ष के योग से अधिक है तो यह लाभ को प्रदर्शित करता है तथा यदि डेबिट पक्ष का योग क्रेडिट पक्ष के योग से अधिक है तो यह हानि को प्रदर्शित करता है। लाभ अथवा हानि को लाभ-हानि खाते में अंतरित कर दिया जाता है तथा इस प्रकार प्रेषण खाता बंद हो जाता है।

निम्नलिखित प्रविष्टियां की जाएंगी :

अ) लाभ होने की अवस्था में :

Consignment A/c Dr.
To Profit & Loss A/c
(Being profit on consignment)

ब) हानि होने की अवस्था में :

Profit & Loss A/c Dr.
To Consignment A/c
(Being loss on consignment)

10. **प्रेषण पर भेजे गए माल के खाते के लिए अंतिम प्रविष्टि** : प्रेषण पर भेजे गए माल के खाते को व्यापार खाते में स्थानांतरित करके बंद किया जाता है। इसके लिए निम्नलिखित प्रविष्टि की जाएगी।

Goods Sent on Consignment A/c Dr.
To Trading A/c
(Being goods sent on consignment account closed)

11. प्रेषिती के पास अनबिके माल के लिए : यह भी संभव है कि अंतिम लेखे तैयार करने की तिथि तक प्रेषण पर भेजे गए समस्त माल का विक्रय न हुआ हो। कुछ माल अनबिका भी रह सकता है जिसे प्रेषण स्टॉक कहा जाता है। इसका सही मूल्यांकन किया जाना चाहिए तथा इसे प्रेषण खाते में क्रेडिट किया जाना चाहिए। प्रेषण स्टॉक के लिए प्रविष्टि इस प्रकार होगी :

Consignment Stock A/c Dr.

To Consignment A/c

(Being unsold goods with the consignee)

आपने पढ़ा है कि प्रेषक के जर्नल में प्रेषण संबंधी लेन-देनों का लेखा किस प्रकार किया जाता है। आइए जब हम यह देखें कि विभिन्न प्रभावित खातों को लेजर में किस प्रकार दिखाया जाता है तथा प्रेषण पर लाभ अथवा हानि किस प्रकार ज्ञात की जाती है। प्रेषक साधारणतया निम्नलिखित तीन खाते बनाता है।

i) **प्रेषण खाता (Consignment Account) :** यह खाता प्रेषक द्वारा बनाया जाता है जिसमें किसी विशेष प्रेषण से संबंधित समस्त लेन-देनों को दर्शाया जाता है। इस खाते को बनाने का उद्देश्य प्रत्येक प्रेषण से हुए लाभ अथवा हानि को ज्ञात करना है। जैसे ही प्रेषक द्वारा प्रेषिती को माल भेजा जाता है, प्रेषक तथा प्रेषिती द्वारा उस प्रेषण पर किए गए समस्त व्ययों सहित उस माल की लागत को प्रेषण खाते में डेबिट कर दिया जाता है। प्रेषिती को देय कमीशन को भी प्रेषण खाते में डेबिट किया जाता है। जब आश्वासी कमीशन नहीं दिया जाता तब यदि कुछ अशोध्य ऋण हों तो उन्हें भी इस खाते में डेबिट किया जाता है। जब माल प्रेषिती के पास पहुंचता है तो इसमें से कुछ माल अनबिका रह जाएगा तथा शेष माल का नकद अथवा उधार विक्रय हो जाएगा। चाहे माल नकद बिका हो अथवा उधार, संपूर्ण विक्रय राशि को प्रेषण खाते के क्रेडिट पक्ष में दिखाया जाएगा। अनबिके माल को प्रेषण स्टॉक माना जाता है तथा इसे प्रेषण खाते में क्रेडिट किया जाता है। यदि कुछ माल विक्रय के योग्य नहीं लगता तो प्रेषिती उसे प्रेषक के पास वापस भेज सकता है और इसे प्रेषण खाते के क्रेडिट पक्ष की ओर दिखाया जाएगा। इन सब मदों का लेखा करने के पश्चात् प्रेषण खाते का शेष निकाला जाता है। प्रेषण खाते के डेबिट पक्ष के योग तथा क्रेडिट पक्ष के योग का अंतर लाभ अथवा हानि को प्रदर्शित करता है जिसे लाभ-हानि खाते में अंतरित कर दिया जाता है। इस प्रकार प्रेषण खाता बंद हो जाता है। वास्तव में यह एक आय-व्यय खाता है तथा व्यापार एवं लाभ-हानि खाते के समान होता है जिसके बारे में आप अंतिम लेखों के अंतर्गत पहले ही पढ़ चुके हैं। इसलिए व्यापार एवं लाभ-हानि खाते पर लागू होने वाले सभी सिद्धांत प्रेषण खाते पर भी लागू होते हैं। व्यापार एवं लाभ-हानि खाते की तरह इस खाते में भी समस्त व्ययों को तथा क्रय को डेबिट किया जाता है और समस्य विक्रय तथा अन्य आय को क्रेडिट किया जाता है। प्रेषण खाते का प्रारूप चित्र 15.2 में दिया गया है।

Figure 15.2
Consignment to Patna Account

Dr. **Cr.**

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
	To Goods Sent on Consignment A/c	xxx		By Consignee's A/c (Cash and Credit sales)	xxx
	To Cash A/c (Consignor's Expenses)	xxx		By Goods Sent on Consignment A/c (Goods returned by the Consignee)	xxx
	To Consignee's A/c (Consignee's Expenses)	xxx		By Consignment Stock A/c (Unsold Stock)	xxx
	To Consignee's A/c (Commission)	xxx		By Profit and Loss A/c (Loss transferred)	xxx
	To Consignee's A/c (Bad Debts if any)	xxx			
	To Profit and Loss A/c (Profit transferred)	xxx			
		xxx			xxx

ii) प्रेषण पर भेजे गए माल का खाता (Goods sent on Consignment Account) : यह वास्तविक खाता होता है। इस खाते में प्रेषक द्वारा प्रेषिती को भेजे गए माल का तथा प्रेषिती द्वारा प्रेषक को वापस लौटाए गए माल का उल्लेख होता है। प्रेषक द्वारा भेजे गए संपूर्ण माल को इस खाते में क्रेडिट किया जाएगा तथा प्रेषिती द्वारा लौटाए गए माल को इस खाते में डेबिट किया जाएगा। इस खाते का शेष प्रेषिती के पास विक्रय के लिए बचे हुए माल की लागत को प्रदर्शित करता है तथा इसे व्यापार खाते में अंतरित कर दिया जाता है। प्रेषण पर भेजे गए माल के खाते का प्रारूप चित्र 15.3 में दिया गया है।

Figure 15.3
Goods Sent to Consignment Account

Dr. **Cr.**

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
		Rs.			Rs.
	To Consignment A/c (Goods returted)	xxx		By Consignment A/c (Goods consigned)	xxx
	To Trading A/c (Balance transferred)	xxx			
		xxx			xxx

iii) प्रेषिती का खाता (Consignee's Account) : यह प्रेषिती का व्यक्तिगत खाता होता है। यह खाता प्रेषिती से प्राप्त होने वाली बकाया रकम को ज्ञात करने के लिए बनाया जाता है। प्रेषिती के खाते को प्रेषिती द्वारा किए गए समस्त नकद तथा उधार विक्रय से डेबिट किया जाता है। प्रेषिती द्वारा किए गए समस्त व्ययों को, इसे दिए जाने वाले कमीशन को तथा इसके द्वारा भेजी गई अग्रिम रकम को इस खाते

में क्रेडिट किया जाता है। यह खाता साधारणतया डेबिट शेष दर्शाता है जो प्रेषिती से प्राप्त होने वाली बकाया रकम को प्रदर्शित करता है। कभी-कभी जब प्रेषिती द्वारा अग्रिम दी गई रकम उसके द्वारा किए गए विक्रय से अधिक हो तो यह खाता क्रेडिट शेष भी प्रदर्शित कर सकता है। यदि आवश्यक रकम भेजकर इस खाते को चुकता करके बंद नहीं किया गया हो तो इस खाते द्वारा प्रदर्शित शेष को प्रेषक के बैलेन्स शीट में दिखाया जाता है। बैलेन्स शीट में डेबिट शेष को परिसंपत्ति पक्ष की ओर तथा क्रेडिट शेष को दायित्व पक्ष की ओर दिखाया जाता है। चित्र 15.4 में प्रेषिती के खाते का प्रारूप प्रदर्शित किया गया है।

Figure 15.4
Consignee's Account

Dr. **Cr.**

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
		Rs.			Rs.
	To Consignment A/c (Cash and Credit Sales)	xxx		By Cash/Bank/Bills Receivable A/c (Advance)	xxx
				By Consignment A/c (Consignee's Expenses)	xxx
				By Consignment A/c (Consignee's Commission)	xxx
				By Banks A/c or Balance c/d	xxx
		xxx			xxx

उदाहरण 3 का अध्ययन करें और देखें कि प्रेषण संबंधी लेन-देनों को प्रेषक की पुस्तकों में किस प्रकार रिकार्ड किया जाता है।

उदाहरण 3

दिल्ली के बुश रेडियों एंड कं. ने 6 जनवरी, 2018 को कलकत्ता के चढढा एंड कं. को 100 रेडियो सेट प्रेषण पर भेजे। इनमें से प्रत्येक सेट का बीजक मूल्य 100 रु. था। बुश रेडियों एंड कं. ने उसी दिन प्रेषिती को माल भेजने के लिए 1,000 रु. का भुगतान किया। प्रेषिती ने 14 जनवरी को बैंड ड्राफ्ट द्वारा 5,000 रु. अग्रिम राशि के रूप में भेजा। प्रेषिती को विक्रय से प्राप्त रकम पर 10% कमीशन मिलना है। माल प्राप्त कर लेने पर प्रेषिती ने मालभाड़ा के लिए 1,000 रु. और गोदाम के चार्ज के लिए 500 रु. का भुगतान किया।

28 जनवरी को चढढा एंड कं. ने एक विक्रय विवरण भेजा जिसमें दिखाया गया था कि प्रत्येक रेडियो सेट 200 रु. में बिका है। उसने बुश एंड कं. को देय सभी रकमें उसे भेज दी। प्रेषक की लेखा पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टि कीजिए तथा लेजर खाते तैयार कीजिए।

JOURNAL

Books of Bush Radio & Co., Delhi

Date	Particulars	L.F.	Dr. Amount	Cr. Amount
2018			Rs	Rs.
Jan. 6	Consignment to Calcutta A/c Dr. To Goods Sent on Consignment A/c (Being cost of consignment sent to Chadda & Co.)		10,000	10,000
" 6	Consignment to Calcutta A/c Dr. To Bank A/c (Being expenditure incurred on despatching of goods)		1,000	1,000
" 14	Bank A/c Dr. To Chadda & Co. (Being receipt of an advance payment from the consignee)		5,000	5,000
" 28	Consignment to Calcutta A/c Dr. To Chadda & Co. (Being expenses paid by the consignee)		1500	1500
" 28	Chadda & Co. Dr. To Consignment to Calcutta A/c (Being the gross proceeds of sales made by the consignee)		20,000	20,000
" 28	Consignment to Calcutta A/c Dr. To Chadda & Co. (Being commission payable on sale proceeds)		2,000	2,000
Jan. 31	Bank A/c Dr. To Chadda & Co. (Being balance payment received from the consignee)		11,500	11,500
" 31	Consignment to Calcutta A/c Dr. To Profit & Loss A/c (Being Profit on consignment transferred to Profit & Loss Account)		5,500	5,500
" 31	Goods Sent on Consignment A/c Dr. To Trading A/c (Being goods sent on consignment transferred to Trading Account)		10,000	10,000

LEDGER

Consignment to Calcutta Account

Dr. **Cr.**

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2018		Rs.			Rs.
Jan.6	To Goods sent on Consignment A/c	10,000	Jan	To Chadha & Co.	20,000
	To Bank A/c (Consignor's Expenses)	1,000			

To Chadha & Co. (Consignee's Expenses)	1,500		
To Chadha & Co. (Consignee's Commission)	2,000		
To Profit & Loss A/c (Profit transferred)	5,500		
	20,000		20,000

Goods Sent on Consignment Account

Dr. **Cr.**

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2018			**2018**		
Jan. 30	To Trading A/c	10,000	Jan. 6	By Consignment to Calcutta A/c	10,000

Chadha & Co. Account

Dr. **Cr.**

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2018		**Rs.**	**2018**		**Rs.**
Jan. 28	To Consignment to Calcutta A/c (Sale Proceeds)	20,000	Jan. 14	By Bank A/c (Advance)	5,000
			Jan. 28	By Consignment to Calcutta A/c (Expenses)	1,500
			Jan. 28	By Consignment to Calcutta A/c (Commission)	2,000
			Jan. 28	By Bank A/c (Balance received)	11,500
		20,000			20,000

15.3.2 प्रेषिती की पुस्तकें (Books of the Consignee)

प्रेषिती अपनी पुस्तकों में मुख्य रूप से प्रेषक का खाता (Consignor's Account) प्रेषक को देय रकम ज्ञात करने के लिए बनाता है। वह प्रेषण से संबंधित सभी लेन-देनों का लेखा पहले जर्नल में करता है तथा बाद में लेजर से संबद्ध खातों में (प्रेषक के खाते सहित) इनकी खतौनी करता है। प्रेषिती द्वारा जो जर्नल प्रविष्टियां की जाती हैं वे इस प्रकार हैं :

1. **प्रेषक से माल प्राप्त करने पर :** प्रेषक से माल प्राप्त करने पर प्रेषिती कोई प्रविष्टि नहीं करता क्योंकि प्रेषिती द्वारा प्रेषण से प्राप्त माल, माल के क्रय के समान नहीं होता। वह उस माल को प्रेषक की ओर से अपने गोदाम में रखता है जिसके लिए

वह साधारणतया एक आगत प्रेषक पुस्तक (Inward Consignment Book) तैयार करता है।

2. **प्रेषक द्वारा किए गए व्ययों के लिए** : प्रेषिती द्वारा कोई प्रविष्टि नहीं की जाती।

3. **प्रेषिती द्वारा दी गई अग्रिम रकम के लिए** :

Consignor's A/c Dr.

To Bank/Bills Payable A/c

(Being advance made by the consignee)

4. **प्रेषक द्वारा बैंक से बिल भुनाने पर** : प्रेषिती द्वारा कोई प्रविष्टि नहीं की जाती।

5. **प्रेषिती द्वारा माल का विक्रय करने पर** :

Cash A/c (cash sales) Dr.

Consignment Debtors A/c (Credit sales) Dr.

To Consignor's A/c

(Being goods sold)

6. **प्रेषिती द्वारा दिए गए व्ययों के लिए** : प्रेषक का एजेंट होने के नाते प्रेषिती द्वारा प्रेषण पर किए गए समस्त व्ययों की पूर्ति प्रेषक द्वारा की जाती है। इसके लिए प्रविष्टि इस प्रकार होगी –

Consignor's A/c Dr.

To Cash/Bank A/c

(Being expenses incurred on consignment)

7. **प्रेषिती को देय कमीशन** : इसमें प्रेषिती को देय सभी प्रकार के कमीशन शामिल किए जाने चाहिए। इसके लिए प्रविष्टि इस प्रकार होगी :

Consignor's A/c Dr.

To Commission A/c

(Being commission due on sales)

8. **प्रेषक को माल की वापसी** : चूंकि माल की प्राप्ति के समय कोई प्रविष्टि नहीं की गई थी अतः माल की वापसी पर भी प्रेषिती की पुस्तकों में कोई प्रविष्टि नहीं की जाएगी।

9. **देनदारों से प्राप्त भुगतान** :

Cash/Bank A/c Dr.

To Consignment Debtors A/c

(Being amount collected from debtors)

10. **अशोध्य ऋणों के लिए** :

अ) यदि प्रेषिती को आश्वासी कमीशन नहीं दिया जाता तो सभी प्रकार के अशोध्य ऋणों के लिए प्रेषक स्वयं ही उत्तरदायी होगा। इसके लिए प्रविष्टि इस प्रकार होगी :

Consignor's A/c Dr.

To Consignment Debtors A/c

(Being bad debts on consignment)

ब) यदि प्रेषिती को आश्वासी कमीशन दिया जाता है तो अशोध्य ऋणों के लिए प्रेषिती स्वयं उत्तरदायी होगा। इसके लिए प्रविष्टि निम्न प्रकार से होगी :

Bad Debts A/c Dr.

To Consignment Debtors A/c

(Being bad debts incurred on consignment)

11. जब प्रेषक के पक्ष में लिखे गए देय बिलों का भुगतान देय तिथि को कर दिया जाता है :

Bills Payable A/c Dr.

To Bank A/c

(Being bills payable honoured)

12. अंतिम भुगतान के लिए भेजी गई रकम के लिए :

Consignor's A/c Dr.

To Cash/Bank Account

To Bills Receivable Account

(Being payment of the balance due to the consignor)

13. प्रेषिती के अधिकार में अनबिके माल के लिए : चूंकि प्रेषक से माल प्राप्त करते समय कोई प्रविष्टि नहीं की गई थी अतः अनबिके माल के लिए प्रेषिती की पुस्तकों में कोई प्रविष्टि नहीं की जाएगी।

14. प्रेषण पर हुए लाभ अथवा हानि के लिए : चूंकि प्रेषण पर हुए लाभ अथवा हानि से प्रेषिती का कोई संबंध नहीं होता, इसलिए उसकी पुस्तकों में प्रेषण पर हुए लाभ अथवा हानि के लिए कोई प्रविष्टि नहीं की जाती।

जर्नल में सभी प्रविष्टियों का लेखा करने के पश्चात् प्रेषिती भी लेजर में खाते तैयार करता है। प्रेषिती की पुस्तकों में उसके द्वारा बनाए जाने वाले खातों में 'प्रेषक का खाता' तथा 'कमीशन खाता' दो महत्वपूर्ण खाते हैं। यद्यपि वह अन्य खातों जैसे प्रेषण देनदार खाता, प्रेषण व्यय खाता तथा देय बिल खाता आदि में खतौनी भी करेगा। लेकिन ये खाते उतने महत्वपूर्ण नहीं हैं। अतः यहां इनका वर्णन नहीं किया गया है।

i) **प्रेषक का व्यक्तिगत खाता (Consignors Account) :** यह प्रेषिती के लेजर का प्रमुख खाता है जो प्रेषक को देय रकम ज्ञात करने के लिए बनाया जाता है। माल के विक्रय से उसे जितनी भी रकम प्राप्त होती है उसे इस खाते में क्रेडिट किया जाता है। प्रेषण के संबंध में प्रेषिती द्वारा किए गए समस्त व्ययों को, उसे प्राप्त होने वाले कमीशन को तथा उसके द्वारा प्रेषक को भेजी गई अग्रिम रकम को इस खाते में डेबिट किया जाता है। यदि प्रेषिती को आश्वासी कमीशन नहीं दिया जाता तो

उधार विक्रय पर हुए अशोध्य ऋणों को भी प्रेषक के खाते में डेबिट किया जाता है। इस खाते का शेष प्रेषक को दी जाने वाली बकाया रकम को प्रदर्शित करता है। यह खाता प्रेषक की पुस्तकों में बनाए गए प्रेषिती के खाते का बिल्कुल उल्टा होता है। प्रेषक के खाते का प्रारूप चित्र 15.5 में दिया गया है।

Figure 15.5
Consignor's Personal Account

Dr. **Cr.**

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
		Rs.			Rs.
	To Bank/Cash A/c			By Bank A/c	
	(Consignee's Expenses)	xxx		(Cash Sales)	xxx
	To Bank/Bills Payable A/c			By Consignment A/c	
	(Advance)	xxx		(Credit Sales)	xxx
	To Commission A/c			By Bank A/c	
	(Consignee's Commission)	xxx		(Balance remitted)	xxx
		xxx			xxx

ii) **कमीशन खाता (Commission Account) :** यह एक आय-व्यय खाता है। यह खाता प्रेषिती द्वारा प्रदान की गई सेवाओं के लिए उसके द्वारा अर्जित आय को प्रदर्शित करता है। प्रेषिती को देय सभी प्रकार का कमीशन चाहे वह साधारण हो अथवा विशेष, इस खाते में क्रेडिट किया जाता है। यदि प्रेषिती को आश्वासी कमीशन दिया जाता है तथा इस कारण यदि वह अशोध्य ऋणों के लिए उत्तरदायी होता है तो कमीशन खाते को इस प्रकार के अशोध्य ऋणों की रकम से डेबिट किया जाएगा। कमीशन खाते का प्रारूप चित्र 15.6 में दिया गया है।

Figure 15.6
Commission Account

Dr. **Cr.**

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
		Rs.			Rs.
	To Bad debts A/c	xxx		By Consignor's A/c	xxx
	To Profit & Loss A/c			(Consignee's Commission)	
	(balance)	xxx			
		xxx			xxx

आइए उदाहरण 3 में दिये गए विवरण को लेकर देखें कि प्रेषिती की पुस्तकों में प्रेषण से संबंधित लेन-देनों का लेखा किस प्रकार किया जाता है।

JOURNAL

Books of Chadha & Co.

Date	Particulars	L.F.	Dr. Amount	Cr. Amount
2018			**Rs**	**Rs.**
Jan. 14	Bush & Co. Dr.		5,000	
	To Bank A/c			5,000
	(Being advance paid by the consignee)			
" 15	Bush & Co. Dr.		1,500	
	To Cash/Bank A/c			1,500
	(Being expenses incurred on consignment)			
" 28	Bank A/c Dr.		20,000	
	To Bush & Co.			20,000
	(Being cash sales on consignment)			
" 28	Bush & Co. Dr.		2,000	
	To Commission A/c			2,000
	(Being commission due on goods sold)			
" 31	Bush & Co. Dr.		11,500	
	To Bank A/c			11,500
	(Being balance payment made)			

LEDGERS

Bush & Co's Account

Dr. Cr.

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2018		**Rs.**	2018		**Rs.**
Jan. 14	To Bank A/c	1,500	Jan. 31	By Bank A/c (Sales)	20,000
Jan. 14	To Bank A/c (Advance)	5,000			
Jan. 14	To Commission A/c	2,000			
Jan. 14	To Bank A/c (Balance)	11,500			
		20,000			20,000

Commission Account

2018		**Rs.**	2018		**Rs.**
Jan. 31	To Profit & Loss A/c	2,000	Jan. 28	By Bush & Co.	2,000

बोध प्रश्न ग

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

   i) प्रेषिती द्वारा किए गए समस्त व्ययों को प्रेषण खाते में ..... किया जाता है।

ii) जब प्रेषिती द्वारा दोषयुक्त माल लौटाया जाता है तो प्रेषक उसे ..... खाते में डेबिट करता है।

iii) जब आश्वासी कमीशन नहीं होता तब अशोध्य ऋणों को वहन करने का उत्तरदायित्व ..... पर होगा।

iv) प्रेषण खाता ..... खाते के समान होता है।

v) प्रेषिती अंतिम स्टॉक के लिए कोई प्रविष्टि ..... करता है।

vi) कमीशन खाता ..... खाता होता है।

2. स्पष्ट कीजिए कि प्रेषिती अपनी पुस्तकों में निम्नलिखित के लिए कोई प्रविष्टि क्यों नहीं करता?

i) प्रेषण पर भेजे गए माल

ii) प्रेषण पर हुए लाभ अथवा हानि

iii) अंतिम स्टॉक

.....

.....

.....

.....

15.4 सीधे लेजर में लेखा करना

आप जानते हैं कि प्रत्येक प्रेषण के लिए प्रेषक अपनी पुस्तकों में प्रेषण खाता, प्रेषण पर भेजे गए माल का खाता तथा प्रेषिती का खाता बनाता है जबकि प्रेषिती अपनी पुस्तकों में प्रेषक का खाता तथा कमीशन खाता बनाता है। इस इकाई में आपने पढ़ा कि प्रेषण से संबंधित सभी लेन-देनों का लेखा पहले जर्नल में किया जाता है तथा उसके बाद उनकी खतौनी ऊपर बताए गए खातों में की जाती है। कभी-कभी आपको जर्नल प्रविष्टियां किये बिना सीधे ही लेजर खाते बनाने के लिए कहा जा सकता है। अतः आपको यह सीखना चाहिए कि ये खाते सीधे किस प्रकार बनाए जाते हैं। आपको याद होगा कि प्रेषण खाते को परेशित माल की लागत, प्रेषक द्वारा किए गए समस्त व्ययों, प्रेषिती द्वारा किए गए समस्त व्ययों तथा उसके दिए जाने वाले कमीशन आदि से डेबिट किया जाता है, तथा नकद एवं उधार दोनों प्रकार के विक्रय व प्रेषिती द्वारा लौटाए गए माल से क्रेडिट किया जाता है। प्रेषिती के खाते को उसके द्वारा किए गए विक्रय से डेबिट किया जाएगा तथा उसके व्ययों, कमीशन और उसके द्वारा प्रेषक को भेजी गयी रकम से क्रेडिट किया जाएगा।

प्रेषिती की पुस्तकों में प्रेषक का खाता प्रेषक की पुस्तकों में प्रेषिती के खाते से बिल्कुल उल्टा होता है। इसे प्रेषिती द्वारा किए गए व्ययों, उसको देय कमीशन, तथा प्रेषक को भेजी गई रकम से डेबिट किया जाता है और विक्रय की कुल रकम से क्रेडिट किया जाता है।

उदाहरण 4 को पढ़िए और देखिए कि प्रेषण से संबंधित लेन-देनों का लेखा सीधे लेजर में किस प्रकार किया जाता है।

उदाहरण 4

दिल्ली के गुरशरण एंड कंपनी ने 1 जनवरी, 2018 को कलकत्ता के सिंह एंड कं. को 40,000 रु. की लागत की 50 पेटियां ग्लासवेयर विक्रय के लिए प्रेषण पर भेजी। इसकी सकल बिक्री-प्राप्तियों पर 5% की दर से कमीशन मिलना था। गुरशरन एंड कं. ने मालभाड़ा और ढुलाई पर 500 रु. और पैकिंग पर 600 रु. का भुगतान दिया।

सिंह एंड कं. ने 5 जनवरी, 2018 को माल प्राप्त किया तथा निकासी व्यय के लिए 300 रु., माल भाड़ा के लिए, 200 रु., विविध व्ययों के लिए 50 रु. तथा गोदाम के किराए के लिए 100 रु. का भुगतान किया। उन्होंने 1,000 रु. प्रति पेटी की दर से 15 पेटियां, 1,200 रु. प्रति पेटी की दर से 25 पेटियां, तथा 1,100 रु. प्रति पेटी की दर से 10 पेटियां बेची।

5 अप्रैल 2018 को सिंह एंड कं. ने गुरशरन एंड कं. को उनके हिसाब में 15,000 रु. का बैंक ड्राफ्ट भेजा। 10 अप्रैल 2018 को सिंह एंड कं. ने एक विक्रय विवरण भेजा जिसके साथ शेष देय राशि के लिए एक बिल भी था।

दोनों पक्षों की लेखा पुस्तकों में आवश्यक लेजर खाते बनाइए।

हलः

Books of Gursharan & Co.
Consignment to Singh & Co's Account

Dr. Cr.

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amoun
2018		**Rs.**	2018		**Rs.**
Jan. 1	To Goods Sent on Consignment A/c	40,000	Apr. 10	By Singh & Co. (Sales)	56,000
" 1	To Bank A/c				
	Freight and Carriage 500				
	Packing 600	1,100			
Apr.10	To Singh & Co. (Expenses)				
	Clearing charges 300				
	Carriage 200				
	Misc. Expenses 50				
	Godown Rent 100	650			
" 10	To Singh & Co. (Commission)	2,800			
" 10	To Profit & Loss A/c (Profit transferred)	11,450			
		56,000			56,000

2018		Rs.	2018		Rs.
Apr.10	To Trading A/c	40,000	Jan. 1	By Consignment to Singh & Co. A/c	40,000

Singh & Co's Account

2018		Rs.	2018		Rs.
Apr. 10	To Consignment to	56,000	Apr. 5"	By Bank A/c	15,000
			Apr. 10"	By Consignment to Singh & Co. A/c (Expenses)	650
			Apr. 10"	By Consignment to Singh & Co. A/c (Commission)	2,800
			Apr. 10	By Bills Receivable A/c (Balance)	37,550
		56,000			56,000

Books of Singh & Co.
Gursharan & Co. Account

2018		Rs.	2018		Rs.
Apr. 5	To Bank A/c	15,000	Apr. 10	By Bank A/c (Sales)	56,000
10	To Cash A/c (Expenses)	650			
10	To Commission A/c	2,800			
10	To Bills Payable A/c	37,550			
		56,000			56,000

Commission Account

2018		Rs.	2018		Rs.
Apr. 10	To Profit & Loss A/c	2,800	Apr. 10	By Gursharan & Co. A/c	2,800
		2,800			2,800

15.5 अनबिका स्टॉक (Unsold Stock)

उदाहरण 4 में आपने देखा कि सिंह एण्ड कंपनी ने उनको प्रेषित किए गए समस्त माल का विक्रय कर दिया था। लेकिन व्यवहार में आप पाएंगे कि विक्रय-विवरण प्रस्तुत करते समय प्रेषित माल का कुछ भाग प्रेषिती के पास अनबिका रह सकता है। प्रेषण पर हुए सही लाभ अथवा हानि को ज्ञात करने के लिए अनबिके स्टॉक का मूल्यांकन तथा लेखा किया जाना चाहिए। इसलिए आइए पहले हम यह देखें कि अनबिके स्टॉक का मूल्यांकन किस प्रकार किया जाता है।

15.5.1 अनबिके स्टॉक का मूल्यांकन

आप जानते हैं कि अनबिके स्टॉक का मूल्यांकन साधारणतया लागत पर किया जाता है। प्रेषण स्टॉक के संदर्भ में संबंधित लागत में उस लागत को जिस पर माल का प्रेषण किया जाता है तथा आनुपातिक अनावर्ती व्ययों (non-recurring expenses) को सम्मिलित किया जाता है। अनावर्ती व्ययों का तात्पर्य माल को प्रेषिती के गोदाम तक पहुंचाने तक किए गए समस्त व्ययों से है। आपको ध्यान रखना चाहिए कि अनबिके स्टॉक का मूल्यांकन करने के लिए समस्त अनावर्ती व्ययों का अनुपात लिया जाता है चाहे वे प्रेषक द्वारा किए गए हों अथवा प्रेषिती द्वारा। प्रेषिती द्वारा किए गए व्ययों के संबंध में विस्तृत विवरण उपलब्ध न होने पर उसके द्वारा किए गए समस्त व्ययों को आवर्ती (recurring) व्यय माना जाता है और इसीलिए अंतिम स्टॉक के मूल्यांकन में उन्हें शामिल नहीं किया जाता।

दूसरे शब्दों में अंतिम स्टॉक का मूल्यांकन करते समय हम लागत मूल्य में उन आनुपातिक व्ययों को जोड़ देते हैं जो माल को प्रेषिती के स्थान तक पहुंचाने में किए जाते हैं। उसके बाद प्रेषक अथवा प्रेषिती द्वारा किए गए अन्य किसी भी प्रकार के व्ययों को शामिल नहीं किया जाता क्योंकि इन व्ययों से माल के मूल्य में कोई वृद्धि नहीं होती। ऐसे व्यय हैं – गोदाम का किराया, विक्रय संबंधी व्यय, निर्गत माल भाड़ा, गोदाम का बीमा, कटौती आदि।

अंतिम स्टॉक का मूल्य ज्ञात करने के लिए साधारणतया निम्नलिखित व्ययों को जोड़ा जाता है।

मालभाड़ा तथा रेलभाड़ा

लदाई व्यय

सीमा शुल्क

माल छुड़ाने से संबंधित व्यय

जहाज से माल उतरवाने का व्यय

गोदाम तक ले जाने के मालभाड़े का भुगतान

माल उतरवाने का व्यय

निम्नलिखित व्यय ऐसे व्यय हैं जिन्हें अंतिम स्टॉक के मूल्यांकन में शामिल नहीं किया जाता।

गोदाम का किराया

छूट

अशोध्य ऋण

गोदाम में पड़े माल का बीमा

विक्रय तथा वितरण व्यय

आप देखेंगे कि अंतिम स्टॉक के मूल्यांकन में प्रेषक द्वारा किए गए समस्त व्ययों को शामिल किया जाता है। समस्या केवल प्रेषिती द्वारा किए गए व्ययों के संबंध में उत्पन्न होती है। अंतिम स्टॉक के मूल्य में प्रेषिती द्वारा किए गए केवल उन्ही व्ययों को शामिल किया जाता है जो माल के प्रेषिती के गोदाम तक पहुंचने से पहले किए जाते हैं। उसके

बाद किए गए अन्य किसी भी व्यय को अंतिम स्टॉक के मूल्यांकन में शामिल नहीं किया जाता।

उदाहरण 5 को ध्यान से पढ़िए और देखिए कि अनबिके स्टॉक का मूल्य किस प्रकार निकाला जाता है।

उदाहरण 5

ए ने **बी** के पास 10,000 रु. का सामान भेजा तथा उसने पैकिंग के लिए 1,200 रु. और बीमा के लिए 800 रु. का भुगतान किया। **बी** ने सामान को प्राप्त किया तथा मालभाड़ा के लिए 2,000 रु., ढुलाई और उतरवाई के लिए 400 रु., गोदाम के किराए के लिए 600 रु., विक्रय व्यय के रूप में 400 रु. तथा बीमा के लिए 800 रु. का भुगतान किया। **बी** ने तीन-चौथाई माल 1,800 रु. में बेच दिया। अंतिम स्टॉक के मूल्य की गणना कीजिए।

हलः

1. Cost of Unsold Stock: Rs. 2,500 (1/4 of 10,000)

2. Non-recurring Expenses:
   Incurred by Consignor Rs. 2,000 (1,200 + 800)
   Incurred by Consignee Rs. 2,400 (2,000 + 400)
   Rs. 4,400

3. Value of Closing Stock

$$\text{Cost of Unsold Stock} + \left(\text{Non-recurring Expenses} \times \frac{\text{Cost of Unsold Stock}}{\text{Cost of Goods Consigned}}\right)$$

= Rs. 2,500 + (4,400 × 2,500/10,000)

= Rs.2,500 + 1,100

= Rs. 3,600

नोट : अंतिम स्टॉक के मूल्यांकन में गोदाम का किराया, विक्रय व्यय तथा बीमा व्यय को शामिल नहीं किया गया है क्योंकि ये आवर्ती व्यय (recurring expenses) हैं।

15.5.2 अनबिके स्टॉक का लेखाकरण

चूंकि अनबिके स्टॉक का मूल्य किसी प्रेषण पर हुए लाभ अथवा हानि को प्रभावित करता है, इसलिए इसका मूल्यांकन तथा प्रेषक की पुस्तकों में इसका लेखा करना बहुत महत्वपूर्ण है। इसे प्रेषण खाते में क्रेडिट पक्ष की ओर दिखाया जाता है जिसके लिए निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि की जाती है।

Consignment Stock A/c Dr.
To Consignment A/c
(Being the value of closing stock)

लेकिन प्रेषिती अंतिम स्टॉक के लिए कोई प्रविष्टि नहीं करेगा क्योंकि वह माल का स्वामी नहीं होता है तथा जब वह माल प्राप्त करता है अथवा लौटाता है तब भी कोई प्रविष्टि नहीं करता।

उदाहरण 6 को पढ़िए और देखिए कि अंतिम स्टॉक का मूल्य किस प्रकार निकाला जाता है तथा लेखा पुस्तकों में इसका लेखा किस प्रकार किया जाता है।

उदाहरण 6

1 जनवरी, 2018 को दिल्ली के यूनिवर्सल स्पोर्ट्स ने बंबई के जेमिनी स्पोर्ट्स को 180 पेटियां खेल का सामान भेजा। इनमें से प्रत्येक का मूल्य 360 रु. था। उन्होंने बीमा के लिए 360 रु. और मालभाड़ा के लिए 1,800 रु. का भुगतान किया। जेमिनी स्पोर्ट्स को कुल विक्रय पर 10% कमीशन मिलता है।

जेमिनी स्पोर्ट्स ने इस प्रेषण को 15 जनवरी को प्राप्त किया तथा यूनिवर्सल स्पोर्ट्स को 10,000 रु. के लिए 60 दिन का बिल भेजा। इस बिल को 9,900 रु. में भुनाया गया।

इन पेटियों को खोलने पर प्रेषिती को पता चला कि 10 पेटियों में गलत सामान रखा हुआ था, इसलिए उसने इन्हें वापस कर दिया। इन्हें लौटाने में उसे 400 रु. मालभाड़ा के लिए देना पड़ा।

जेमिनी स्पोर्ट्स ने 120 पेटियां प्रति पेटी 600 रु. की दर से नकद बेची तथा 20 पेटियां प्रति पेटी 700 रु. की दर से उधार बेची। इसने निकासी पर 720 रु. व्यय किया तथा माल को बाहर भेजने पर 600 रु. मालभाड़ा के रूप में व्यय किया। उसे 400 रु. का अशोध्य ऋण भी हुआ। लेन देन का हिसाब 30 जून को हुआ तथा शेष राशि को चेक से भेज दिया गया। दोनों ही पक्षों की लेखा पुस्तकों में आवश्यक लेजर खाते दिखाइए।

हलः

Books of Universal Sports
Consignment Account

Dr. Cr.

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2018		Rs.	2018		Rs.
Jan. 1	To Goods Sent on Consignment A/c	64,800	Jan. 15	By Goods Sent on Consignment A/c (Returns)	3,600
" 1	To Bank A/c (Expenses)		Jun. 30	By Gemini Sports	
	Insurance 360			Cash Sales 72,000	
	Freight 1,800	2,160		Credit Sale 14,000	86,000
" 15	To Gemini Sports (Freight on goods returned)	400	" 30	By Consignment Stock A/c	11,280
Jun 30	To Gemini Sports (Expenses)				
	Clearing Charge 720				
	Carriage Outward 600	1,320			
" 30	To Gemini Sports (Bad Debts)	400			
" 30	To Gemini Sports (Commission)	8,600			
" 30	To Profit & Loss A/c (Profit transferred)	23,200			
		1,00,880			1,00,880

Gemini Sport Account

2018		Rs.	2018		Rs.
June 30	To Consignment A/c (Sales)	86,000	Jan.15	By Bills Receivable A/c (Advance)	10,000
			15	By Consignment A/c (Freight on returns)	400
			30 June	By Consignment A/c (Expenses)	1,320
			30"	By Consignment A/c (Bad Debts)	400
			30"	By Consignment A/c (Commission)	8,600
			30"	By Bank A/c	65,280
		86,000			86,000

Goods Sent on Consignment Account

2018		Rs.	2018		Rs.
Jan. 15	To Consignment A/c	3,600	Jan. 1	By Consignment A/c	.64,800
June 30	To Trading A/c	61,200			
		64,800			64,800

Books of Gemini Sports

Universal Sports Account

Dr. Cr.

$$\text{अनावर्ती व्यय} \times \left(\frac{\text{अंतिम स्टॉक की इकाइयां}}{\text{परेषित इकाइयों की संख्या}}\right)$$

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2018		Rs.	2018		Rs.
Jan. 15	To Bills Payable A/c	10,000	June 30	By Cash A/c (Cash Sales)	72,000
" 15	To Cash A/c (Freight on returns)	400	June 30	By Debtors A/c (Credit Sales)	14,000
June 30	To Cash A/c (expenses)	1,320			
" 30	To Debtors A/c (Bad Debts)	400			
" 30	To Commission A/c	8,600			
" 30	To Bank A/c	65,280			
		86,000			86,000

Commission Account

2018		Rs.	2018		Rs.
June 30	To Profit & Loss A/c	8,600	June 30	By Universal Sports	8,600

नोट :

1. अंतिम स्टॉक का मूल्यांकन

इकाइयां

अंतिम इकाइयों की संख्या × प्रति इकाई लागत मूल्य +

= $30 \times 360 + (2880 \times 30/180)$

= 10,800 + 480

= 11,280 रु.

(अनावर्ती व्ययों में प्रेषक द्वारा किए गए समस्त व्यय तथा प्रेषिती द्वारा माल छुड़ाने के लिए चुकाए गए व्यय शामिल किए गए हैं।)

2. प्रेषक को लौटाया गया माल

लौटाए गए माल का मूल्यांकन केवल लागत मूल्य पर किया जाता है। उनमें अन्य व्ययों को शामिल नहीं किया जाना चाहिए। लेकिन प्रेषिती द्वारा माल को लौटाने पर किए गए समस्त व्ययों को उस प्रेषण पर किया गया व्यय मानना चाहिए। इसलिए माल को लौटाने पर किए गए व्यय से प्रेषण खाते को डेबिट किया जाता है और प्रेषिती के खाते को क्रेडिट किया जाता है।

बोध प्रश्न घ

1. सही विकल्प पर निशान लगाइए।

   अ) प्रेषण स्टॉक की लागत में उस लागत को जिस पर माल का प्रेषण किया जाता है तथा

      i) अनावर्ती व्ययों को शामिल किया जाता है।

      ii) आनुपातिक अनावर्ती व्ययों को शामिल किया जाता है।

      iii) समस्त अनावर्ती व्ययों को शामिल किया जाता है।

   ब) अनावर्ती व्यय ऐसे व्यय होते हैं जो

      i) माल के प्रेषिती के गोदाम में पहुंचने के बाद किए जाते हैं।

      ii) माल के यातायात पर किए जाते हैं।

      iii) माल के प्रेषिती के गोदाम तक पहुंचने तक किए जाते हैं।

   स) प्रेषण स्टॉक को दिखाया जाता है

      i) प्रेषिती के खाते के क्रेडिट पक्ष की ओर

      ii) प्रेषण के खाते के क्रेडिट पक्ष की ओर

      iii) प्रेषण के खाते के डेबिट पक्ष की ओर।

   द) प्रेषिती द्वारा लौटाए गए माल को प्रेषण खाते में दिखाया जाना चाहिए

      i) लागत मूल्य पर

      ii) बाजार मूल्य पर

      iii) लागत मूल्य अथवा बाजार मूल्य में से जो भी कम हो उस पर।

   च) दोषयुक्त माल को वापस भेजने पर किए गए व्ययों को डेबिट किया जाना चाहिए।

i) लाभ-हानि खाते में लागत मूल्य पर

ii) प्रेषण खाते में

iii) प्रेषण पर भेजे गए माल के खाते में।

15.6 माल की हानि (Loss of Goods)

प्रेषण व्यवस्था के अंतर्गत जब माल को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जाता है तो मार्ग में उसकी हानि की संभावना बनी रहती है। हानि प्रेषिती के गोदाम में भी हो सकती है। हानि वाष्पीकरण, रिसन, गलत ढंग से उसके पटकने आदि कारणों से अथवा किसी दुर्घटना या चोरी के कारण हो सकती है। ऐसी हानियां मुख्य रूप से दो प्रकार की हो सकती हैं –

अ) सामान्य हानि तथा

ब) असामान्य हानि

आइए अब हम इन हानियों की सही प्रकृति का तथा लेखा पुस्तकों में उनका लेखा किस प्रकार किया जाता है, इसका वर्णन करें।

15.6.1 सामान्य हानि (Normal Loss)

यह वह हानि होती है जो प्रेषित माल की स्वाभाविक प्रकृति के कारण होती है। इस प्रकार की हानि माल को चढ़ाने-उतारने में, बड़े टुकड़ों को छोटे टुकड़ों में काटने में, माल को तोलने में अथवा वाष्पीकरण, निर्माण प्रक्रिया आदि के कारण हो सकती है। उदाहरण के लिए कोयले को चढ़ाने-उतारने में अथवा उसे तोलने में उसका कुछ भाग चूरे के रूप में अवश्य बिखरेगा। इसी प्रकार पैट्रोल से संबंधित उत्पाद भी वाष्पीकरण अथवा रिसन् के कारण अपना कुछ भाग खो देते हैं। इस प्रकार की हानि से बचा नहीं जा सकता। चूंकि इस प्रकार की हानि व्यवसाय के सामान्य संचालन में होती है तथा माल की स्वााभाविक विशेषताओं के कारण होती है इसलिए इसे सामान्य हानि कहा जाता है।

सामान्य हानि को लेखा पुस्तकों में अलग से नहीं दिखाया जाता। इस तरह की हानि की लागत शेष इकाइयों पर बांट दिया जाता है जिससे माल की प्रति इकाई लागत बढ़ जाती है। उदाहरण के लिए मान लीजिए 10,000 टन कोयला प्रेषण पर भेजा गया जिसकी लागत 100 रु. प्रति टन है। सामान्य हानि 2 प्रतिशत अर्थात् 200 टन है। आइए अब हम देखें कि सामान्य हानि से प्रति इकाई लागत मूल्य किस प्रकार बढ़ जाता है।

10,000 टन कोयले की कुल लागत = 10,00,000 रु. (10,000 × 100)

कुल इकाइयां = 10,000 टन

सामान्य हानि = 200 टन

शेष इकाइयां = 9,800 टन

10,00,000 रु. अब 9,800 टन कोयले की लागत होगी क्योंकि सामान्य हानि की लागत शेष इकाइयों द्वारा वहन की जाएगी। अतः प्रति इकाई लागत होगी

$$= \frac{10,00,000}{9,800} = 102.04 \text{ रु. प्रति टन।}$$

जैसा कि पहले बताया जा चुका है, सामान्य हानि के लिए अलग से कोई प्रविष्टि नहीं की जाती। इसके प्रभाव को केवल अंतिम स्टॉक के मूल्यांकन में दिखा दिया जाता है।

यदि प्रेषिती सारे माल को बेचने में समर्थ हो जाता है और अनबिका माल बचता ही नहीं तो सामान्य हानि का प्रश्न असंगत हो जाता है। उस स्थिति में हम पहले ऊपर बताई गई विधि से बढ़ी हुई प्रति इकाई लागत ज्ञात करेंगे तथा उसके बाद स्टॉक की इकाइयों की संख्या को बढ़ी हुई प्रति इकाई लागत से गुणा करके अंतिम स्टॉक का मूल्य निकाला जाएगा। निम्नलिखित सूत्र की सहायता से अंतिम स्टॉक का मूल्य सीधे ही अर्थात् बढ़ी हुई प्रति इकाई लागत ज्ञात किए बिना भी निकाला जा सकता है।

$$\text{प्रेषित माल की कुल लागत} \times \frac{\text{अनबिके माल की इकाइयां}}{\text{शेष इकाइयां}}$$

उदाहरण 7 को पढ़िए और देखिए कि सामान्य हानि की अवस्था में अंतिम स्टॉक का मूल्य किस प्रकार निकाला जाता है ?

उदाहरण 7

राम ने दिल्ली के श्याम को प्रति टन 50 रु. की दर से 2000 टन कोयले को प्रेषण पर भेजा। उसने मालभाड़ा के रूप में 20,000 रु. का भुगतान किया। सामान्य अपक्षय (normal wastage) के कारण श्याम तक केवल 1950 टन कोयला ही पहुंच सका। उसने माल को उतरवाने और उसकी ढुलाई पर 5,000 रु. खर्च किया। 1,300 टन कोयले को बेचा गया। अंतिम स्टॉक के मूल्य की गणना कीजिए।

हल:

			Rs.
Cost of 2,000 tons of coal at Rs. 50 per ton			1,00,000
Add:			
Freight paid by the Consignor			20,000
Unloading charges paid by the consignee			5,000
Total Cost of Goods			1,25,000
Unsold units:			**Tons.**
Total Units			2,000
Units Lost			50
Remaining Units			1,950
Units Sold			1,300
Units Unsold			**650**
Value of Closing Stock:		Rs.	
Cost of 2,000 tons =	=	1,25,000	
Cost of 1,950 (2,000 —50) tons	=	1,25,000	
Inflated Cost per ton		= 1,25,000 / 1950 tons	Rs. 64.10

Value of Closing Stock = Number of unsold units × Inflated cost per unit

= 650 tons × 64.10

Rs. 41,665

Alternatively

Value of clossing Stock =

$$\text{Total Cost of Goods Consigned} \times \frac{\text{Unsold Units}}{\text{Remaining Units}}$$

$$= \text{Rs.}1,25,000 \times \frac{650}{1,950}$$

= Rs. 41,667

15.6.2 असामान्य हानि (Abnormal Loss)

वह हानि जो असावधानी, अकुशलता अथवा किसी दुर्घटना के कारण होती है, असामान्य हानि मानी जाती है। उदाहरण के लिए आग, बाढ़, भूकम्प, दंगे, युद्ध, चोरी आदि से हुई माल की हानि। इस प्रकार की हानि उत्पाद की स्वाभाविक प्रकृति के कारण नहीं होती बल्कि कुछ बाहरी शक्तियों के क्रियाशील होने से होती है।

असामान्य हानि की लागत उसी प्रकार ज्ञात की जाती है जिस प्रकार अंतिम स्टॉक का मूल्य ज्ञात किया जाता है। दूसरे शब्दों में, असामान्य हानि की लागत ज्ञात करने के लिए असामान्य हानि की इकाइयों की लागत में हानि होने के समय तक किए गए सभी आनुपातिक अनावर्ती व्ययों को भी जोड़ दिया जाता है। असामान्य हानि ज्ञात करने के लिए निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया जाता है। असामान्य हानि की इकाइयों की लागत =

असामान्य हानि की इकाइयों की लागत × प्रति इकाई लागत +

हानि के समय तक हुए अनावर्ती व्यय × $\frac{\text{असामान्य हानि की इकाइयों की लागत}}{\text{प्रेषित इकाइयों की संख्या}}$

चूंकि असामान्य हानि प्रेषण से प्रासंगिक नहीं होती इसलिए इसे लेखा पुस्तकों में अलग से दिखाया जाना चाहिए। कुल असामान्य हानि को प्रेषक खाते में क्रेडिट किया जाता है। प्रेषण की पुस्तकों में निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है:

Abnormal Loss A/c		Dr.
	To Consignment A/c	
	(Being loss on account of ...)	

इस प्रकार की असामान्य हानि

i) बिना बीमा कराई (अबीमित) हो सकती है

ii) आंशिक रूप से बीमित हो सकती है

iii) पूर्ण रूप से बीमित हो सकती है

i) **जब हानि का बीमा न करवाया गया हो** : जब किसी बीमा कंपनी से असामान्य हानि का बीमा न करवाया गया हो तो निम्नलिखित प्रविष्टि द्वारा हानि की कुल रकम को लाभ-हानि खाते में अंतरित कर दिया जाता है।

Profit & Loss A/c Dr.
To Abnormal Loss A/c
(Being Abnormal Loss transferred to P & LA/c)

ii) **जब हानि का आंशिक बीमा करवाया गया हो** : जब असामान्य हानि का बीमा तो करवाया हुआ हो लेकिन हानि के कुछ भाग का दावा ही स्वीकार किया जाए तो निम्न प्रविष्टि की जाती है।

Insurance Company's A/c Dr.
Profit & Loss A/c Dr.
To Abnormal Loss A/c
(Being partial claim admitted)

बीमा कंपनी को स्वीकृत दावे की रकम से डेबिट किया जाएगा तथा केवल शेष रकम (कुल हानि-दावे की रकम) को ही लाभ-हानि खाते में स्थानांतरित किया जाएगा।

iii) **जब हानि का पूर्ण रूप से बीमा करवाया गया हो** : यदि हानि का पूर्ण रूप से बीमा करवाया हुआ हो तथा बीमा कंपनी दावे की कुल रकम को स्वीकार कर ले तो निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है।

Insurance Company's A/c Dr.
To Abnormal Loss A/c
(Being claim fully admitted)

लाभ हानि खाते में कुछ भी स्थानांतरित नहीं किया जाता क्योंकि हानि की कुल रकम के दावे को बीमा कंपनी द्वारा स्वीकार कर लिया गया है। प्रेषक को किसी प्रकार की हानि नहीं उठानी पड़ेगी।

उदाहरण 8 को पढ़िए और देखिए कि असामान्य हानि किस प्रकार ज्ञात की जाती है तथा लेखा पुस्तकों में उसका लेखा किस प्रकार किया जाता है।

उदाहरण 8

फिलिप्स रेडियो कंपनी ने दिल्ली के अपने एजेंट पॉल रेड़ियो को 100 ट्रांजिस्टर प्रेषण पर भेजे। प्रत्येक ट्रांजिस्टर का लागत मूल्य 75 रु. था। प्रेषक ने मालभाड़ा के लिए 200 रु. , ढुलाई के लिए 50 रु. और बीमा के लिए 400 रु. का भुगतान किया। रास्ते में ही पांच ट्रांजिस्टर बिल्कुल ही नष्ट हो गए। बीमा कंपनी ने 300 रु. का बीमा दावा स्वीकार किया। प्रेषिती ने 95 रेडियो की डिलीवरी ली तथा निकासी पर 190 रु., ढुलाई पर 95 रु., गोदाम के किराए पर 250 रु. तथा विक्रय व्यय के रूप में 150 रु. व्यय किया। उन्होंने प्रति ट्रांजिस्टर 100 रु. की दर से सभी ट्रांजिस्टरों को बेच दिया। पॉल रेडियो को कुल विक्रय पर 5% कमीशन मिलता है। शेष देय राशि बैंक ड्राफ्ट से भेज दी गई। असामान्य हानि की गणना कीजिए तथा दोनों पक्षों की पुस्तकों में आवश्यक लेजर खाते बनाइए।

हलः

Abnormal Loss = Number of Abnormal Loss Units × Cost Price Per Unit +

$$\text{(Non-recurring expenses before loss} \times \frac{\text{Abnormal Loss Units}}{\text{Total Units}})$$

= $5 \times 75 + (650 \times 5/100)$

= $375 + 32.50$

= Rs. 407.50 say Rs. 408

Books of Philips Radio Company
Consignment Account

Dr. **Cr.**

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
		Rs.			**Rs**
	To Goods Sent on Consignment A/c	7,500		By Abnormal Loss A/c	408
	To Bank A/c (Expenses)	650		By Paul Radios (Sales)	9,500
	To Paul Radios (Expenses)	685			
	To Paul Radios (Commission)	475			
	To Profit & Loss A/c (Profit transferred)	598			
		9,908			9,908

Paul Radio's Account

		Rs.		Rs
	To Commission A/c (Sales)	9,500	By Consignment A/c (Expenses)	685
			By Consignment A/c (Commission)	475
			By Bank A/c	8,340
		9,500		9,500

Goods Sent on Consignment A/c

	Rs.		Rs
To Trading A/c	7,500	By Consignment A/c	7,500
	7,500		7,500

Abnormal Loss Account

	Rs.		Rs
To Consignment A/c	408	By Insurance Company A/c	300
		By Profit & Loss A/c	108
	408		408

Books of Paul Radio

Philips Radio's Account

Dr.			Cr.
	Rs.		**Rs**
To Bank A/c (Expenses)	685	By Bank A/c (Sales)	9,500
To Commission A/c	475		
To Bank A/c	8,340		
	9,500		9,500

Commission Account

	Rs.		**Rs**
To Profit & Loss A/c	475	By Philips Radio A/c	475
	475		475

अंतिम स्टॉक के मूल्यांकन पर असामान्य हानि का प्रभावः असामान्य हानि की अवस्था में अंतिम स्टॉक का मूल्य भी प्रभावित होता है। असामान्य हानि या तो प्रेषिती के गोदाम में हो सकती है या फिर यातायात में। आइए अब हम इन दोनों अवस्थाओं में अंतिम स्टॉक पर असामान्य हानि के प्रभाव को देखें।

जब असामान्य हानि प्रेषिती के गोदाम में होती है तो इसका अंतिम स्टॉक के मूल्यांकन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा क्योंकि प्रेषिती के गोदाम में पहुंचने के बाद माल पर जो भी व्यय किए जाते हैं उनको हम इस कार्य के लिए लेते ही नहीं।

उदाहरण 9 को ध्यान से पढ़िए और देखिए कि जब प्रेषिती के गोदाम में असामान्य हानि होती है तो असामान्य हानि की तथा अंतिम स्टॉक के मूल्य की गणना किस प्रकार की जाती है।

उदाहरण 9

वनस्पति लि. ने चंडीगढ़ के अशोका डीलर्स को 5,000 कि.ग्रा. घी प्रेषण पर भेजा। प्रति कि. ग्रा. घी की लागत 8 रु. थी। वनस्पति लि. ने 50 रु. मालभाड़ा, 250 रु. पैकिंग के लिए तथा 200 रु. मार्ग में बीमा के लिए व्यय किया।

माल को भेजने के तीन मास बाद अशोका डीलर्स ने सूचित किया कि उसने 3,500 कि. ग्रा. घी 9.50 रु. प्रति कि.ग्रा. की दर से बेच दिया तथा उसे गोदाम के किराए पर 500 रु. और सेल्समैन के वेतन पर 750 रु. व्यय करना पड़ा। विक्रय पर अशोका डीलर्स को 5% कमीशन मिलता है। गोदाम में 500 कि.ग्रा. घी नष्ट हो गया। 3,500 रु. का बीमा दावा स्वीकृत हुआ। दोनों पक्षों की लेखा पुस्तकों में आवश्यक लेजर खाते बनाइए।

Solution:

Books of Vanaspati Ltd.
Consignment Account

Dr. **Cr.**

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
		Rs.			**Rs**
	To Goods Sent on Consignment A/c	40,000		By Abnormal Loss A/c	4,050
				By Ashoka Dealers (Sales)	33,250
	To Bank A/c (Expenses)	500		By Consignment Stock A/c	8,100
	To Ashoka Dealers (Expenses)	1,250			
	To Ashoka Dealers (Commission)	1,662			
	To Profit & Loss A/c	1,988			
		45,400			45,400

Ashoka Dealer's Account

	Rs.			**Rs**
To Consignment A/c	33,250		By Consignment A/c (Expense)	1,250
			By Consignment A/c (Commission)	1,662
			By Balance c/d	30,338
	33,250			33,250

Good Sent on Consignment Account

	Rs.			**Rs**
To Trading A/c	40,000		By Consignment A/c	40,000

Abnormal Loss Account

	Rs.			**Rs**
To Consignment A/c	4,050		By Insurance Company's A/c	3,500
			By Profit & Loss A/c	550
	4,050			4,050

Note: Abnormal loss has been worked out as follows:

Cost of 500 units = Rs. 4,000 (500 × 8)

Add : proportionate non-recurring expenses Rs. 50 (500/5,000 × 500)

Abnormal Loss = Rs. 4050

Books of Ashoka Dealers
Vanaspati Ltd'/s Account

Dr. **Cr.**

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
		Rs.			**Rs**
	To Bank A/c (expenses)	1,250		By Bank A/c (Sales)	33,250
	To Commission A/c	1,662			
	To Balance c/d	30,338			
		33,250			33,250

Commission Account

		Rs.			**Rs**
	To Profit & Loss A/c	Rs.1,662		By Vanaspati Ltd	Rs.1,662

आप देख चुके हैं कि जब असामान्य हानि प्रेषिती के गोदाम में होती है तो इसका अंतिम स्टॉक के मूल्यांकन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। लेकिन जब असामान्य हानि यातायात में होती है तो ऐसा नहीं होता। अंतिम स्टॉक का मूल्यांकन यातायात में हुई हानि से प्रभावित होता है क्योंकि कुछ अनावर्ती व्यय हानि होने के बाद भी हो सकते हैं। इसलिए जब इस प्रकार की हानि यातायात में हुई हो तो आपको हानि से पहले किए गए अनावर्ती व्ययों में तथा हानि के बाद किए गए अनावर्ती व्ययों में अन्तर को समझना होगा। हानि से पहले किए गए अनावर्ती व्ययों का संबंध कुल प्रेषित इकाइयों से होता है जबकि हानि होने के बाद किए गए अनावर्ती व्ययों का संबंध केवल शेष इकाइयों से (कुल इकाइयां – असामान्य हानि की इकाइयां) होता है। इसलिए हानि से पहले किए गए व्ययों को कुल इकाइयों में आनुपातिक रूप से बांट दिया जाता है जबकि हानि होने के बाद किए गए व्ययों को शेष इकाइयों में आनुपातिक रूप से बांट दिया जाता है।

उदाहरण 10 को ध्यान से पढ़िए और देखिए कि जब असामान्य हानि यातायात में होती है तो अंतिम स्टॉक तथा असामान्य हानि किस प्रकार ज्ञात की जाती है तथा उनका लेखा किस प्रकार किया जाता है।

उदाहरण 10

10 जून, 2018 को पटियाला के मोदी एंड कं. ने कलकत्ता के सेठी एंड कं. को 500 पेटी सामान भेजा। इनमें से प्रत्येक पेटी की लागत 150 रु. थी। उसी दिन प्रेषक ने ढुलाई और मालभाड़ा के लिए 2,500 रु., लदाई व्यय के लिए 1000 रु. तथा बीमा के लिए 1,200 रु. का भुगतान किया। 1 जुलाई, 2018 को प्रेषिती ने निकासी पर 1,800 रु. गोदाम और भंडारण पर 1,750 रु. तथा पैकिंग और विक्रय व्यय पर 900 रु. खर्च किया। उसने प्रेषित माल के अग्रिम भुगतान के रूप में 15,000 रु. का बैंक ड्राफ्ट भी भेजा। 5 जुलाई, 2018 को प्रेषिती ने 200 रु. प्रति पेटी की दर से 275 पेटी सामान बेच दिया। सेठी एंड कं. को

बिक्री की कुल प्राप्ति पर 5% कमीशन मिलता है। पता चला कि मार्ग में ही 50 पेटी गायब हो गयी। सेठी एंड कं. ने 10 जुलाई, 2018 को विक्रय विवरण प्रस्तुत किया। प्रेषक की लेखा पुस्तकों में आवश्यक लेजर खाते बनाइए।

Solution

Books of Modi & Co
Consignment Account

Dr. **Cr.**

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2018		**Rs.**	2018		**Rs.**
June, 10	To Goods Sent on Consignment A/c (500 cases)	75,000	July,10	By Sethi & **Co.** (Sales of 275 cases)	55,000
" 10	To Bank A/c (Consignor's Expenses)	4,700	" 10	By Abnormal loss A/c (Loss in transit 50 cases)	7,970
July, 10	To Sethi & Co. (Consignee's Expenses)	4,450	" 10	By Consignment Stock A/c	28,595
" 10	To Sethi & Co. (Commission)	2,750			
" 10	To Profit & Loss A/c (transfer of profit)	4,665			
		91,565			91,565

Sethi & Co. Account (Consignee)

2018		**Rs.**	2018		**Rs**
July,10	To Consignment A/c (Sale proceeds)	55,000	July, 10	By Bank A/c (Advance)	15,000
			10	By Consignment A/c (Consignment expenses)	4,450
			10	By Consignment A/c (Commission)	2,750
			10	By Balance c/d	32,800
		55,000			55,000

Good Sent on Consignment Account

2018		**Rs.**	2018		**Rs**
July, 10	To Trading A/c	75,000	July, 10	By Consignment A/c	75,000

नोट :

1. प्रेषक द्वारा किए गए समस्त व्यय तथा प्रेषिती द्वारा किए गए माल छुड़ाने के व्यय अनावर्ती व्यय होते हैं।

2. असामान्य हानि

असामान्य हानि की इकाइयों की संख्या × प्रति इकाई लागत मूल्य +

$$\left(\text{हानि होने तक के अनावर्ती व्यय} \times \frac{\text{असामान्य हानि की इकाइयां}}{\text{कुल परेषित इकाइयां}}\right)$$

$= (50 \times 150) + (4,700 \times 50/500)$

$= 7,500 + 470$

$= 7,970$ रु.

3. अंतिम स्टॉक का मूल्यांकन

अंतिम इकाइयों की संख्या = 175

प्रति इकाई लागत मूल्य = 150 रु.

अतः अनबिके स्टॉक का मूल्य होगा 175 × 150 = 26,250 रु0

हानि से पहले के अनावर्ती व्यय = 4,700 रु. (2,500 + 1,000 + 1,200)

चूंकि इन व्ययों को कुल प्रेषण पर अर्थात् 500 इकाइयों पर किया गया है

अतः प्रेषण स्टॉक पर इन व्ययों की आनुपातिक रकम होगी

$$4,700 \times \frac{175}{500} = 1,645 \text{ रू 0}$$

हानि के बाद के अनावर्ती व्यय 1,800 रु. है (प्रेषिती द्वारा चुकाए गए माल छुड़ाने के व्यय)। चूंकि ये व्यय प्रेषिती के पास प्रेषण पहुंचने के बाद किए गए हैं अतः इनका संबंध सिर्फ 450 इकाइयों (500–50) से ही है। इसलिए प्रेषण स्टॉक के लिए इन व्ययों की आनुपातिक रकम होगी

$$1,800 \times \frac{175}{450} = 700 \text{ रू 0}$$

अब अंतिम स्टॉक का मूल्य इस प्रकार होगा :

अनबिके स्टॉक की लागत = 26,250 रु. (175 × 1,150)

आनुपातिक व्ययों को जोड़िए

i) हानि के पहले के = 1,643 रु0

ii) हानि के बाद के = 700 रु.

अनबिके स्टॉक का मूल्य = 28,593 रु.

अंतिम स्टॉक के मूल्यांकन की इस विधि को हम एक सूत्र में निम्नलिखित प्रकार से व्यक्त कर सकते हैं :

अनबिकी इकाइयों की संख्या × प्रति इकाई लागत मूल्य +

हानि से पहले के अनावर्ती व्यय × $\frac{\text{अनबिकी इकाइयां}}{\text{कुल इकाइयां}}$

हानि के बाद के अनावर्ती व्यय × $\frac{\text{अनबिकी इकाइयां}}{\text{कुल इकाइयां} - \text{असामान्य हानि की इकाइयां}}$

15.6.3 जब सामान्य हानि तथा असामान्य हानि दोनों एक साथ हों

अब से पहले दिए गए उदाहरणों में आपने देखा कि प्रेषण पर या तो सामान्य हानि थी या असामान्य हानि। लेकिन यह भी संभव है कि एक ही प्रेषण के संबंध में सामान्य तथा असामान्य दोनों प्रकार की हानियां एक साथ हों। ऐसी स्थिति में असामान्य हानि उसी प्रकार ज्ञात की जाएगी जैसा कि उपभाग 15.6.2 में बताया गया था। लेकिन सामान्य हानि के कारण अंतिम स्टॉक के मूल्यांकन में विशेष सावधानी की आवश्यकता होती है। अंतिम स्टॉक का मूल्य ज्ञात करने के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई जाएगी।

i) प्रेषित माल की कुल लागत में प्रेषक तथा प्रेषिती द्वारा किए गए समस्त अनावर्ती व्ययों को जोड़ दीजिए।

ii) असामान्य हानि की इकाइयों की संख्या को प्रेषित इकाइयों की संख्या में से तथा असामान्य हानि की लागत को ऊपर (i) में ज्ञात की गई लागत में से घटा दीजिए।

iii) लागत में समायोजन किए बिना ऊपर (ii) में ज्ञात की गई इकाइयों की संख्या में से सामान्य हानि की इकाइयों की संख्या को घटा दीजिए।

iv) अब आपके पास केवल प्रेषिती के पास बचे हुए माल की अच्छी इकाइयों की लागत रह जाएगी। असामान्य हानि की लागत को घटाने के बाद बची हुई लागत में अच्छी इकाइयों की संख्या से भाग देकर इन इकाइयों की प्रति इकाई लागत ज्ञात कीजिए।

v) अनबिके माल का मूल्य ज्ञात करने के लिए अनबिके माल की इकाइयों की संख्या को ऊपर (iv) में ज्ञात की गई प्रति इकाई लागत से गुणा कीजिए।

उदाहरण 11 को पढ़िए और देखिए कि जब सामान्य तथा असामान्य दोनों प्रकार की हानियां एक साथ हों तो असामान्य हानि की लागत तथा अनबिके स्टॉक का मूल्य किस प्रकार ज्ञात किया जाता है।

उदाहरण 11

कोचीन की दीपक ऑयल मिल्स ने वाराणसी के मधु एंड कं. को 2,500 कि. ग्रा. कास्टर आयल प्रेषण पर भेजा। इसकी लागत प्रति कि. ग्रा. 18 रु. थी। प्रेषक ने मालभाड़ा, ढुलाई तथा मार्ग में बीमा के लिए 900 रु. का भुगतान किया। मार्ग में दुर्घटनाग्रस्त होकर 250 कि. ग्रा. तेल नष्ट हो गया जिसके लिए बीमा कंपनी ने सीधे प्रेषक को 2,200 रु. देकर दावे के हिसाब को चुकता किया।

मधु एंड कम्पनी ने इस प्रेषण को 10 अप्रैल को प्राप्त किया तथा दीपक ऑयल मिल्स द्वारा उनके नाम लिखे गए 2 मास के लिए 5,000 रु. के बिल को स्वीकार किया। 30 जून, 2018 को मधु एंड कं. ने सूचित किया कि 25 रु. प्रति कि. ग्रा. की दर से 1,750 कि. ग्रा. तेल बिक गया। प्रेषिती ने गोदाम के किराए, विज्ञापन तथा सेल्समैनों के वेतन पर 1,850 रु. खर्च किया। मधु एंड कं. ने 3% कमीशन तथा 2% आश्वासी कमीशन लिया। इस कंपनी

ने यह भी सूचित किया कि लीकेज के कारण 20 कि. ग्रा. तेल नष्ट हो गया। प्रेषक की पुस्तकों में आवश्यक लेजर खाते बनाइए।

Books of Deepak Oil Mills

Consignment Account

Dr. **Cr.**

Particulars	Amount	Particulars	Amount
	Rs.		Rs.
To Goods Sent on Consignment A/c (2,500 kg)	45,000	By Madhu & Co. (Sale proceeds of 1,750 kg)	43,750
To Bank A/c (Consignor's expenses)	900	By Abnormal Loss A/c (250 kg)	4,590
To Madhu & Co. (Consignee's expenses)	1,850	By Consignment Stock A/c	8,892
To Madhu & Co.			
Commission 3% = 1,313			
Del credre 2% = 875	2,188		
To Profit & Loss A/c (Balance)	7,294		
	57,232		57,232

Abnormal Loss Account

	Rs.		Rs.
To Consignment A/c (Sales)	4,590	By Bank A/c (amount from Insurance Co.)	2,200
		By Profit and Loss A/c (Balance)	2,390
	4,590		4,590

Madhu & Co. Account

	Rs.		Rs.
To Consignment A/c	43,750	By Consignment A/c (Expenses)	1,850
		By Consignment A/c (Commission)	2,188
		By Bank A/c (Advance)	5,000
		By Balance	34,712
	43,750		43,750

Goods Sent on Consignment Account

	Rs.		Rs.
To Trading A/c	45,000	By Consignee A/c	45,000

1. असामान्य हानि

असामान्य हानि की इकाइयों की संख्या × प्रति इकाई लागत मूल्य +

$$\left(\text{हानि से पहले के अनावर्ती व्यय} \times \frac{\text{असामान्य हानि की इकाइयां}}{\text{कुल इकाइयां}}\right)$$

$$= (250 \times 18) + (900 \times \frac{250}{2,500}) = 4,500 + 90 = \text{Rs.}4,590$$

2. अंतिम स्टॉक का मूल्यांकन

	इकाइयों की संख्या	लागत
		रु.
तेल की कुल मात्रा और लागत	2,500	45,000
अनावर्ती व्यय जोड़िए	–	900
योग	2,500	45,900
असामान्य हानि को घटाइये	250	4,590
	2,250	41,310
सामान्य हानि को घटाइये	20	–
दोषरहित इकाइयाँ तथा उनकी लागत	2,230	41,310

बिके हुए माल की इकाइयाँ 1,750 हैं।

अतः अनबिके माल की इकाइयाँ (2,230 – 1,750) = 480

अब अंतिम स्टॉक (480 इकाइयों) का मूल्य इस प्रकार निकाला जाएगा –

$$= \quad 41,310 \times \frac{480}{2,230}$$

$$= \quad 8,892 \text{ रू0}$$

बोध प्रश्न ड़

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

   i) हानियां या तो उत्पाद की स्वाभाविक प्रकृति के कारण होती हैं या ..... के क्रियाशील होने के कारण।

   ii) वाष्पीकरण से हुई भार की हानि ..... हानि होती है।

   iii) सामान्य हानि .....के मूल्यांकन को प्रभावित करती है।

   iv) असामान्य हानि को प्रेषण खाते में ..... किया जाता है।

v) बीमे के दावे को असामान्य हानि के खाते में ..... किया जाता है।

vi) हानि की उस रकम को भी बीमा कंपनी द्वारा स्वीकार नहीं किया जाता..... ..... खाते में अन्तरित किया जाता है।

2. आप असामान्य हानि का लेखा किस प्रकार करेंगे यदि

i) हानि का पूर्ण बीमा करवाया हुआ हो .....

ii) हानि का बीमा न करवाया गया हो .....

iii) हानि का आंशिक बीमा करवाया गया हो .....

15.7 सारांश

प्रेषण एक ऐसी व्यवस्था है जिसके अंतर्गत विनिर्माता अथवा व्यापारी अपने एजेंटों के पास फुटकर व्यापारियों को अथवा उपभोक्ताओं को बेचने के लिए माल भेजता है। एजेंट विनिर्माता अथवा व्यापारी की ओर से माल का विक्रय करते हैं। माल भेजने वाला व्यक्ति प्रेषक कहलाता है तथा जिस व्यक्ति को माल भेजा जाता है वह प्रेषिती कहलाता है। प्रेषक तथा प्रेषिती के संबंध प्रधान तथा एजेंट के संबंधों जैसे होते हैं।

प्रेषिती को माल भेजते समय प्रेषक एक कच्चा बीजक भेजता है जिसमें प्रेषित माल के संबंध में पूर्ण जानकारी दी हुई होती है। माल का विक्रय हो जाने पर प्रेषिती एक विक्रय-विवरण तैयार करता है जिसमें विक्रय की गई वस्तुओं की संख्या के बारे में, उस मूल्य के बार में जिस पर उनका विक्रय हुआ है तथा प्रेषिती को देय कमीशन एवं व्ययों की रकम के बारे में पूर्ण जानकारी दी हुई होती है।

प्रेषिती द्वारा प्रेषक को प्रदान की गई सेवाओं के लिए कमीशन प्राप्त करने का अधिकार होता है। कमीशन दो प्रकार का हो सकता है – साधारण और विशेष।

प्रत्येक प्रेषण पर लाभ अथवा हानि को ज्ञात करने के लिए तथा प्रेषिती से प्राप्त होने वाली बकाया रकम को जानने के लिए प्रेषक आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां करने के पश्चात् अपने लेजर में कई खाते बनाता है जैसे – प्रेषण खाता, प्रेषण पर भेजे गए माल का खाता तथा प्रेषिती का व्यक्तिगत खाता, आदि। दूसरी तरफ प्रेषिती अपनी पुस्तकों में मुख्य रूप से दो खाते बनाता है – कमीशन खाता तथा प्रेषक का व्यक्तिगत खाता। इससे उसे प्रेषक को देय रकम ज्ञात करने में तथा स्वयं को कमीशन से हुई आय ज्ञात करने में सहायता मिलती है।

कभी-कभी प्रेषिती उसके पास भेजे गए समस्त माल को नहीं बेच पाता। उसके पास कुछ अनबिका माल रह जाता है, जिसकी लागत को प्रेषण पर हुए लाभ को ज्ञात करने से पहले प्रेषण खाते में क्रेडिट पक्ष की ओर दिखाया जाना चाहिए। अनबिके स्टॉक की लागत में अनावर्ती व्ययों की आनुपातिक रकम को शामिल किया जाएगा।

जब प्रेषण पर माल भेजा जाता है तो संभव है कि यातायात में कुछ माल की हानि हो जाए अथवा प्रेषिती के गोदाम में कुछ माल नष्ट हो जाए। ऐसी हानियां या तो माल की स्वाभाविक प्रकृति के कारण हो सकती हैं अथवा किसी दुर्घटना के कारण। पहले प्रकार की हानि को सामान्य हानि कहते हैं तथा दूसरे प्रकार की हानि को असामान्य हानि कहा जाता है।

सामान्य हानि को लेखा पुस्तकों में कहीं भी नहीं दिखाया जाता। यह केवल प्रेषित माल की प्रति इकाई लागत में वृद्धि करती है और इसलिए अंतिम स्टॉक के मूल्यांकन को तथा

लाभ को प्रभावित करती है। लेकिन प्रेषक की पुस्तकों में असामान्य हानि का लेखा विशेष प्रकार से किया जाता है। असामान्य हानि की लागत उसी प्रकार ज्ञात की जाती है जैसे अनबिके स्टॉक की लागत ज्ञात की जाती है तथा इसे प्रेषण खाते में क्रेडिट किया जाता है। लाभ-हानि खाते में अंतरित करने से पहले असामान्य हानि में से बीमा कंपनी से प्राप्त की गई रकम को घटाया जाना चाहिए।

15.8 शब्दावली

विक्रय विवरण (Account Sales) : प्रेषिती द्वारा प्रेषक को प्रस्तुत किया गया एक विवरण जिसमें विक्रय से प्राप्त रकम के बारे में, विभिन्न व्ययों के बारे में तथा प्रेषिती को प्राप्य कमीशन के बारे में जानकारी दी जाती है।

प्रेषिती (Consignee) : वह व्यक्ति जिसे प्रेषण के आधार पर माल भेजा जाता है।

प्रेषण (Consignment) : निर्माता अथवा व्यापारी द्वारा अपने एजेंटों को अपनी ओर से तथा अपने स्वयं की जोखिम पर विक्रय के लिए भेजा गया माल।

प्रेषक (Consignor) : वह व्यक्ति जो प्रेषण के आधार पर अपने एजेंटों को माल भेजता है।

आश्वासी कमीशन (Del Credere Commission) : प्रेषिती द्वारा किए गए उधार विक्रय से उत्पन्न होने वाले अशोध्य ऋणों की जोखिम का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेने के लिए प्रेषिती को प्रेषक द्वारा दिया जाने वाला कमीशन।

अतिरिक्त कमीशन (Over-riding) : यह साधारण कमीशन के अलावा वह कमीशन होता है जो प्रेषिती को उसके द्वारा की गई अतिरिक्त सेवाओं के लिए अथवा उसके द्वारा विक्रय किए गए माल का अधिक मूल्य प्राप्त करने के लिए दिया जाता है।

कच्चा (सूचनार्थ) बीजक (Proforma Invoice) : प्रेषक द्वारा तैयार किया गया तथा प्रेषिती को भेजा गया विवरण जिसमें प्रेषित माल के बारे में जानकारी दी हुई होती है।

सामान्य हानि (Normal Loss) : वाष्पीकरण, रिसन, बड़े आकार के माल को छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ने आदि के कारण सामान्य व्यावसायिक क्रिया में हुई हानि।

असामान्य हानि (Abnormal Loss) : तूफान, आग, दुर्घटना, चोरी आदि कारणों से हुई हानि।

15.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

आर. एल. गुप्ता एवं वी. के. गुप्ता : एडवांस्ड एकाउन्टेंसी (2018), सुल्तान चंद एंड संस, नई दिल्ली

सी. एल. चतुर्वेदी : एडवांस्ड एकाउन्टेंसी (2018), श्री महावीर बुक डिपो, दिल्ली

विलियम पिकिल्स : एकाउन्टेंसी (2012) ई. एल. बी. एस. एवं पिटमैन, लंदन

एम. सी. शुक्ला एवं टी. एस. ग्रेवाल (2018), एडवांस्ड एकाउन्टेंसी, एस. चांद एंड कं, नई दिल्ली

15.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

क 1. i) ब ii) अ iii) ब iv) ब

2. i) गलत ii) सही iii) सही iv) गलत v) सही

ख 3. i) भूल चूक लेनी देनी (Errors and Ommission Excepted)

ii) आश्वासी कमीशन iii) आवर्ती iv) जमानत v) अनावर्ती

ग 1. i) डेबिट ii) प्रेषण पर भेजे गए माल के

iii) प्रेषक iv) व्यापार एवं लाभ-हानि खाता

v) नहीं vi) आय-व्यय का

घ 1. अ) ii ब) iii स) ii द) i च) ii

ङ 1. i) बाहरी शक्तियों ii) सामान्य

iii) अंतिम स्टॉक iv) क्रेडिट

v) क्रेडिट vi) लाभ-हानि

15.11 स्वपरख प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न

1. "प्रेषण ठीक वैसा ही है जैसा कि विक्रय" व्याख्या कीजिए।
2. विक्रय-विवरण किसे कहते हैं ? आप इसे कैसे बनाते हैं ? बताइए कि यह प्रेषक के लिए किस प्रकार उपयोगी होता है?
3. निम्नलिखित में अंतर बताइए।

   क) अनावर्ती एवं आवर्ती व्यय

   ख) साधारण कमीशन एवं आश्वासी कमीशन

   ग) विक्रय-विवरण एवं बीजक
4. अनबिके स्टॉक के मूल्यांकन में जिन व्ययों को शामिल किया जाता है, उनकी सूची बनाइए।
5. सामान्य हानि तथा असामान्य हानि में क्या अंतर है? उदाहरण देकर समझाइए।
6. जब सामान्य हानि तथा असामान्य हानि दोनों एक साथ हों तो अंतिम स्टॉक के मूल्यांकन के लिए क्या प्रक्रिया अपनाई जाती है।

अभ्यास

1. X एंड कं. बम्बई ने Y एंड कं. बैंगलोर को 250 वेस्टन टी. वी. सेट प्रेषण पर भेजे। प्रत्येक सेट की लागत 7,500 रु. थी। Y एंड कं. ने इस प्रेषण को प्राप्त किया तथा टी. वी. सेटों को निम्नलिखित प्रकार से बेचा।

प्रति सेट 9,000 रु. की दर से 160 टी. वी. सेट नकद आधार पर और प्रति सेट 10,500 रु. की दर से 90 टी. वी. सेट उधार आधार पर प्रेषिती द्वारा बेचे गए। टी.वी. सेटों के संबंध में प्रेषक ने उसे 5% सामान्य कमीशन तथा 2½% आश्वासी कमीशन दिया। Y एंड कं. को मिलने वाले कुल कमीशन की गणना कीजिए।

(**उत्तर** : सामान्य कमीशन 1,19,250 रु.; आश्वासी कमीशन 59,625 रु.)

2. लखनऊ के हरीश एंड कं. ने अहमदाबाद के दिनेश इन्टरप्राइजेज को 1,25,000 रु. के मूल्य का माल प्रेषण पर भेजा। हरीश ने ढुलाई, बीमा और मालभाड़ा के लिए 1,800 रु. का भुगतान किया। दिनेश ने प्रेषण को प्राप्त किया तथा 50,000 रु. के एक बिल को स्वीकार किया। उसने मालभाड़ा के लिए 1,500 रु. ढुलाई और गोदाम के किराए के लिए 2,200 रु. और सेल्समैन के वेतन के रूप में 2,500 रु. का भुगतान किया। कुल विक्रय पर प्रेषिती को 7% कमीशन मिलता है। प्रेषिती ने कुल माल 1,68,000 रु. में बेच दिया। दिनेश द्वारा देय राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेज दी गई। विक्रय विवरण तैयार कीजिए।

(**उत्तर** : प्रेषिती से प्राप्य राशि 1,00,040 रु0)

3. 1 जनवरी, 2018 को हैदराबाद के गोपाल इन्टरप्राइजेज ने बम्बई के राकेश एंड कं. को 50 रेडियो सेट भेजा, जिनका प्रति सेट बीजक मूल्य 1,200 रु. था। इस प्रेषण के संबंध में उसने निम्नलिखित व्यय भी किया : गोदी देय (dock dues) 2,000 रु. सीमा शुल्क, 1,000 रु. और मालभाड़ा 2,300 रु0। राकेश एंड कं. ने 5 जनवरी, 2018 को 20,000 रु. बैंक ड्राफ्ट से भेज दिया। उसने 31 जनवरी, 2018 तक 1,500 रु. प्रति रेडियो सेट की दर से सभी सेटों को बेच दिया तथा गोदाम के किराए के रूप में उसे 2,500 रु. खर्च करना पड़ा। विक्रय पर 5% कमीशन मिलता है। प्रेषिती ने विक्रय विवरण भेजा तथा उसके साथ एक बैंक ड्राफ्ट शेष राशि के लिए भी संलग्न कर दिया।

प्रेषक और प्रेषिती की लेखा पुस्तकों में उपर्युक्त लेन-देनों की जर्नल प्रविष्टि कीजिए। आवश्यक लेजर खाते भी तैयार कीजिए तथा प्रेषण पर लाभ की गणना कीजिए।

(**उत्तर** : प्रेषण पर लाभ 3,450 रु., प्रेषिती से प्राप्त रकम 48,750 रु.)

4. बम्बई के कृष्णा ने जोधपुर के केजरीवाल को 2,50,000 रु. की लागत का माल प्रेषण पर भेजा। कृष्णा ने ढुलाई के लिए 1,500 रु. तथा मालभाड़ा और बीमा के लिए 5,250 रु. का भुगतान किया। केजरीवाल को सभी विक्रयों पर 5% कमीशन मिलता है। इसके अतिरिक्त इन्हें 2% आश्वासी कमीशन भी मिलता है। कृष्णा ने केजरीवाल पर तिथि के दो मास बाद देय 80,000 रु. का एक बिल लिखा जिसे केजरीवाल ने स्वीकार कर लिया। इस बिल को बैंक में 79,000 रु. में भुनाया गया। केजरीवाल से एक विक्रय-विवरण प्राप्त हुआ जिसमें लिखा गया था कि माल को 3,10,000 रु. में बेचा गया (1,60,000 रु. का उधार विक्रय और 1,50,000 रु. का नकद विक्रय) जबकि उसने निम्नलिखित व्यय किया : उतराई (unloading) 1,250 रु0, गोदाम का किराया 2,500 रु. और बीमा 500 रु0। विक्रय विवरण के साथ शेष राशि के लिए एक बैंक ड्राफ्ट भी संलग्न था। केजरीवाल एक ग्राहक से 2,500 रु. प्राप्त न कर सका, जिसे उधार माल बेचा गया था। प्रेषक और प्रेषिती की लेखा पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टि कीजिए और आवश्यक लेजर खाते तैयार कीजिए।

संकेत : i) छूट को प्रेषण खाते को डेबिट नहीं किया जाएगा।

ii) ऋण का वहन प्रेषिती को करना होगा और इसे उसके कमीशन खाते को डेबिट किया जाएगा।

iii) आश्वासी कमीशन की गणना कुल विक्रय पर की जाती है।

(**उत्तर** : प्रेषण पर लाभ 27,300 रु0, प्रेषिती से प्राप्य 2,04,050 रु0)

5. झांसी के कबीर ने कोचीन के मोज़ेज को 10 अप्रैल 2018 को 400 कुर्सियां प्रेषण पर भेजी। प्रत्येक कुर्सी की लागत 250 रु. थी। प्रेषक ने 12 अप्रैल 2018 को ढुलाई, मालभाड़ा आदि के लिए 2,000 रु. दिया तथा प्रेषिती के नाम प्रेषण पर अग्रिम राशि के लिए 3 मास का 60,000 रु. का बिल लिखा। बाद में इस बिल को बैंक से 5% कटौती पर भुनाया गया। प्रेषिती ने 1 जुलाई, 2018 को सभी माल बेच दिया तथा उसने एक विक्रय विवरण प्रस्तुत किया जिसमें दिखाया गया था कि माल को बेचने से 1,20,000 रु. मिले। उसने आगत मालभाड़ा पर 1,000 रु. खर्च किया तथा विक्रय व्यय एवं अन्य व्यय 550 रु. हुए। कुल विक्रय पर उसे 5% कमीशन मिलना था। प्रेषक तथा प्रेषिती की लेखा पुस्तकों में उपर्युक्त लेनदेनों का लेजर खाता दिखाइए।

(**उत्तर** : लाभ 10,450 रु.)

6. बैंगलौर के '**क**' ने अपने एजेन्ट '**ख**' के पास 100 बैग सीमेंट बेचने के लिए प्रेषण पर भेजे। सीमेंट के प्रत्येक बैग का लागत मूल्य 120 रु. था। तत्काल ही **क** न **ख** के नाम 5,000 रु. का 4 मास का बिल लिखा जिसे उसने बैंक से 6% प्रतिवर्ष की दर से भुनाया। **क** ने पैकिंग के लिए 800 रु. तथा ढुलाई के लिए 250 रु. का भुगतान किया। ख ने विक्रय व्यय के रूप में 300 रु. का वहन किया। प्रेषिती ने 5 बैग सीमेंट लौटा दिया। उसने प्रति बैग 130 रु. की दर से 20 बैग बेचे, प्रति बैग 140 रु. की दर से 50 बैग उधार बेचे तथा शेष माल को प्रति बैग 135 रु. की दर से अपने स्टॉक में ले लिया।

प्रेषिती को 3% कमीशन मिलता है तथा उधार विक्रय पर 2% आश्वासी कमीशन मिलता है। **ख** को अपने देनदारों से 500 रु. के अतिरिक्त सभी प्राप्य राशि मिल गई। दोनों ही पक्षों की पुस्तकों में आवश्यक लेजर खाते बनाइए।

(**उत्तर** : हानि 204 रु.)

7. दिल्ली के ग्रोवर इन्टरप्राइजेज ने पटना के खान इन्टरप्राइजेज को 100 साइकिलें भेजी। प्रत्येक साईकिल की लागत 640 रु. थी। ग्रोवर इन्टरप्राइजेज ने मालभाड़ा के लिए 1,500 रु. और मार्ग में बीमा के लिए 1,100 रु. का भुगतान किया। खान इन्टरप्राइजेज ने गाड़ी भाड़ा के लिए 650 रु. और गोदाम के किराए तथा विक्रय व्यय के लिए 2,000 रु. का भुगतान किया। अंत में 20 साइकिलें बिना बिके रह गई। शेष साइकिलों को बेचने से 800 रु. प्रति साईकिल प्राप्त हुआ। अनबिके स्टॉक के मूल्य की गणना कीजिए।

(**उत्तर** : अनबिके साइकिलों का मूल्य 13,450 रु.)

8. 1 जनवरी, 2018 को किरन ब्रदर्स ने अपने एजेंट कबीर एजेन्सी को 10,000 रु. की लागत का खेल का सामान प्रेषण पर भेजा। किरन ब्रदर्स ने मालभाड़ा के लिए 200 रु. तथा बीमा और अन्य व्यय के लिए 100 रु. का भुगतान किया। प्रेषिती ने अनावर्ती व्ययों के लिए 150 रु. का भुगतान करके 15 जनवरी, 2018 को सामान

को प्राप्त किया। उसने 20 फरवरी 2018 को विक्रय विवरण भेजा जिसमें दिखाया गया था कि स्टॉक के 20% को बेचने से 3,200 रु. मिला तथा 30% स्टॉक को 3,600 रु. में उधार बेचा गया।

एक ग्राहक जिसके पास 500 रु. देय था वह दिवालिया हो गया और उससे ऋण का 25% ही प्राप्त हो सका। प्रेषिती को विक्रय पर 5% कमीशन मिलता है। जर्नल प्रविष्टि कीजिए तथा लेजर खाता बनाइए।

(**उत्तर** : लाभ 860 रु0, स्टॉक 5,225 रु.)

9. श्री कंठ ने 50,000 रु. की लागत का 2,500 कि.ग्रा. कोकोनेट का तेल प्रेषण पर भेजा। इस संबंध में उसे 1,400 रु. खर्च करने पड़े। प्रेषिती ने माल उतरवाने और गाड़ी भाड़ा पर 2,000 रु. खर्च किया। 100 कि.ग्रा. तेल स्वाभाविक कारणों से नष्ट हो गया और 1,500 कि.ग्रा. तेल बेचा गया। अंत में स्टॉक में बचे हुए तेल की लागत की गणना कीजिए।

(**उत्तर** : स्टॉक की लागत 20,025 रु0)

10. लखनऊ के कपूर ने 1 अप्रैल, 2018 को बम्बई के जैन ट्रेडर्स को 200 बैग चावल प्रेषण पर भेजा। इनमें से प्रत्येक बैग की लागत 300 रु. थी। प्रेषक ने मालभाड़ा और बीमा के लिए 2,000 रु. का भुगतान किया। मार्ग में 30 बैग चावल नष्ट हो गया। 31 मई, 2018 को प्रेषिती को बीमा कंपनी से नष्ट हुए बैगों के लिए 2,000 रु. मिला। 31 मई, 2018 को प्रेषिती ने सूचित किया कि प्रति बैग 375 रु. की दर से 140 बैग बेचे गए। प्रेषिती को गोदाम के किराए एवं विक्रय व्यय के संबध में 2,000 रु. खर्च करना पड़ा। बिक्री से प्राप्त रकम का 10% प्रेषिती को कमीशन के रूप में मिलता है। यह मानते हुए कि जैन ट्रेडर्स ने 31 मई, 2018 को शेष रकम को बैंक ड्राफ्ट से भेज दिया, श्री कपूर की लेखा पुस्तकों में लेजर खाते बनाइए।

(**उत्तर** : लाभ 1,850 रु0; आकस्मिक हानि 9,300 रु0)

11. दिल्ली के दिनेश ने कलकत्ता के चन्दर को 200 सिलाई की मशीनें प्रेषण पर भेजी। इनमें से प्रत्येक मशीन की लागत 150 रु. थी। उसने बीमा के लिए 2,800 रु. का भुगतान किया तथा अग्रिम राशि के रूप में उसे चन्दर से 20,000 रु. मिले। मार्ग में 30 मशीनें क्षतिग्रस्त हो गई। चन्दर ने शेष माल को प्राप्त किया और उसने प्रेषण की उतराई के लिए 1,700 रु. दिया। उसने 270 रु. प्रति मशीन की दर से 50 मशीनें नकद बेची तथा 300 रु. प्रति मशीन की दर से 100 मशीनें उधार बेची। चन्दर अपने देनदारों से 2,000 रु. प्राप्त न कर सका। चन्दर को बीमा कंपनी से 1,500 रु. मिला। क्षतिग्रस्त मशीनों को वह 2,300 रु. में बेच सका।

चन्दर को 5% की दर से सामान्य कमीशन और 3% आश्वासी कमीशन प्राप्त करने का अधिकार है। हिसाब का निपटान करके शेष राशि को बैंक ड्राफ्ट से भेज दिया गया। दिनेश की लेखा पुस्तकों में आवश्यक लेजर खाता दिखाइए।

संकेत : i) क्षतिग्रस्त स्टॉक के विक्रय तथा बीमा कंपनी से प्राप्त राशि को असामान्य हानि खाते को क्रेडिट किया जाएगा तथा चन्दर के खाते को डेबिट किया जाएगा।

ii) क्षतिग्रस्त सामान को बेचने से मिलने वाली राशि के 5% की दर से

कमीशन को असामान्य हानि खाते को डेबिट तथा चन्दर के खाते को क्रेडिट किया जाएगा।

(**उत्तर** : असामान्य हानि 4,920 रु., अनबिके माल के स्टॉक का मूल्य 3,480 रु., लाभ 13,920 रु., चन्दर से प्राप्य शेष राशि 22,005 रु.)

12. फरीदाबाद के सोहन वनस्पति ने दिल्ली के कृष्णा डीलर्स को 16 रु. प्रति कि. ग्रा. की दर से 10,000 कि. ग्रा. तेल प्रेषण पर भेजा। प्रेषक ने ढुलाई के लिए 950 रु. , मालभाड़ा के लिए 250 रु. तथा मार्ग में बीमा के लिए 400 रु. का भुगतान किया। दुर्घटनाग्रस्त होकर 1,000 कि. ग्रा. तेल नष्ट हो गया जिसके हिसाब में बीमा कंपनी से 8,000 रु. मिला।

कृष्णा डीलर्स ने सूचित किया कि 8,000 कि.ग्रा. तेल 20 रु. प्रति कि.ग्रा. की दर से बेचा गया। उसने सेल्समैन के वेतन पर 500 रु. खर्च किया तथा 200 रु. गोदाम का किराया दिया। प्रेषिती को विक्रय पर 5% की दर से कमीशन मिलता है। कृष्णा डीलर्स ने यह भी सूचित किया कि रिसाव (leakage) के कारण 40 कि.ग्रा. तेल कम हो गया। दोनों पक्षों की लेखा पुस्तकों में आवश्यक लेजर खाते बनाइए।

(**उत्तर** : लाभ 2,443 रु., असामान्य हानि 16,160 रु., अंतिम स्टॉक 15,583 रु.)

नोटः ये प्रश्न/अभ्यास इस इकाई को बेहतर ढंग से समझने में आपकी सहायता करेंगे। इनके उत्तर लिखने का प्रयास कीजिए। अपने उत्तर विश्वविद्यालय को न भेजें। ये केवल आपके अपने अभ्यास के लिए हैं।

इकाई 16 प्रेषण लेखे-II

इकाई की रूपरेखा

16.0 उद्देश्य

16.1 प्रस्तावना

16.2 बीजक मूल्य की संकल्पना

16.3 लागत मूल्य एवं बीजक मूल्य की गणना

16.4 भार

16.4.1 भार किसे कहते हैं ?

16.4.2 वे मदें जिनमें भार सम्मिलित होता है

16.4.3 भार का समायोजन

16.5 बीजक मूल्य पर भेजे गए माल का लेखा

16.6 सारांश

16.7 शब्दावली

16.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

16.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

16.10 स्वपरख प्रश्न/अभ्यास

16.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग्य हो सकेंगे कि :

- बीजक मूल्य का अर्थ स्पष्ट कर सकें तथा प्रेषण पर भेजे गए माल को बीजक मूल्य पर भेजने के कारणों का वर्णन कर सकें;
- विभिन्न स्थितियों में लागत मूल्य तथा बीजक मूल्य की गणना कर सकें;
- भार का अर्थ स्पष्ट कर सकें तथा प्रेषण खाते में इसके समायोजन के लिए आवश्यक प्रविष्टियां कर सकें; और
- बीजक मूल्य के आधार पर प्रेषक तथा प्रेषिती की पुस्तकें तैयार कर सकें।

16.1 प्रस्तावना

इकाई 15 में आप प्रेषक और प्रेषिती दोनों ही से संबंधित लेन-देनों का लेखा करने के बारे में जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। आप जानते हैं कि प्रेषण पर भेजे गए माल का लेखा प्रेषण खाते में लागत मूल्य पर किया जाता है। कई बार प्रेषक प्रेषिती को माल की सही लागत नहीं बताना चाहता और इसीलिए माल का बीजक एक ऐसे मूल्य पर बनाता है जो लागत मूल्य से अधिक होता है। यह मूल्य बीजक मूल्य (invoice price) कहलाता है। और बीजक मूल्य तथा लागत मूल्य का अंतर भार (loading) कहलाता है। ऐसी स्थिति में प्रेषण पर भेजे गए माल की प्रविष्टि का लेखा भी बीजक मूल्य पर किया जाएगा जिससे प्रेषण

पर हुए लाभ को ज्ञात करते समय भार के लिए समायोजन की आवश्यकता होगी। इस इकाई में आप यह जानकारी प्राप्त करेंगे कि जब माल बीजक मूल्य पर भेजा जाता है तो प्रेषण खाता किस प्रकार बनाया जाता है तथा प्रेषण पर हुए लाभ को ज्ञात करते समय आव यक समायोजन किस प्रकार किए जाते हैं। आप इस बारे में भी जानकारी प्राप्त करेंगे कि जब भार लागत मूल्य अथवा बीजक मूल्य पर प्रतिशत के रूप में दिया जाता है तो बीजक मूल्य किस प्रकार ज्ञात किया जाता है।

16.2 बीजक मूल्य की संकल्पना (Concept of Invoice Price)

इकाई 15 में आप पढ़ चुके हैं कि जब प्रेषक प्रेषिती को प्रेषण पर माल भेजता है तो वह अपनी पुस्तकों में इसका लेखा लागत मूल्य पर करता है तथा कच्चे (सूचनार्थ) बीजक में भी इसी मूल्य को दिखाया जाता है। लेकिन कई बार प्रेषक यह नहीं चाहता कि प्रेषिती को उसे भेजे गए माल की वास्तविक लागत का पता चले। ऐसी स्थिति में वह लागत मूल्य के स्थान पर किसी अन्य मूल्य पर माल भेजेगा। ऐसा मूल्य साधारणतया लागत मूल्य से अधिक होता है। यह मूल्य बीजक मूल्य कहलाता है।

प्रेषक बीजक मूल्य पर माल इसलिए भेजता है ताकि प्रेषिती को वास्तविक लागत का पता न चल सके। इसके अतिरिक्त बीजक मूल्य पर माल भेजने के कुछ अन्य कारण भी हो सकते हैं। ये कारण हैं –

i) प्रेषिती को प्रेषण पर हुए लाभ का पता नहीं चल सकेगा जिससे वह अधिक कमीशन की मांग नहीं कर सकेगा।

ii) यदि प्रेषिती को माल की वास्तविक लागत का पता हो तो वह कुछ गलत तरीके अपना सकता है जैसे खुद के लिए कम मूल्य पर माल खरीदना तथा बाजार में उसे अधिक मूल्य पर बेचना।

iii) इससे प्रेषिती को उस न्यूनतम मूल्य का कुछ ज्ञान हो सकेगा जिस पर उसे माल बेचना है।

आपको ध्यान रखना चाहिए कि बीजक मूल्य विक्रय मूल्य नहीं होता। बीजक मूल्य वह मूल्य होता है जिस पर प्रेषक प्रेषिती को माल भेजता है जबकि विक्रय मूल्य वह मूल्य होता है जिस पर प्रेषिती ग्राहकों को माल बेचता है।

लागत मूल्य, बीजक मूल्य तथा विक्रय मूल्य इन तीनों मूल्यों में अंतर समझने के लिए आइए हम एक उदाहरण लेते हैं। मान लीजिए कि गोपाल अपने एजेंट अशोक को 16,000 रु. की लागत का माल 18,000 रु. के बीजक मूल्य पर भेजता है। अशोक उस माल को 20,000 रु. में बेचता है। इस उदाहरण में माल का लागत मूल्य (CP) 15,000 रु. है, बीजक मूल्य (IP) 18,000 रु. है तथा विक्रय मूल्य (SP) 20,000 रु. है।

आपने देखा होगा कि बीजक मूल्य लागत मूल्य से अधिक होता है जबकि विक्रय मूल्य लागत मूल्य तथा बीजक मूल्य दोनों से अधिक होता है तथा बीजक मूल्य और विक्रय मूल्य दोनों समान नहीं होते। लेकिन यदि प्रेषक प्रेषिती को बीजक मूल्य पर ही माल बेचने का निर्देश देता है तो विक्रय मूल्य तथा बीजक मूल्य दोनों समान होंगे।

16.3 लागत मूल्य एवं बीजक मूल्य की गणना (Calculation of Cost Price and Invoice Price)

आप बीजक मूल्य, लागत मूल्य तथा लाभ के बीच आपसी संबंध के बारे में जानते हैं, जिसे एक समीकरण के रूप में निम्नलिखित प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है।

बीजक मूल्य = लागत मूल्य + लाभ

उपरोक्त समीकरण की सहायता से आप अज्ञात संख्या का पता लगा सकते हैं, अर्थात् यदि दो संख्याएं दी हुई हों तो तीसरी संख्या का पता लगाया जा सकता है। उदाहरण के लिए यदि लागत मूल्य 150 रु. है तथा लाभ 50 रु. है तो बीजक मूल्य होगा।

बीजक मूल्य = लागत मूल्य + लाभ

= 150 + 50

= 200 रु.

इसी प्रकार यदि बीजक मूल्य 200 रु. है तथा लाभ 50 रु. है तो लागत मूल्य होगा

बीजक मूल्य = लागत मूल्य + लाभ

200 = लागत मूल्य + 50

लागत मूल्य = 200 − 50

= 150 रु.

उपरोक्त उदाहरणों में लाभ संपूर्ण संख्या के रूप में दिया गया है, लेकिन कई बार लाभ लागत मूल्य अथवा बीजक मूल्य पर प्रतिशत के रूप में दे दिया जाता है। यदि लाभ उस मूल्य के प्रतिशत के रूप में दिया हुआ है जिसकी रकम दी हुई है तो आपको अधिक कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ेगा। लेकिन यदि लाभ उस मूल्य के प्रतिशत के रूप में दिया हुआ है जिसकी रकम नहीं दी हुई है तो आपको लाभ ज्ञात करने में तथा अज्ञात मूल्य ज्ञात करने में कठिनाई हो सकती है। आइए अब हम उन विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन करते हैं जब लाभ प्रतिशत के रूप में दिया हुआ होता है और हमें अज्ञात मूल्य निकालना होता है। ये अवस्थाएं निम्नलिखित हैं।

1. लागत मूल्य दिया हुआ है और लाभ लागत मूल्य पर प्रतिशत के रूप में दिया हुआ है, आपको बीजक मूल्य ज्ञात करना है।
2. लागत मूल्य दिया हुआ है और लाभ बीजक मूल्य पर प्रतिशत के रूप में दिया हुआ है, आपको बीजक मूल्य ज्ञात करना है।
3. बीजक मूल्य दिया हुआ है और लाभ बीजक मूल्य पर प्रतिशत के रूप में दिया हुआ है, आपको लागत मूल्य ज्ञात करना है।
4. बीजक मूल्य दिया हुआ है और लाभ लागत मूल्य पर प्रतिशत के रूप में दिया हुआ है, आपको लागत मूल्य ज्ञात करना है।

आइए अब हम एक एक करके इन सबका अध्ययन करते हैं और उदाहरणों की सहायता से अज्ञात रकम ज्ञात करते हैं।

1. लागत मूल्य दिया हो तथा लाभ लागत मूल्य पर प्रतिशत के रूप में दिया हो

मान लीजिए कि किसी उत्पाद का लागत मूल्य 200 रु. है जिसका बीजक लागत मूल्य पर 20 प्रतिशत लाभ जोड़कर बनाया जाता है। बीजक मूल्य निम्न प्रकार से ज्ञात किया जाता है।

बीजक मूल्य = लागत मूल्य + लाभ

बीजक मूल्य = $200 + \frac{20}{100} \times 200$

बीजक मूल्य = 200 + 40

बीजक मूल्य = 240 रु.

2. लागत मूल्य दिया हो तथा लाभ बीजक मूल्य पर प्रतिशत के रूप में दिया हो :

मान लीजिए कि किसी उत्पाद का लागत मूल्य 200 रु. है, जिसका बीजक लागत मूल्य में बीजक मूल्य का 20 प्रतिशत लाभ के रूप में जोड़ कर बनाया जाता है। बीजक मूल्य निम्न प्रकार से ज्ञात किया जाएगा। मान लें कि बीजक मूल्य X है।

बीजक मूल्य = लागत मूल्य + लाभ

$$x = 200 + \left(\frac{20}{100} \times x\right)$$

$$x = 200 + \frac{20}{100}x$$

$$x - \frac{20}{100}x = 200$$

$$\frac{100X - 20X}{100} = 200$$

$$\frac{80}{100}x = 200$$

$$x = \frac{200 \times 100}{80} = 250 \text{ रू0}$$

इस प्रकार बीजक 250 रु. है तथा लाभ 50 रु. है। अब आप इसका सत्यापन भी कर सकते हैं कि लाभ बीजक के 20 प्रतिशत के बराबर है।

लाभ = बीजक मूल्य का

$= \frac{20}{100} \times 250$

= 50 रू0

3. बीजक मूल्य दिया हो और लाभ बीजक मूल्य पर प्रतिशत के रूप में दिया हो

मान लीजिए किसी उत्पाद का बीजक मूल्य 500 रु. है तथा लाभ बीजक मूल्य का 25 प्रतिशत है। अज्ञात संख्या अर्थात् लागत मूल्य निम्नलिखित प्रकार से ज्ञात किया जाएगा।

बीजक मूल्य = लागत मूल्य + लाभ

$500 = \text{लागत मूल्य} + \frac{25}{100} \times 500$

$500 = \text{लागत मूल्य} + 125$

लागत मूल्य = 500–125

लागत मूल्य = 375 रू0

4. बीजक मूल्य दिया हो और लाभ लागत मूल्य पर प्रतिशत के रूप में दिया हो

मान लीजिए कि बीजक मूल्य 600 रु. है तथा लाभ लागत मूल्य का 20 प्रतिशत है। लागत मूल्य निम्नलिखित प्रकार से ज्ञात किया जाएगा।

मान लीजिए लागत मूल्य 'x' है।

बीजक मूल्य = लागत मूल्य + लाभ

$\frac{20}{100}$ x रू0

$600 = x + \frac{20}{100} x$

$600 = \frac{100x + 20x}{100}$

$600 =$

$x = \frac{600 \times 100}{120}$

$=$

इस प्रकार लागत मूल्य 500 रु. है तथा लाभ 100 रु. है। अब आप इसका सत्यापन भी कर सकते हैं कि लाभ लागत मूल्य के 20 प्रतिशत के बराबर है।

लाभ $= \frac{20}{100} \times$ लागत मूल्य

$= \frac{20}{100} \times 500$

$=$ 100 रू0

16.4 भार (Loading)

16.4.1 भार किसे कहते हैं ?

आप जानते हैं कि बीजक मूल्य लागत मूल्य में लाभ की कुछ रकम जोड़कर ज्ञात किया जाता है। लाभ की वह रकम जो बीजक मूल्य ज्ञात करने के लिए लागत में जोड़ी जाती है भार कहलाती है। दूसरे शब्दों में बीजक मूल्य तथा लागत मूल्य का अंतर भार कहलाता है।

भार = बीजक मूल्य – लागत मूल्य

उदाहरण के लिए यदि बीजक मूल्य 10,000 रु. है तथा लागत मूल्य 7,500 रु. है तो भार की रकम होगी।

भार = बीजक मूल्य – लागत मूल्य या

इकाइयों की संख्या × (प्रति इकाई बीजक मूल्य – प्रति इकाई लागत मूल्य)

= 10,000 – 7,500

= 2,500 रु.

यदि बीजक मूल्य अथवा लागत मूल्य दिया हो और लाभ (भार) बीजक मूल्य अथवा लागत मूल्य पर प्रतिशत के रूप में दिया हो तो भार की रकम ठीक उसी प्रकार ज्ञात की जाएगी जिस प्रकार उपभाग 16.3 में दिए गए उदाहरणों में हमने बीजक मूल्य अथवा लागत मूल्य ज्ञात किया था।

16.4.2 वे मदें जिनमें भार सम्मिलित होता है

साधरणतया भार उन सभी मदों में सम्मिलित रहता है जिनका लेखा प्रेषण खाते में बीजक मूल्य पर किया जाता है। ये मदें निम्न हैं

i) प्रारंभिक स्टॉक

ii) प्रेषण पर भेजा गया माल

iii) प्रेषिती द्वारा लौटाया गया माल

iv) अंतिम स्टॉक

आपको उपरोक्त सभी मदों के संबंध में भार की गणना करनी होगी तथा प्रेषक की पुस्तकों में आवश्यक समायोजन करने होंगे।

16.4.3 भार का समायोजन

आप जानते हैं कि विक्रय मूल्य तथा लागत मूल्य का अंतर भी लाभ होता है। अबसे पहले जो प्रेषण खाते बनाए गए थे उनमें प्रेषण पर भेजे गए माल को तथा अन्य संबंधित मदों को लागत मूल्य पर दिखाया गया था। अतः लाभ की गणना करने में कोई कठिनाई नहीं थी। लेकिन जब प्रेषण पर भेजे गए माल को तथा अन्य संबंधित मदों को प्रेषण खाते में बीजक मूल्य पर दिखाया जाता है तो बीजक मूल्य को लागत मूल्य के स्तर पर लाने के लिए भार का समायोजन करना आवश्यक हो जाता है। यदि इस प्रकार का समायोजन न किया जाए तो लाभ की सही रकम का पता नहीं चल पाएगा। यदि नहीं, इसकी भी

संभावना बनी रहती है कि प्रेषण खाता हानि को प्रदर्शित करे क्योंकि विक्रय मूल्य तथा बीजक मूल्य का अंतर साधारणतया बहुत कम होता है जो सभी व्ययों की पूर्ति नहीं कर सकता।

चित्र 16.1 में वास्तविक लाभ तथा उस लाभ के बीच के अंतर पर ध्यान दीजिए जब कोई समायोजन नहीं किया जाता। इस प्रकार ज्ञात किया गया लाभ विक्रय मूल्य तथा बीजक मूल्य के अंतर के बराबर होगा।

चित्र 16.1

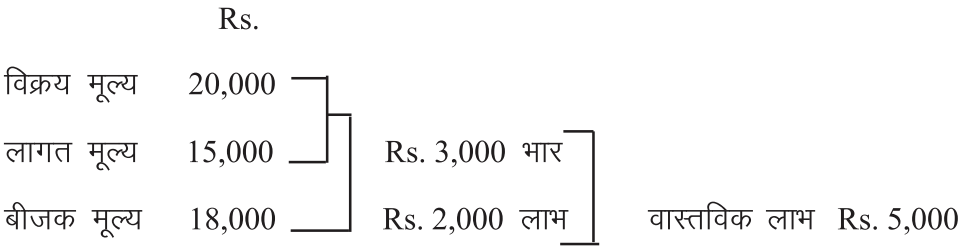

बिना समायोजन के

चित्र 16.1 से स्पष्ट है कि यदि समायोजन नहीं किया जाता तो 2,000 रु. का लाभ होगा जबकि वास्तविक लाभ 5,000 रु. है। अतः किसी भी प्रेषण पर हुए वास्तविक लाभ को ज्ञात करने के लिए उन सभी मदों को लागत मूल्य के स्तर पर लाया जाता है जिन्हें बीजक मूल्य पर दिखाया गया था। ऐसा प्रत्येक मद पर भार की रकम का समायोजन करके किया जाता है। आइए अब हम एक-एक करके भार से संबंधित मदों को लेते हैं और देखते हैं कि आवश्यक समायोजन किस प्रकार किए जाते हैं।

1. **प्रारंभिक स्टॉक** : प्रारंभिक स्टॉक को हमेशा प्रेषण खाते में डेबिट पक्ष की ओर दिखाया जाता है। यदि स्टॉक को बीजक मूल्य पर दिखाया गया हो तो बीजक मूल्य तथा लागत मूल्य के अंतर को निम्न प्रविष्टि द्वारा प्रेषण खाते के क्रेडिट पक्ष की ओर दिखाया जाएगा।

   Stock Reserve A/c Dr.

   To Consignment A/c

   (Being unloading on opening stock)

2. **प्रेषण पर भेजा गया मालः** प्रेषण पर भेजे गए माल को प्रेषण खाते में डेबिट पक्ष की ओर दिखाया जाता है। बीजक मूल्य के प्रभाव को समाप्त करने के लिए प्रेषण पर भेजे गए माल के बीजक मूल्य तथा लागत मूल्य के अंतर को प्रेषण खाते में क्रेडिट पक्ष की ओर दिखाया जाता है। इसके लिए निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है।

   Goods Sent on Consignment A/c Dr.
   To Consignment A/c
   (Being unloading on goods sent on consignment)

3. **प्रेषिती द्वारा लौटाया गया माल** : चूंकि लौटाए गए माल को प्रेषण खाते में क्रेडिट पक्ष की ओर दिखाया जाता है, इसलिए भार के लिए समायोजन निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि की सहायता से प्रेषण खाते के डेबिट पक्ष की ओर किया जाएगा।

Consignment A/c Dr.
To Goods Sent on Consignment A/c
(Being loading on goods returned)

4. **अंतिम स्टॉक** : चूंकि अंतिम स्टॉक को प्रेषण खाते में क्रेडिट पक्ष की ओर दिखाया जाता है, अतः भार के लिए समायोजन निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि की सहायता से डेबिट पक्ष की ओर किया जाएगा।

Consignment A/c Dr.
To Stock Reserve A/c
(Being unloading on closing stock)

इस प्रकार आपने ध्यान दिया होगा कि प्रेषण खाते में भार के लिए समायोजन प्रविष्टि मूल प्रविष्टि के विपरीत पक्ष की ओर की जाती है। उदाहरण के लिए अंतिम स्टॉक को प्रेषण खाते में क्रेडिट पक्ष की ओर दिखाया जाता है जबकि इसका समायोजन प्रेषण खाते में डेबिट पक्ष की ओर किया जाता है। इस प्रकार प्रेषण खाते में भार के प्रभाव को समाप्त कर दिया जाता है और बीजक मूल्य को लागत मूल्य के स्तर पर लाया जाता है। आपको याद रखना चाहिए कि भार के लिए समायोजन केवल प्रेषक की पुस्तकों में ही किया जाता है। प्रेषिती भार से संबंधित मदों की कोई प्रविष्टि नहीं करता। इसलिए उसकी पुस्तकों में समायोजन की कोई आवश्यकता नहीं होती।

बोध प्रश्न क

1. बताइए कि निम्नलिखित कथन **सही** हैं अथवा **गलत**।

   i) प्रेषक माल का प्रेषण हमेशा बीजक मूल्य पर करता है। .....

   ii) यदि बीजक मूल्य पर माल भेजा जाए और भार के लिए कोई समायोजन न किया जाए तो प्रेषण खाता कम लाभ को प्रदर्शित करेगा। .....

   iii) बीजक मूल्य हमेशा विक्रय मूल्य के बराबर होता है। .....

   iv) प्रेषक पर अर्जित किए गए लाभ को छिपाने के लिए प्रेषक माल का प्रेषण बीजक मूल्य पर करता है। .....

   v) अंतिम स्टॉक पर भार के प्रभाव को समाप्त करने के लिए स्टॉक कोष खाते (Stock Reserve A/c) को डेबिट किया जाता है तथा अंतिम स्टॉक खाते (Closing Stock A/c) को क्रेडिट किया जाता है। .....

   vi) भार के समायोजन के लिए सभी प्रविष्टियां प्रेषिती की पुस्तकों में की जाती हैं। .....

2. भार किसे कहते हैं ?

.....

.....

.....

3. उन सभी मदों के नाम बताइए जिनमें भार सम्मिलित होता है।

.....

.....

.....

4. निम्नलिखित प्रश्नों को हल कीजिए।

i) एक पंखे का लागत मूल्य 500 रु. है तथा भार 100 रु. है। पंखे का बीजक मूल्य कितना होगा ?

ii) एक घड़ी का लागत मूल्य 150 रु. है। इसका प्रेषण लागत से 33.33% प्रतिशत अधिक मूल्य पर किया जाता है। बीजक मूल्य ज्ञात कीजिए।

iii) एक साइकिल का लागत मूल्य 500 रु. है। इसका बीजक, बीजक मूल्य पर 20 प्रतिशत लाभ के हिसाब से बनाया जाता है। बीजक मूल्य ज्ञात कीजिए।

iv) एक पंखा 250 रु. के बीजक मूल्य पर भेजा जाता है। बीजक मूल्य, लागत मूल्य तथा बीजक पर 10 प्रतिशत लाभ के योग के बराबर है। इसका लागत मूल्य कितना होगा ?

v) एक कुर्सी का बीजक मूल्य 300 रु. है जो लागत मूल्य से 20 प्रतिशत अधिक है। इसका लागत मूल्य ज्ञात कीजिए।

5. निम्नलिखित स्थितियों में भार ज्ञात कीजिए।

i) 1,800 की लागत के माल का बीजक 2,200 रु. पर बनाया गया।

ii) 600 रु. की लागत के माल का बीजक लागत से 20 प्रतिशत अधिक मूल्य पर बनाया गया।

iii) 600 रु. की लागत के माल का बीजक, बीजक मूल्य पर 20 प्रतिशत लाभ के हिसाब से बनाया गया।

iv) बीजक मूल्य 600 रु. है जिसमें बीजक मूल्य पर 20 प्रतिशत लाभ सम्मिलित है।

v) बीजक मूल्य 600 रु. है जिसमें लागत पर 20 प्रतिशत लाभ सम्मिलित है।

16.5 बीजक मूल्य पर भेजे गए माल का लेखा (Accounting for Goods sent at Invoice Price)

आप बीजक मूल्य की संकल्पना के बारे में, भार की गणना के बारे में तथा भार से संबंधित मदों के लिए की जाने वाली समायोजन प्रविष्टियों के बारे में जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। जहां तक बीजक मूल्य पर भेजे गए माल से संबंधित सौदों के लेखे का प्रश्न है, प्रेषिती की पुस्तकों में उनके लेखों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। प्रेषक की पुस्तकों में भी सभी प्रविष्टियां उसी प्रकार की जाती हैं। लेकिन भार से संबंधित चार मदों की रकमें अर्थात् प्रारंभिक स्टॉक, प्रेषण पर भेजे गए माल, प्रेषिती द्वारा लौटाये गये माल तथा अंतिम स्टॉक की रकमें, बीजक मूल्य को प्रदर्शित करेंगीं। इस अवस्था में प्रेषण पर लाभ ज्ञात करते समय आपको इन चार मदों पर भार के लिए आवश्यक समायोजन प्रविष्टियां करनी होगी।

उदाहरण 1 से 4 को ध्यान से पढ़िए और देखिए कि जब बीजक मूल्य पर माल भेजा जाता है तो प्रेषण से संबंधित विभिन्न लेन-देनों का लेखा किस प्रकार किया जाता है।

उदाहरण 1

दिल्ली के एजेज साइकिल्स कं. ने 1 जनवरी, 2018 को मद्रास के मुरूगन इन्टरप्राइजेज को 100 साइकिलें भेजी। प्रत्येक साइकिल की लागत 500 रु. थी तथा बीजक मूल्य 600 रु. था। एजेज साइकिल्स ने मालभाड़ा और बीमा पर 2,000 रु. खर्च किया तथा मुरूगन इन्टरप्राइजेज से उसे 30,000 रु. की अग्रिम राशि प्राप्त हुई। मुरूगन इन्टरप्राइजेज ने चुंगी और ढुलाई के रूप में 1,000 रु., किराए के रूप में 800 रु. और बीमा के लिए 600 रु. का भुगतान किया। जून, 2018 तक उन्होंने 62,500 रु. में 100 साइकिलें बेच दिया था। मुरूगन इन्टरप्राइजेज को सूचनार्थ बीजक मूल्य पर 10% की दर से कमीशन मिलता है तथा बीजक मूल्य से अधिक मूल्य पर वे जितना बेच पाते हैं उस पर उन्हें 20% की दर से कमीशन मिलता है। मुरूगन इन्टरप्राइजेज ने देय राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेज दिया।

दोनों पक्षों की लेखा पुस्तकों में लेजर खाते बनाइए।

हल:

Books of Ages Cycle Co.
Consignment to Madras Account

Dr. **Cr.**

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
		Rs.			Rs.
2018			2018		
Jan. 1	To Goods Sent on Consignment A/c (IP)	60,000	Jan.30	By Murugan Enterprises (Sales)	62,500
" 1	To Bank A/c (Expenses)	2,000	" 30	By Goods Send on Consignment A/c (Loading)	10,000
" 30	To Murugan Enterprises (Consignee's expenses)	2,400			
" 30	To Murugan Enterprises (Commission)	6,500			
" 30	To Profit & Loss A/c (Profit transferred)	1,600			
		72,500			72,500

Murugan Enterprise's Account

Dr. **Cr.**

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2018		**Rs.**	**2018**		**Rs.**
Jan 30	To Consignment to Madras A/c (sales)	62,500	Jan. 1	By Bank A/c (advance)	30,000
			Jan. 30	By Consignment to Madras (expenses)	2,400
			Jan. 30	By Consignment to Madras (Comm.)	6,500
			Jan. 30	By Bank A/c (Balance)	23,600
		62,500			62,500

Goods Sent on Consignment Account

2018		Rs.	**2018**		Rs.
Jun 30	To Consignment to Madras A/c (loading)	10,000	Jan. 1	By Consignment to Madras A/c (IP)	60,000
Jun 30	To Trading A/c	50,000			
		60,000			60,000

Books of Murugan Enterprise
Ages Cycle Co. Account

Dr. **Cr.**

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2018		**Rs.**	**2018**		**Rs.**
Jan 1	To Bank A/c (advance)	30,000	Jan. 30	By Bank A/c (sales)	62,500
" 1	To Bank A/c (expenses)	2,400			
Jun 30	To Commission A/c	6,500			
Jun 30	To Bank A/c (Balance)	23,600			
		62,500			62,500

Commission Account

Dr. **Cr.**

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2018		**Rs.**	**2018**		**Rs.**
Jun 30	To Profit and Loss A/c	6,500	Jun 30	By Ages Cycle Co.	6,500

1. प्रेषण पर भेजे गए माल पर भार

	रु.
100 साइकिलों की कुल लागत (500 × 100)	50,000
100 साइकिलों का कुल बीजक मूल्य (600 × 100)	60,000
भार (बीजक मूल्य – लागत मूल्य)	10,000

2. कमीशन :

60,000 रु. कच्चा बीजक मूल्य पर 10%	6,000
(2,500 रु.) प्राप्य अधिमूल्य पर 20%	500
	6,500

3. चूंकि इस उदाहरण में प्रारंभिक स्टॉक, अंतिम स्टॉक तथा प्रेषिती द्वारा लौटाया गया माल नहीं है अतः भार के लिए समायोजन केवल प्रेषण पर भेजे गए माल के संबंध में किया गया है।

उदाहरण 2

लुधियाना के राज ट्रेडर्स ने गुहाटी के राज बहादुर को 100 कंप्यूटर प्रेषण पर भेजे। इनमें से प्रत्येक कंप्यूटर की लागत 20,000 रु. थी और उसका मूल्य लागत पर 10% जोड़कर लगाया गया था। प्रत्येक कंप्यूटर की पैकिंग तथा अन्य व्यय के लिए राज ट्रेडर्स को 500 रु. खर्च करने पड़े। प्रेषिती ने रेलभाड़ा के लिए 1,500 रु., बीमा के लिए 1,300 रु. तथा ढुलाई के लिए 200 रु. का भुगतान करके इस प्रेषण को प्राप्त किया। उसने निम्नलिखित विक्रय विवरण प्रस्तुत किया।

प्रत्येक कंप्यूटर 25,000 रु. की दर से 20 कंप्यूटर नकद बेचे गए।

प्रत्येक कंप्यूटर 30,000 रु. की दर से 50 कंप्यूटर उधार बेचे गए।

प्रत्येक कंप्यूटर 25,000 रु. की दर से 10 कंप्यूटर अपने स्टॉक में लिया गया।

प्रेषिती ने विक्रय पर 10% कमीशन काट कर शेष राशि भेज दिया। यह मानते हुए कि मूल्य प्रविष्टि बीजक मूल्य पर की जाती है तथा प्रेषण स्टॉक का मूल्य बीजक मूल्य पर लगाया जाता है, राज ट्रेडर्स की लेखा पुस्तकों में आवश्यक खाते लिखिए।

हलः

Books of Raj Traders
Consignment to Gauhati Account

Dr. Cr.

Particulars	Amount	Particulars	Amount
	Rs.		Rs.
To Goods Sent on Consignment A/c (IP)	22,00,000	By Bahadur (Sales)	22,50,000
To Bank A/c (Consignor's expenses)	50,000	By Consignment Stock A/c	4,50,600
To Bahadur (Consignee's expenses)	3,000	By Goods Sent on Consignment A/c (Loading on goods sent)	2,00,000

To Bahadur (Commission)	2,25,000		
To Stock Reserve A/c (Loading on closing stock)	40,000		
To Profit & Loss A/c (Profit transferred)	3,82,600		
	29,00,600		29,00,600

Goods Sent on Consignment Account

	Rs.		Rs.
To Consignment A/c (loading)	2,00,000	By Consignment A/c (IP)	22,00,000
To Trading A/c	20,00,000		
	22,00,000		22,00,000

Bahadur of Gauhati Account

	Rs.		Rs.
To Consignment A/c (Sale proceeds)	22,50,000	By Consignment A/c (Expenses)	3,000
		By Consignment A/c(Commission)	2,25,000
		By Balance c/d	20,22,000
	22,50,000		22,50,000

22,000

Stock Reserve Account

	Rs.		Rs.
To Balance c/d	40,000	By Consignment A/c (Loading)	40,000

1. प्रति कंप्यूटर बीजक मूल्य की गणना

प्रति कंप्यूटर लागत मूल्य 20,000

बीजक मूल्य (लागत मूल्य से 10 प्रतिशत अधिक)

बीजक मूल्य = लागत मूल्य + लागत मूल्य का 10%

$$= 20,000 + \frac{10}{100} \times 20,000$$

$$= 20,000 + 2,000$$

= Rs.

2. अंतिम स्टॉक की गणना

जैसा कि आप पिछली इकाई में पढ़ चुके हैं अंतिम स्टॉक की गणना करते समय आनुपातिक अनावर्ती व्ययों को जोड़ा जाता है।

		Rs.
20 कंप्यूटरों का कुल बीजक मूल्य	(Rs. 22,000 × 20)	4,40,000
जोड़िए : आनुपातिक अनावर्ती व्यय		
प्रेषक द्वारा किए गए	50,000	
प्रेषिती द्वारा किए गए	3,000	
Total	53,000	
आनुपातिक व्यय (Rs. 53,000 20/100)		10,600
Closing Stock		4,50,600

3. भार की गणना

प्रति कंप्यूटर बीजक मूल्य	22,000
प्रति कंप्यूटर लागत मूल्य	20,000
प्रति कंप्यूटर भार (बीजक मूल्य – लागत मूल्य)	2,000

अ) 100 कंप्यूटरों के प्रेषण पर कुल भार
2,000 × 100 = 2,00,000 रु.

आ) 20 कंप्यूटरों के अंतिम स्टॉक पर कुल भार
2,000 × 20 = 40,000 रु.

उदाहरण 3

हैदराबाद के राम दास ने कोचीन के प्रकाश को 72,000 रु. की लागत का सामान सूचनार्थ बीजक पर भेजा जो लागत से बीजक मूल्य के 1/6 अधिक लाभ पर लगाया गया था। बीमा तथा अन्य व्यय के लिए प्रेषक ने 1,800 रु. का भुगतान किया। प्रकाश ने सामान को प्राप्त किया तथा मालभाड़ा और अन्य व्यय के लिए 3,000 रु. का भुगतान किया। सकल बिक्री पर उसे 3% कमीशन मिला। माल का 3/4 लागत पर लाभ को शामिल करके बेचा गया। इसमें से आधा उधार बेचा गया। शेष आधे की चोरी हो गई, लेकिन क्योंकि स्टॉक का बीमा कराया गया था अतः बीमा कंपनी को 8,000 रु. का दावा प्रस्तुत किया गया। कंपनी के साथ 7,000 रु. पर समझौता हुआ। स्टॉक के शेष का मूल्य सूचनार्थ बीजक मूल्य पर लगाया गया। प्रेषण और असामान्य हानि खाता बनाइए।

हल:

Consignment to Cochin Account

Dr. Cr.

Particulars	Amount	Particulars	Amount
	Rs.		**Rs.**
To Goods Sent on Consignment A/c	86,400	Prakash (Sales)	72,000
To Bank A/c	1,800	By Abnormal Loss A/c	9,600

To Prakash (Freight and other charges)	3,000	By Consignment Stock A/c (Unsold stock)	11,400
To Prakash (Commission on Sales)	2,160	Goods Sent on Consignment A/c (Loading)	14,400
To Stock Reserve A/c (Loading on closing stock)	1,800		
To Profit & Loss A/c (Profit transferred)	12,240		
	1,07,400		1,07,400

Abnormal Loss Account

	Rs.		Rs.
To Consignment to Cochin A/c	9,600	By Bank A/c (Insurance)	7,000
		By Profit & Loss A/c (Balance transferred)	2,600
	9,600		9,600

नोट :

1. भेजे गए माल का बीजक मूल्य

माल का लागत मूल्य : 72,000 रु.

बीजक मूल्य = लागत मूल्य + लाभ

मान लीजिए कि बीजक मूल्य 'x' है

$$x = 72,000 + \frac{1}{6}x$$

$$x - \frac{1}{6}x = 72,000$$

$$\frac{6x - x}{6} = 72,000$$

$$\frac{5x}{6} = 72,000$$

$$x = 72,000 \times \frac{6}{5} = 86,400 \text{ रू0}$$

2. माल के $\frac{3}{4}$ भाग का विक्रय मूल्य :

माल का 3/4 भाग लागत पर $33\frac{1}{3}\%$ लाभ पर बेचा गया।

माल के 3/4 भाग का लागत पर $72,000 \times \frac{3}{4} = 54,000$ रु.

लागत का $33\frac{1}{3}\%$ लाभ के रूप में जोड़िए।

$$54,000 \times \frac{100}{300} = 18,000 \text{ रू0}$$

विक्रय मूल्य $= 54,000$ रू0 $+ 18,000$ रू0 $= 72,000$ रु.

3. अंतिम स्टॉक का मूल्य :

परेशित माल का बीजक मूल्य 86,400 रु.

अनबिके माल का बीजक मूल्य

घटाइये : यातायात में नष्ट हुए माल को

बीजक मूल्य $= 21,600 \times \frac{1}{2} = 10,800$ रु.

हानि के बाद प्रेषिती के पास बचे हुए माल का बीजक मूल्य 10,800 रु.

जोड़िए : आनुपातिक व्यय $\frac{1}{8} \times 4,800$	=	600 रु.
अंतिम स्टॉक का मूल्य	=	11,400 रु.

4. नष्ट हुए माल (असामान्य हानि) की लागत :

नष्ट हुआ माल अनबिके माल के आधे के बराबर है अर्थात् $\frac{1}{2} \times \frac{1}{4} =$

परेशित माल का 1/8वां भाग

असामान्य हानि का लागत मूल्य

$(1/8 \times 72,000)$	=	रु.
जोड़िए : आनुपातिक अनावर्ती व्यय		
$(1/8 \times 4,800)$	=	रु.
असामान्य हानि की लागत		9,600 रु.

5. अंतिम स्टॉक का भार :

बीजक मूल्य $(1/8 \times 86,400)$	=	रु.
लागत मूल्य $(1/8 \times 72,000)$	=	रु.
भार		1,800 रु.

उदाहरण 4

बम्बई के वर्मा ब्रदर्स ने अहमदाबाद के अपने एजेन्ट कबीर एजेन्सी को बीजक मूल्य 1,00,000 रु. पर सामान भेजा जो लागत मूल्य से 25% अधिक है। प्रेषक ने मालभाड़ा और ढुलाई पर 5,000 रु. तथा बीमा पर 3,500 रु. खर्च किया। वर्मा ब्रदर्स को इस प्रेषण पर 25,000 की अग्रिम राशि मिली।

प्रेषक को सभी विक्रयों पर 25% कमीशन मिलता है। यदि प्रेषिती इस सामान में से कोई सामान लेता है या उसकी उपेक्षा के कारण कोई सामान नष्ट हो जाता है तो लागत में $12\frac{1}{2}\%$ जोड़कर उसका मूल्य लगाया जाएगा और उस पर उसे कोई कमीशन नहीं दिया जाएगा। प्रेषिती ने प्रेषित माल के 4/5 को 1,40,000 रु. में बेच दिया। 10,000 रु. के बीजक मूल्य के सामान को प्रेषिती ने ले लिया तथा शेष माल प्रेषिती की उपेक्षा करने के कारण नष्ट हो गया। प्रेषिती ने विज्ञापन तथा विक्रय व्यय के लिए 2,500 रु. का भुगतान किया। प्रेषक की लेखा पुस्तकों में आवश्यक खाते बनाइए।

हल:

10,800 रु0

Consignment to Ahmedabad Account
Consignment to Cochin Account

Dr. Cr.

Particulars	Amount	Particulars	Amount
	Rs.		Rs.
To Goods Sent on Consignment A/c	1,00,000	By Kabir Agency (Sales)	1,40,000
To Bank A/c (expenses)	8,500	By Kabir Agency (CP of goods taken)	9,000
To Kabir Agency (Consignee's expenses)	2,500	By Kabir Agency (Stock lost)	9,000
To Kabir Agency (Commission)	4,200	By Goods Sent on Consignment A/c (Loading)	20,000
To Profit & Loss A/c (Profit Transferred)	62,800		
	1,78,000		1,78,000

Kabir's Account

	Rs.		Rs.
To Consignment to Ahmedabad A/c (sales)	1,40,000	By Bank A/c (Advance)	25,000
To Consignment to Ahmedabad A/c	9,000	By Consignment to Ahmedabad A/c (Expenses)	2,500
To Consignment to Ahmadabad A/c (Balance)	9,000	By Consignment to Ahmedabad A/c (Commission)	4,200
		By Balance c/d	1,26,300
	1,58,000		1,58,000

नोट :

1. प्रेषित माल के लागत मूल्य की गणना :

भेजे गए माल का बीजक मूल्य 1,00,000 रु. है जो लागत से 25 प्रतिशत अधिक है। लागत मूल्य निम्न प्रकार से ज्ञात किया जाएगा।

बीजक मूल्य = लागत मूल्य + लाभ (लागत मूल्य पर 25%)

मान लीजिए कि लागत मूल्य 'x' है

$$1,00,000 = x + \frac{25}{100}x$$

$$1,00,000 = x + \frac{1}{4}x$$

$$1,00,000 = \frac{4x + x}{4}$$

$$1,00,000 = \frac{5x}{4}$$

अथवा $$\frac{5x}{4} = 1,00,000$$

$$5x = 1,00,000 \times 4$$

$$5$$

$$x = 80,000$$

लागत मूल्य रु.

2. प्रेषिती द्वारा लिए गए माल का मूल्य :

लिए गए माल का बीजक मूल्य रु.

लिए गए माल का लागत मूल्य रु.

इनका मूल्यांकन लागत पर $12\frac{1}{2}\%$ जोड़ कर करना है।

अतः इनका मूल्य $= 8,000 + 1,000$

रु.

3. प्रेषिती की असावधानी के कारण नष्ट हुए माल का मूल्य :

इसका मूल्य उसी प्रकार निकाला जाएगा जिस प्रकार प्रेषिती द्वारा लिए गए माल का मूल्य निकाला गया था।

16.6 सारांश

कई बार प्रेषण पर अर्जित किए गए वास्तविक लाभ को छिपाने के लिए प्रेषक प्रेषिती को एक ऐसे मूल्य पर माल भेजता है जो लागत मूल्य से अधिक होता है। यह मूल्य बीजक मूल्य कहलाता है। बीजक मूल्य तथा लागत मूल्य का अंतर 'भार' कहलाता है। यह प्रेषण खाते में दिखाई जाने वाली चार मदों को प्रभावित करता है – (i) प्रेषण पर भेजा गया माल (ii) प्रेषिती द्वारा लौटाया गया माल (iii) प्रारंभिक प्रेषण स्टॉक तथा (iv) अंतिम प्रेषण स्टॉक। वास्तविक लाभ ज्ञात करने के लिए इन सभी मदों पर भार के प्रभाव को समाप्त करना होगा अन्यथा प्रेषण खाता एक ऐसे लाभ को प्रदर्शित करेगा जो वास्तव में अर्जित किए गए लाभ से कम होगा।

बीजक मूल्य में से लागत मूल्य घटाकर भार की रकम ज्ञात की जा सकती है। जब लागत मूल्य तथा बीजक मूल्य दोनों दिए हों तो भार की गणना करना आसान होता है। लेकिन जब भार बीजक मूल्य अथवा लागत मूल्य पर प्रतिशत के रूप में दिया हुआ हो और केवल बीजक मूल्य अथवा लागत मूल्य की रकम ही दी हुई हो तो इसके लिए विशेष सावधानी की आवश्यकता होती है। ऐसी स्थिति में भार अथवा अज्ञात मूल्य निकालने के लिए बीजक मूल्य = लागत मूल्य + भार सूत्र का प्रयोग किया जाता है। विभिन्न मदों के संबंध में भार के समायोजन के लिए हमें प्रेषक की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां करनी होंगी। लेकिन भार का प्रेषिती की पुस्तकों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा क्योंकि उसकी पुस्तकों में इन चारों संबंधित मदों के संबंध में कोई प्रविष्टि नहीं होती।

16.7 शब्दावली

बीजक मूल्य (Invoice Price) : वह मूल्य जिस पर प्रेषक प्रेषिती को माल भेजता है। यह साधारणतया लागत मूल्य से अधिक होता है।

भार (Loading) : बीजक मूल्य तथा लागत मूल्य का अंतर।

16.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

आर. एल. गुप्ता एवं वी. के. गुप्ता : एडवांस्ड एकाउन्टेंसी (2018), सुल्तान चंद एंड संस, नई दिल्ली

सी. एल. चतुर्वेदी : एडवांस्ड एकाउन्टेंसी (2018), श्री महावीर बुक डिपो,, दिल्ली

विलियम पिकिल्स : एकाउन्टेंसी (2012) ई. एल. बी. एस. एवं पिटमैन, लंदन

एम. सी. शुक्ला एवं टी. एस. ग्रेवाल (2018), एडवांस्ड एकाउन्टेंसी नई दिल्ली : एस. चांद एंड कं, नई दिल्ली

16.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

क 1. i) गलत ii) सही iii) गलत
iv) सही v) गलत vi) गलत

2. बीजक मूल्य तथा लागत मूल्य के अंतर को

3. i) प्रेषण पर भेजा गया माल ii) प्रेषिती द्वारा लौटाया गया माल
iii) प्रारंभिक प्रेषण स्टॉक iv) अंतिम प्रेषण स्टॉक

4. i) 600 रु. ii) 200 रु. iii) 625 रु.
iv) 225 रु. v) 250 रु.

5. i) 400 रु. ii) 120 रु. iii) 150 रु.
iv) 120 रु. v) 100 रु.

16.10 स्वपरख प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न

1. बीजक मूल्य से आप क्या समझते हैं? बीजक मूल्य पर माल भेजने के कारणों का उल्लेख कीजिए।

2. भार किसे कहते हैं? आप इसकी गणना किस प्रकार करते हैं? उदाहरण देकर समझाइये।

3. उन मदों के नाम बताइए जिनका लेखा प्रेषण खाते में बीजक मूल्य पर किया जाता है। प्रत्येक मद के संबंध में भार के समायोजन के लिए की जाने वाली प्रविष्टियों का उल्लेख कीजिए।

अभ्यास

1. कोल्हापुर के विजय एंड कं. ने मद्रास के चौधरी को 2,000 साइकिलें निम्नलिखित शर्तों पर बेचने के लिए 18 जुलाई, 2018 को प्रेषण पर भेजी।

क) साइकिलों को बीजक मूल्य पर या उससे अधिक मूल्य पर बेचा जा सकता है।

ख) चौधरी को मिलने वाले कमीशन की दर होगी बीजक मूल्य पर बेचने पर प्राप्त राशि का और उससे अधिक मूल्य पर बेचने पर 20%।

प्रत्येक साइकिल की लागत 300 रु. थी तथा उसका बीजक मूल्य लागत में जोड़कर लगाया गया था। विजय एंड कं. ने मालभाड़ा और बीमा पर 20,000 रु. खर्च किया। चौधरी को प्रेषण पर माल 14 जुलाई को प्राप्त हुआ और उन्होंने विजय एंड कं. द्वारा उन पर लिखे गए तीन मास के 2,00,000 रु. के बिल को स्वीकार किया। चौधरी ने सीमा शुल्क के लिए 8,000 रु. तथा बीमा और गोदाम के किराए के लिए 5,000 रु. का भुगतान किया। उन्होंने 1,600 साइकिलें प्रति साइकिल 500 रु. की दर से बेची। विजय एंड कं. एवं चौधरी की लेखा पुस्तकों में दिखाए जाने वाले लेजर खाते बनाइए।

(**उत्तर** : लाभ 2,12,600 रु.; बीजक मूल्य पर स्टॉक 1,65,600 रु.; चौधरी से प्राप्य राशि 5,07,000 रु.)

2. बंबई के राज एंड कं. ने सीलोन के सिंघम ब्रदर्स को 10 जून, 2018 को रेड वाइन की 100 पेटियां प्रेषण पर भेजी। प्रेषण की लागत 7,500 रु. थी लेकिन सामान का मूल्य सूचनार्थ बीजक मूल्य (Proforma invoice price) पर लगाया गया था जिससे उसमें बीजक मूल्य का 25% लाभ के रूप में सम्मिलित कर लिया जाए। उसी दिन प्रेषक ने मालभाड़ा और बीमा के लिए 600 रु. का भुगतान किया। जुलाई 1 को प्रेषिती ने आयात शुल्क के लिए 1,000 रु. और गोदी देय (dock dues) के लिए 200 रु. का भुगतान किया तथा प्रेषण के लिए देय राशि में से अग्रिम राशि के रूप में 4,000 रु. बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजा। 15 जुलाई को उन्होंने 80 पेटियां 10,500 रु. में बेच दी। सिंघम ब्रदर्स को पारिश्रामिक के रूप में बिक्री से प्राप्त सकल राशि में से $7\frac{1}{2}\%$ कमीशन के रूप में मिलता है। यह मानते हुए कि प्रेषिती ने शेष देय राशि को ड्राफ्ट द्वारा भेज दिया है, प्रेषक और प्रेषिती की लेखा पुस्तकों में प्रविष्टियां दिखाइए।

(**उत्तर** : लाभ 2,535 रु., स्टॉक का मूल्य 2,360 रु.)

3. दिल्ली के मोदी टेक्सटाइल्स ने कलकत्ता के विनोद इन्टरप्राइजेज को कपास की 100 गांठे प्रेषण पर भेजी। प्रत्येक गांठ का बीजक मूल्य 1,500 रु. था। जिससे बीजक मूल्य पर 20% लाभ शामिल था। प्रेषक ने बीमा के लिए 2,500 रु. तथा मालभाड़ा और ढुलाई के लिए 4,000 रु. का भुगतान किया। प्रेषिती ने कपास की गांठों को प्राप्त किया तथा 75 गांठों को उसने नकद बेच कर 1,12,500 रु. प्राप्त किया। गोदाम के किराए पर उसने 1,800 रु. खर्च किया तथा बिक्री पर उसे 10% कमीशन मिला। गोदाम में 5 गांठें क्षतिग्रस्त हो गई और उनका मूल्य 50% कम करके लगाना है। मोदी टेक्सटाइल्स की लेखा पुस्तकों में प्रेषण खाता दिखाइए।

संकेत : क्षतिग्रस्त सामान को भी स्टॉक में लेना है तथा उनका मूल्य बीजक मूल्य और आनुपातिक व्ययों के 50% पर लगाना है।

(**उत्तर** : लाभ 1,412 रु.; स्टॉक का मूल्य 35,212 रु. (क्षतिग्रस्त सामान के लिए 3,912 रु. को शामिल करके) प्रेषिती से प्राप्य राशि 99,450 रु.)

4. 1 जनवरी, 2018 को यूनिक क्लॉक मेकर्स की लेखा पुस्तकों में सिलोन खाते को प्रेषण 3,750 रु. का डेबिट शेष दिखाता था। यह 50 घड़ियों का बीजक मूल्य है जो लागत से 25% अधिक है। 7 जनवरी को उन्होंने 2,500 घड़ियों का एक और प्रेषण

भेजा जिसमें प्रत्येक घड़ी का बीजक मूल्य 75 रु. था, जो लागत से 25% अधिक था। उन्होंने पैकिंग के लिए 1,000 रु. बीमा के लिए 500 रु., और मालभाड़ा एवं ढुलाई के लिए 3,000 रु. का भुगतान किया। प्रेषिती रामा वाच कं. ने 21 जनवरी को घड़ियों को प्राप्त किया तथा सीमा शुल्क, निकासी व्यय आदि के लिए 3,000 रु. का भुगतान किया। प्राप्त माल के बीजक मूल्य के 50% के लिए उन्होंने बैंक ड्राफ्ट भेजा। 15 जून को उन्होंने 50 घड़ियां वापस कर दी जो दोषपूर्ण पाई गई थी।

31 दिसंबर, 2018 तक उन्होंने 50 घड़ियों के प्रारंभिक स्टॉक को प्रत्येक घड़ी 85 रु. की दर से उधार में बेच दिया था और नए प्रेषण में से 2,400 घड़ियों को प्रति घड़ी 90 रु. की दर से बेच दिया था। उनके द्वारा किए गए व्यय थे : विज्ञापन 2,000 रु. , वेतन 2,000 रु. और सेवा प्रभार 250 रु.।

परेशिती को विक्रय पर 8% कमीशन मिलता है। प्रेषिती उधार विक्रय की राशि में से 250 रु. को वसूल नहीं कर सकता। दोनों पक्षों की लेखा पुस्तकों में आवश्यक लेजर खाते दिखाइए।

(**उत्तर** : लाभ 43,780 रु., अंतिम स्टॉक का मूल्य 3,900 रु., प्रेषिती से प्राप्य राशि 1,01,630 रु.)

5. आगरा के **क** ने दिल्ली के **ख** को किसी माल की 100 यूनिटें प्रेषण पर भेजी। माल का बीजक मूल्य प्रति यूनिट 150 रु. की दर से लगाया गया था जिससे लागत पर 50% लाभ प्राप्त हो। **क** ने मालभाड़ा और बीमा पर 1,000 रु. खर्च किया। **ख** ने मालभाड़ा पर 500 रु. और किराए पर 800 रु. खर्च किया। 31 दिसंबर 2018 के पहले उसने प्रति यूनिट 160 रु. की दर से 50 यूनिटें नकद बेच दिया था तथा प्रति यूनिट 175 रु. की दर से 20 यूनिटें उधार बेच दिया था। उसने सभी विक्रयों पर मिलने वाले 5% कमीशन और 1% आश्वासी कमीशन अपने पास रख कर शेष राशि को 31 दिसंबर 2018 को प्रेषक को भेज दिया। **ख** ने देखा कि गलत ढंग से पैकिंग होने के कारण 10 यूनिटें क्षतिग्रस्त हो गई थी और उन्हें वह प्रति यूनिट 80 रु. की दर से ही बेच सका। 1000 रु. का एक देनदार जिसे उधार माल बेचा गया था, दिवालिया हो गया और उससे रुपए में 50 पैसे ही वसूल हो सके। **क** और **ख** की लेखा पुस्तकों में आवश्यक लेजर खाते बनाइए।श

(**उत्तर** : लाभ 1,960 रु., असामान्य हानि 398 रु., स्टॉक का मूल्य 3,300 रु.)

नोटः ये प्रश्न/अभ्यास इस इकाई को बेहतर ढंग से समझने में आपकी सहायता करेंगे। इनके उत्तर लिखने का प्रयास कीजिए। अपने उत्तर विश्वविद्यालय को न भेजें। ये केवल आपके अपने अभ्यास के लिए हैं।

इकाई 17 संयुक्त उपक्रम लेखे (Joint Venture Accounts)

इकाई की रूपरेखा

17.0 उद्देश्य

17.1 प्रस्तावना

17.2 संयुक्त उपक्रम से क्या तात्पर्य है?

17.3 संयुक्त उपक्रम तथा प्रेषण

17.4 संयुक्त उपक्रम तथा साझेदारी

17.5 लेखाकरण व्यवहार

17.5.1 एक सह-उपक्रमी की पुस्तकों में लेखा करना

17.5.2 सभी सह-उपक्रमियों की पुस्तकों में लेखा करना

17.5.3 मेमोरेंडम संयुक्त उपक्रम खाता विधि

17.5.4 पृथक् लेखा पुस्तकें रखना

17.6 सारांश

17.7 शब्दावली

17.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

17.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

17.10 स्वपरख प्रश्न/अभ्यास

17.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग्य हो सकेंगे कि :

- संयुक्त उपक्रम के अर्थ तथा महत्व की व्याख्या कर सकें;
- संयुक्त उपक्रम का साझेदारी तथा प्रेषण से अंतर स्पष्ट कर सकें;
- किसी एक उपक्रमी की लेखा पुस्तकों में संयुक्त उपक्रम संबंधी लेन-देन की प्रविष्टि कर सकें;
- सभी उपक्रमियों की लेखा पुस्तकों में संयुक्त उपक्रम के लेन-देनों की प्रविष्टि कर सकें;
- मेमोरेंडम संयुक्त उपक्रम खाता बना सकें;
- संयुक्त उपक्रम व्यापार के लिए पृथक् लेखा पुस्तकें बना सकें।

17.1 प्रस्तावना

15 और 16 इकाईयों में आपने प्रेषण संबंधी लेन-देनों को संबंधित पक्षकारों की लेखा पुस्तकों में प्रविष्टि करने की विधि का अध्ययन किया। प्रेषण खाता बनाने का मुख्य उद्देश्य विभिन्न प्रेषण से होने वाले लाभ या हानि की राशि ज्ञात करना है। इसी प्रकार

जब कुछ व्यक्ति मिलकर किसी विशिष्ट सौदे या उपक्रम (जिसे संयुक्त उपक्रम कहा जाता है) को पूरा करने का निर्णय करते हैं तब उनमें से प्रत्येक उपक्रमी (जिसे सह-उपक्रमी कहा जाता है) अपने हिस्से के लाभ या हानि की राशि जानने का इच्छुक होता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वे या तो उपक्रम के लेन-देन को अपनी पुस्तकों में दर्ज करते हैं या फिर उसे पृथक् पुस्तकों में लिखते हैं। इस इकाई में आप सीखेंगे कि संयुक्त उपक्रम व्यापार के लेन-देन पृथक् पुस्तकों में किस प्रकार रिकार्ड किये जाते हैं और यदि सह-उपक्रमी उन लेन-देनों को अपनी-अपनी लेखा पुस्तकों में रिकार्ड करना तय करें तो उनकी प्रविष्टियां किस प्रकार की जाती हैं।

17.2 संयुक्त उपक्रम से क्या तात्पर्य है? (What is Joint Venture?)

जब दो या दो से अधिक व्यक्ति मिलकर किसी विशेष उद्यम या व्यापार को करने तथा उससे होने वाले लाभ-हानि को परस्पर बांटने को सहमत होते हैं, तो इसे संयुक्त उपक्रम (Joint Venture) कहते हैं। ऐसा प्रत्येक व्यक्ति जो उपक्रम में शामिल होता है, सह-उपक्रमी (Co-Venturer) कहलाता है। संयुक्त उपक्रम व्यापार में प्रायः फर्म के नाम का प्रयोग नहीं किया जाता है क्योंकि इसका कार्यकाल कुछ समय तक के लिए ही होता है। उपक्रम की अवधि के दौरान प्रत्येक उपक्रमी अपना-अपना पृथक व्यापार करने के लिए स्वतंत्र होता है (जब तक कोई विपरीत समझौता न हो)। जैसे ही उपक्रम का कार्य समाप्त हो जाता है तभी सह-उपक्रमियों का परस्पर व्यापारिक संबंध भी समाप्त हो जाता है।

इस प्रकार संयुक्त उपक्रम उन दो या अधिक व्यक्तियों की ऐसी अस्थायी साझेदारी है जो किसी विशेष उद्यम को करने के लिए सहमत हुए हैं। भवनों को बनाने, प्रेषण, संपत्ति के क्रय-विक्रय, शेयरों या डिबेन्चरों के अभिगोपन (underswriting) आदि कार्यों के लिए संयुक्त उपक्रम को अपनाया जाता है। उदाहरण के लिए **अ** और **ब** किसी कालेज के भवन को बनाने का ठेका लेते हैं और इसके लिए वह अपने साधनों व गुणों को एकत्रित करते हैं। पूंजी के रूप में **अ** 6 लाख रु. तथा **ब** 4 लाख रु. लगाता है। भवन बन जाने के बाद वे इस उपक्रम से हुए लाभ या हानि को अपनी-अपनी पूंजी के अनुपात में आपस में बांट लेते हैं। इस उदाहरण में **अ** तथा **ब** के परस्पर काम करने को संयुक्त उपक्रम कहते हैं। इस दशा में **अ** तथा **ब** सह-उपक्रमी हैं। वे इस उपक्रम से होने वाले लाभ को अपनी पूंजी के अनुपात अर्थात् 6 और 4 के अनुपात में बांट लेंगे।

उपर्युक्त विवरण से संयुक्त उपक्रम की निम्नलिखित मुख्य विशेषताएं स्पष्ट होती हैं।

1. यह दो या अधिक व्यक्तियों द्वारा बनाया जाता है।
2. इसका उद्देश्य किसी विशेष उपक्रम या उद्यम को पूरा करना होता है।
3. संयुक्त उपक्रम व्यापार के लिए किसी फर्म विशेष का नाम का प्रयोग नहीं किया जाता।
4. यह अस्थायी प्रकृति का होता है। अतः उपक्रम का कार्य पूर्ण होते ही उपक्रमियों का परस्पर समझौता स्वतः ही समाप्त हो जाता है।
5. सह-उपक्रमी लाभ-हानि को परस्पर निश्चित अनुपात में बांटते हैं। यदि सह. उपक्रमियों में इस संबंध में कोई स्पष्ट समझौता नहीं हुआ है तो वे लाभ-हानि बराबर-बराबर बांटते हैं।

6. जब तक इस संबंध में कोई और समझौता न हुआ हो, सह-उपक्रमी उपक्रम के दौरान अपना-अपना पृथक् व्यापार करने के लिए स्वतंत्र होते हैं।

संयुक्त उपक्रम के मुख्य लाभ निम्न हैं।

1. **पर्याप्त साधन** : क्योंकि दो या अधिक व्यक्ति अपने-अपने साधनों को एकत्र करते हैं, अतः पर्याप्त पूंजी उपलब्ध हो जाती है।

2. **योग्यता एवं अनुभव** : संयुक्त उपक्रम में विभिन्न उपक्रमी विभिन्न योग्यताओं एवं अनुभव वाले होते हैं अतः उनके सामूहिक गुणों एवं बुद्धि-कौशल का लाभ उपक्रम को मिलता है।

3. **जोखिम का बंट जाना** : सह-उपक्रमी उपक्रम के लाभ-हानि को परस्पर किसी विशेष अनुपात में बांटते हैं, इसका अर्थ हुआ कि वे उसी अनुपात में जोखिम उठाने के लिए सहमत होते हैं।

17.3 संयुक्त उपक्रम तथा प्रेषण (Joint Venture and Consignment)

यद्यपि प्रेषण तथा संयुक्त उपक्रम, दोनों ही दशाओं में विभिन्न पक्षकार परस्पर समझौता करते हैं, फिर भी दोनों में अनेक अंतर हैं। मुख्य अंतर निम्नलिखित हैं।

	प्रेषण	संयुक्त उपक्रम
1.	सामान्यतः दो व्यक्ति शामिल होते हैं, प्रेषक तथा प्रेषिती।	सह-उपक्रमियों की संख्या प्रायः दो होती है, परन्तु यह दो से अधिक भी हो सकती है।
2.	प्रेषक तथा प्रेषिती का संबंध प्रधान एवं एजेंट (अभिकर्ता) का होता है।	सह-उपक्रमियों का परस्पर संबंध साझेदारी का होता है।
3.	यह व्यवस्था काफी लम्बे समय तक के लिए हो सकती है।	उपक्रम का उद्देश्य पूर्ण होते ही परस्पर संबंध तुरन्त समाप्त हो जाते हैं।
4.	प्रेषक धन उपलब्ध करता है।	सभी सह-उपक्रमी साधन जुटाते हैं।
5.	प्रेषिती एजेंट के रूप में कार्य करता है तथा उसे प्रेषक के आदेशों का पालन करना पड़ता है।	सह-उपक्रमियों का निर्णय लेने का बराबर अधिकार होता है।
6.	प्रेषण प्रायः चल सम्पत्ति के लिए होता है।	यह वस्तुओं के विक्रय या किसी अन्य कार्य को करने के लिए भी हो सकता है जैसे भवन निर्माण का कार्य, शेयरों में निवेश आदि।
7.	सारा लाभ प्रेषक का ही होता है। प्रेषिती को केवल कमीशन मिलता है।	सभी सह-उपक्रमी आपस में लाभ को एक निश्चित अनुपात में बांट लेते हैं।

8.	प्रेषक ही माल का स्वामी होता है।	सभी उपक्रमी संयुक्त स्वामी होते हैं।
9.	प्रेषण लेन-देन को रिकार्ड करने की केवल एक ही विधि है।	संयुक्त उपक्रम के लेन-देन को रिकार्ड करने की चार विधियां हैं।

17.4 संयुक्त उपक्रम तथा साझेदारी (Joint Venture and Partnership)

यद्यपि संयुक्त उपक्रम एक अस्थायी साझेदारी के समान होता है परन्तु कानून की नजर में यह साझेदारी नहीं माना जाती। संयुक्त उपक्रम तथा साझेदारी, दोनों ही दशाओं में दो या अधिक व्यक्ति मिलकर कोई व्यापार करते हैं तथा उसके लाभ को आपस में बांट लेते हैं, परन्तु यह समानता होते हुए भी दोनों में कुछ आधारभूत अन्तर है। ये अन्तर निम्नलिखित हैं:

	साझेदारी	संयुक्त उपक्रम
1.	साझेदारी फर्म का सदैव एक नाम होता है।	फर्म का नाम होना आवश्यक नहीं है।
2.	यह निरन्तर प्रकृति की होती है।	उद्देश्य या कार्य के पूर्ण हो जाने पर यह तुरन्त समाप्त हो जाता है।
3.	पृथक लेखा पुस्तकें रखी जाती हैं।	पृथक लेखा पुस्तकें रखना आव यक नहीं है, क्योंकि किसी भी सह-उपक्रमी की लेखा पुस्तकों में खाते बनाए जा सकते हैं।
4.	कोई भी साझेदार उसी प्रकार का व्यापार अपने नाम से नहीं कर सकता।	सह-उपक्रमी इस उपक्रम जैसा ही व्यापार करने के लिए स्वतंत्र होते हैं।
5.	यद्यपि साझेदारी का पंजीकरण कराना अनिवार्य नहीं है फिर भी यह कराना वांछनीय होता है।	पंजीकरण कराने की कोई आवश्यकता ही नहीं है।
6.	फर्म के लाभ में नाबालिग को शामिल किया जा सकता है।	नबालिग व्यक्ति सह-उपक्रमी नहीं हो सकता क्योंकि वह अनुबंध करने के लिए अयोग्य होता है।

बोध प्रश्न क

1. **अ** और **ब** एक भवन बनाने के लिए संयुक्त उपक्रम में शामिल होते हैं। वे क्रमशः 2 लाख रुपये तथा 3 लाख रुपये की पूंजी लगाते हैं। वे लाभ-हानि को पूंजी के अनुपात में परस्पर बांटने का समझौता करते हैं। संयुक्त उपक्रम का लाभ 45,000 रुपये हुआ। (i) सह-उपक्रमियों का नाम लिखिए, तथा (ii) प्रत्येक उपक्रमी का लाभ में हिस्सा बताइए।

   i) .....

ii) .....

2. बताइए कि निम्नलिखित कथन **सही** है अथवा **गलत**।

   i) संयुक्त उपक्रम, भारतीय साझेदारी अधिनियम के अंतर्गत एक साझेदारी होता है।

   ii) संयुक्त उपक्रम का जीवनकाल निश्चित होता है।

   iii) संयुक्त उपक्रम तथा प्रेषण एक समान ही होते हैं।

   iv) संयुक्त उपक्रम में समझौते का पंजीकरण आवश्यक होता है।

   v) सह-उपक्रमी निश्चित अनुपात में लाभ बांटते हैं।

17.5 लेखाकरण व्यवहार (Accounting Treatment)

संयुक्त उपक्रम व्यापार संबंधी लेन-देन को निम्नलिखित चार विधियों में से किसी भी एक के अनुसार रिकार्ड किया जा सकता है :

1. **एक सह-उपक्रमी की पुस्तकों में** : व्यापार का आकार बड़ा न होने की स्थिति में संयुक्त उपक्रम के लेन-देनों को रिकार्ड करने का काम किसी एक सह-उपक्रमी को सौंपा जाता है, जो उपक्रम की समाप्ति तक समस्त लेन-देन अपनी लेखा पुस्तकों में दर्ज करता है। ऐसी स्थिति में सभी सह-उपक्रमी अपने-अपने लेन-देनों का ब्यौरा इस उपक्रमी को भेजते हैं और वह अपनी पुस्तकों में एक संयुक्त उपक्रम खाता (Joint Venture Account) तथा सभी सह-उपक्रमियों के व्यक्तिगत खाते खोलता है।

2. **सभी सह-उपक्रमियों की पुस्तकों में** : जब सभी उपक्रमी व्यापार में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं तब प्रत्येक उपक्रमी अपनी लेखा पुस्तकों में एक संयुक्त उपक्रम खाता तथा अन्य सह-उपक्रमियों के व्यक्तिगत खाते खोलता है। इस स्थिति में यह आवश्यक है कि प्रत्येक उपक्रमी अपने-अपने लेन-देनों का ब्यौरा अन्य उपक्रमियों को भेजे ताकि वे उसे अपनी-अपनी पुस्तकों में लिख सकें।

3. **मेमोरेंडम संयुक्त उपक्रम खाता** : कई बार सह-उपक्रमी केवल उन्हीं लेन-देनों को रिकार्ड करता है जो उससे संबंधित होते हैं। ऐसी स्थिति में वह उपक्रम के लाभ या हानि की राशि को ज्ञात नहीं कर सकेगा क्योंकि उपक्रम से संबंधित समस्त लेन-देन रिकॉर्ड नहीं किए गये है। संयुक्त उपक्रम पर लाभ-हानि की राशि ज्ञात करने के लिए एक संयुक्त उपक्रम मेमोरेंडम खाता (Memorandum Joint Venture Account) बनाया जाता है, जिसमें उपक्रम संबंधी लेन-देन लिखे जाते हैं। इसके पश्चात् संयुक्त उपक्रम खाता पूरा करके बंद किया जाता है।

4. **पृथक लेखा पुस्तकें** : कई बार सुविधा की दृष्टि से संयुक्त उपक्रम के लेन-देनों को पृथक् पुस्तकों में लिखा जाता है। इस विधि के अंतर्गत लेखा पुस्तकों में एक संयुक्त बैंक खाता (Joint Bank Account), एक संयुक्त उपक्रम खाता तथा सब सह-उपक्रमियों के व्यक्तिगत खाते खोले जाते हैं।

आइए अब इन विभिन्न विधियों का एक-एक करके विस्तार से अध्ययन करते हैं।

17.5.1 एक सह-उपक्रमी की पुस्तकों में लेखा करना

यदि संयुक्त उपक्रम व्यापार का आकार अधिक बड़ा नहीं है तो लेखा रखने का कार्य किसी भी एक सह-उपक्रमी को सौंपा जा सकता है। ऐसा उपक्रमी अपनी पुस्तकों में एक संयुक्त उपक्रम खाता तथा अन्य सह-उपक्रमियों के व्यक्तिगत खाते खोलता है। उपक्रम से हुए लाभ या हानि की राशि ज्ञात करने के लिए संयुक्त उपक्रम खाता बनाया जाता है। सह-उपक्रमियों के व्यक्तिगत खातों में उनसे प्राप्य या उन्हें देय राशि ज्ञात होती है। जैसा कि हम पहले बता चुके हैं कि संयुक्त उपक्रम का व्यापार करते हुए प्रत्येक उपक्रमी स्वयं अपना भी व्यापार कर सकता है, अतः अपने निजी व्यापार के लेन-देन के साथ-साथ वह उपक्रम का हिसाब-किताब भी रखता है। संयुक्त उपक्रम खाता बनाने से पहले उसकी लेखा पुस्तकों में निम्न जर्नल प्रविष्टियां की जाती हैं।

1. **जब अन्य सह-उपक्रमी अपना हिस्सा (पूंजी) भेजते हैं :**

   Cash/Bank A/c Dr.
   To Co-venturer's Personal A/c

2. **जब संयुक्त उपक्रम के लिए माल क्रय किया जाता है :**

   Joint Venture A/c Dr.
   To Cash/Bank A/c

3. **लेखा करने वाला उपक्रमी जब अपने स्टॉक में से ही माल व्यापार में लगाता है :**

   Joint Venture A/c Dr.
   To Purchases A/c

   यहां पर हम क्रय खाते को इसलिए क्रेडिट करते हैं क्योंकि वह लागत मूल्य पर अपने स्टॉक में से माल उपक्रम के व्यापार में लगा रहा है। परन्तु यदि वह लागत मूल्य के स्थान पर अन्य मूल्य पर माल देता है तो क्रय खाते को क्रेडिट करने के बजाए हम विक्रय खाते को ही क्रेडिट करेंगे।

4 **जब अन्य सह-उपक्रमी व्यापार के लिए माल देते हैं :**

   Joint Venture A/c Dr.
   To Co-venturer's Personal A/c

5. **जब संयुक्त उपक्रम के लिए व्ययों का भुगतान किया जाता है :**

   Joint Venture A/c Dr.
   To Cash/Bank A/c

   परन्तु यदि लेखा करने वाले उपक्रमी के अलावा अन्य सह-उपक्रमी व्ययों का भुगतान करता है, तो निम्नलिखित प्रविष्टि होगी :

   Joint Venture A/c Dr.
   To Co-venturer's Personal A/c

   यहां पर आप देखेंगे कि इन दोनों ही दशाओं में संयुक्त उपक्रम खाते को व्यय की गई राशि से डेबिट किया गया है क्योंकि वह व्यय उपक्रम के व्यापार के लिए किया गया है।

6. **जब लेखा करने वाला उपक्रमी जब माल बेचता है :**

   अ) नकद माल बेचने पर :

Cash/Bank A/c Dr.
To Joint Venture A/c

ब) उधार माल बेचने पर :

Debtor's Personal A/c Dr.
To Joint Venture A/c

7. जब देनदारों से रकम प्राप्त होती है :

Cash/Bank A/c Dr.
To Debtor's Personal A/c

8. जब भुगतान करने वाले देनदार को कुछ छूट दी जाती है अथवा कोई ऋण डूब जाता है :

Joint Venture A/c Dr.
To Debtor's Personal A/c

9. जब अन्य सह-उपक्रमी माल विक्रय करते हैं :

Co-venturer's Personal A/c Dr.
To Joint Venture A/c

10. अन्य सह-उपक्रमियों द्वारा माल विक्रय करने पर जब उनसे कोई नकदी या बिल प्राप्त होता है :

Cash/Bank/Bills Receivable A/c Dr.
To Co-venturer's Personal A/c

11. जब लेखा करने वाले उपक्रमी को कोई कमीशन या वेतन दिया जाए :

Joint Venture A/c Dr.
To Commission/Salary A/c

यहां पर संयुक्त उपक्रम खाते को हम इसलिए, डेबिट करते हैं क्योंकि यह व्यय उपक्रम के व्यापार से संबंधित है।

12. जब लेखा करने वाला उपक्रमी अनबिके माल को स्वयं ले लेता है :

Purchases A/c Dr.
To Joint Venture A/c

यदि कोई अन्य सह-उपक्रमी अनबिके माल को लेता है तो निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि की जाती है :

Co-venturer's Personal A/c Dr.
To Joint Venture A/c

उपर्युक्त प्रविष्टियां करने के बाद संयुक्त उपक्रम खाता बनाया जाता है। इस खाते का शेष उपक्रम के व्यापार से हुए लाभ या हानि को दर्शाता है, जिसे सभी उपक्रमियों में उनके लाभ बांटने के अनुपात में बांट दिया जाता है। इसके लिए निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है।

अ) **लाभ होने पर :**

Joint Venture A/c Dr.
To Profit & Loss A/c

(his own share)
To Co-venturers' Personal A/cs
(individually for their shares)

ब) **हानि होने पर :**

Profit & Loss A/c Dr.
(his own share of loss)
Co-venturers' Personal A/c Dr.
(individually for their shares)
To Joint Venture A/c

संयुक्त उपक्रम खाता बन्द करने के बाद जब हम उस रकम को ज्ञात करते हैं जो अन्य सह-उपक्रमियों को देय है। जब सह-उपक्रमियों को देय राशि का भुगतान किया जाता है तो निम्न जर्नल प्रविष्टि हो जाती है :

Co-venturers' Personal A/c Dr.
To Cash/Bank A/c

उदाहरण 1 को देखिए, इसमें यह बताया गया है कि लेखा करने वाले सह-उपक्रमी की लेखा पुस्तकों मे उपक्रम के व्यापार के लेन-देन को रिकार्ड करने के लिए जर्नल प्रविष्टियां कैसे की जाती हैं तथा लेजर में विभिन्नि खाते कैसे बनाए जाते हैं।

उदाहरण 1

राजेश और सुरेश ने 4,00,000 रु. में एक भवन बनाने का ठेका लिया। राजेश और सुरेश ने इस काम में क्रमशः 2,00,000 और 1,50,000 रु. लगाया। वे लाभ और हानि को परस्पर 4:3 अनुपात में बांटने को सहमत हुए। यह निर्णय लिया गया कि काम की देखभाल राजेश करेगा जिसे लाभ में उसके अंश के अतिरिक्त ठेके की कीमत का 5% कमीशन भी मिलेगा। राजेश ने आवश्यक सामग्री 3,20,000 रु. में खरीदी तथा अन्य व्ययों के लिए 9,000 रु. का भुगतान किया। राजेश ने अपने स्टॉक से 20,000 रु. की भवन निर्माण सामग्री को भी इस कार्य में लगाया। 5,000 रु. मजदूरी का भुगतान करना बाकी रह गया।

सुरेश ने सामग्री के स्टॉक को परस्पर सहमत मूल्य 16,000 रु. में ले लिया। भवन निर्माण का काम संपन्न हो गया और ठेका का रुपया मिल गया।

यह मानते हुए कि बाकी मजदूरी की राशि का भुगतान राजेश ने कर दिया, उपर्युक्त लेनदेनों को राजेश की लेखा पुस्तकों में रिकार्ड कीजिए और संयुक्त उपक्रम खाते तथा सुरेश के खाते को दिखाइए।

उदाहरण 2

In the Books of Rajesh
Journal Entries

Date	Particulars	L.F.	Dr. Amount	Cr. Amount
	Cash A/c Dr. To Suresh (Being cash received from Suresh)		1,50,000	1,50,000
	Joint Venture A/c Dr. To Cash A/c (Being materials purchased)		3,20,000	3,20,000

Joint Venture A/c Dr. To Cash A/c (Being expenses paid)			9,000	9,000
Joint Venture A/c Dr. To Purchases A/c Being material supplied from personal stock)			20,000	20,000
Joint Venture A/c Dr. To Outstanding Wages A/c (Being outstanding wages)			5,000	5,000
Joint Venture A/c Dr. To Commission A/c (Being Commission @ 5%)			20,000	20,000
Cash Account Dr. To Joint Venture (Being the contract price received)			4,00,000	4,00,000
Suresh Dr. To Joint Venture A/c (Being goods taken over by Suresh)			16,000	16,000
Joint Venture A/c Dr. To Profit & Loss A/c To Suresh (Being the profit shared)			42,000	24,000 18,000
Outstanding Wages A/c Dr. To Cash A/c (Being wages paid by Rajesh)			5,000	5,000
Suresh Dr. To Cash A/c (Being the amount due paid)			1,52,000	1,52,000

Joint Venture Account

Dr. **Cr.**

Particulars	**Amount**	**Particulars**	**Amount**
	Rs.		Rs.
To Cash A/c (Purchases)	3,20,000	By Cash A/c	4,00,000
To Cash A/c (Expenses)	9,000	By Suresh	16,000
To Purchase A/c (Material supplied)	20,000		
To Outstanding Wages A/c	5,000		
To Commission A/c	20,000		
To Profit transferred to :			
Profit & Loss A/c 24,000			
Suresh 18,000	42,000		
	4,16,000		4,16,000

Suresh's Account

	Rs.		Rs.
To Joint Venture A/c	16,000	By Cash A/c	1,50,000
To Cash A/c	1,52,000	By Joint Venture A/c	18,000
	1,68,000		1,68,000

आनंद और प्रकाश ने 2:1 के अनुपात में लाभ और हानि को परस्पर बांटने के लिए संयुक्त उपक्रम करार किया। आनंद ने 60,000 रु. का सामान प्रकाश को सप्लाई किया तथा मालभाड़ा और बीमा पर 2,000 रु. खर्च किया। मार्ग में 5,000 रु. लागत का माल क्षतिग्रस्त हो गया और उसके लिए बीमा कंपनी से 3,000 रु. प्राप्त हुआ। प्रकाश ने सूचित किया कि शेष माल के 90% को उनकी मूल लागत के 30% लाभ पर बेचा गया। उपक्रम के अंत होते समय प्रकाश के पास अनबिका पड़ा हुआ शेष स्टॉक आग लगने से क्षतिग्रस्त हो गया। इस माल का बीमा नहीं कराया गया था और प्रकाश आनंद को इस प्रकार क्षतिपूर्ति करने को सहमत हो गया कि वह ऐसे माल की मूल लागत के योग के 80% का नकद भुगतान करेगा तथा इसके अतिरिक्त आनंद द्वारा किए गए आनुपातिक खर्च का भी वहन करेगा। संयुक्त उपक्रम के लाभ के अंश के अतिरिक्त प्रकाश को संयुक्त उपक्रम को निवल लाभ का 5% कमीशन भी मिलेगा, जिसकी गणना ऐसे कमीशन को देने के बाद की जाएगी।

प्रकाश द्वारा किए गए विक्रय व्यय का योग 1,000 रु. था। प्रकाश ने पहले 10,000 रु. अग्रिम राशि के रूप में भेजा था। आनंद को देय शेष राशि का भुगतान प्रकाश ने बैंक ड्राफ्ट से कर दिया। आनंद की पुस्तकों में संयुक्त उपक्रम खाता और प्रकाश का खाता बनाइए।

Working Notes: Rs.

हलः

In the Ledger of Anand
Joint Venture Account

Dr. **Cr.**

Particulars	**Amount**	**Particulars**	**Amount**
	Rs.		Rs.
To Purchase A/c (Goods Supplied)	60,000	By Bank A/c (Insurance)	3,000
To Bank A/c (expenses)	2,000	By Prakash (Sales)	64,350
To Prakash (expenses)	1,000	By Prakash (agreed value of damaged goods)	4,546
To Prakash (Commission-5/105 of Rs. 8,896)	424		
To Profit transferred to Profit & Loss A/c 5,648			
Prakash 2,824	8,472		
	71,896		71,896

Prakash'/s Account

	Rs.		Rs.
To Joint Venture A/c (Sales)	64,350	By Bank A/c (Advance)	10,000
To Joint Venture A/c (Claim for damaged goods)	4,546	By Joint Venture A/c (Expenses)	1,000
		By Joint Venture A/c (Commission)	424
		By Joint Venture A/c (Profit)	2,824
		By Bank A/c (Balance received by draft)	54,648
	68,896		68,896

1 Calculation of Sales:

Cost of goods sent	60,000
Less Damage in transit	5,000
Cost of remaining goods	55,000
Cost of goods sold (90% of Rs. 55,000)	49,500
Add Profit 30% of Rs. 49,500	14,850
Sales	64,350

2 Loss by fire borne by Prakash:

	Rs.
Cost of goods in stock (10% of 55,000)	5,500
Add Proportionate Expenses $= \frac{2,000 \times 5,500}{60,000}$	183
Total Loss	5,683
80% of this loss (5683 × 80/100)	4,546

3. मार्ग में माल नष्ट हो जाने से जो हानि हुई है वह उपक्रम से ही संबंधित है अतः हानि की गणना अलग से करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

17.5.2 सभी सह-उपक्रमियों की पुस्तकों में लेखा करना

लेखा करने की इस दूसरी विधि के अन्तर्गत संयुक्त उपक्रम से संबंधित लेन-देन सभी सह-उपक्रमियों द्वारा अपनी-अपनी लेखा पुस्तकों में रिकार्ड किए जाते हैं। सभी सह-उपक्रमियों

की लेखा पुस्तकों में संयुक्त उपक्रम खाते को पूरा करने के लिए अति आवश्यक है कि प्रत्येक उपक्रमी अपने लेन-देन का ब्यौरा अन्य उपक्रमियों को भेजे। इस विधि और पहली विधि में कोई खास अन्तर नहीं है। इस विधि में भी प्रत्येक उपक्रमी अपनी लेखा पुस्तकों में एक संयुक्त उपक्रम खाता तथा अन्य सह-उपक्रमियों के व्यक्तिगत खाते खोलता है तथा उनमें पहली विधि के अनुसार ही प्रविष्टियां की जाती हैं। दूसरी विधि के अन्तर्गत लेन-देन रिकार्ड करने को अच्छी तरह से समझने के लिए उदाहरण 3 देखिये।

उदाहरण 3

अरविन्द और बबलू एक संयुक्त उपक्रम में शामिल हुए और लाभ तथा हानि को वे बराबर-बराबर के अनुपात में परस्पर बांटने को सहमत हुए। इस उपक्रम के दौरान उन्होंने निम्नलिखित लेन-देन किया।

	रु0
अरविन्द ने नकद माल खरीदा	2,500
बबलू ने नकद माल खरीदा	7,000
अरविन्द ने भंडारण प्रभार का भुगतान किया	500
बबलू ने मालभाड़ा और बीमा की राशि का भुगतान किया	800
बबलू ने नकद माल बेचा	7,000
बबलू ने विक्रय पर 3% कमीशन प्राप्त किया	210
अरविन्द ने माल बेचा	5,000
अरविन्द को देय कमीशन	150
बबलू ने अनबिके माल को अपने स्वामित्व में लिया	560

यह मानते हुए कि अंत में उनके बीच खाते के हिसाब का निपटारा हो जाता है, अरविन्द और बबलू की लेखा पुस्तकों में आवश्यक लेजर खाते बनाइए।

हलः

Ledger of Arivind
Joint Venture Account

Dr. **Cr.**

Particulars	**Amount**	**Particulars**	**Amount**
	Rs.		Rs.
To Cash A/c (goods purchased)	2,500	By Babloo (sales)	7000
To Babloo (goods purchased)	7,000	By Cash (sales)	5,000
To Cash A/c (expenses)	500	By Babloo (stock taken over)	560
To Babloo (expenses)	800		
To Babloo (commission)	210		
To Commission A/c	150		
To Profit transferred to:			
Babloo 700			
Profit & Loss A/c 700	1,400		
	12,560		12,560

Babloo's Account

	Rs.		Rs.
To Joint Venture A/c (sales)	7,000	By Joint Venture A/c (goods purchased)	7,000
To Joint Venture A/c (stock taken over)	560	By Joint Venture A/c (expenses)	800
To Cash A/c (balance due paid)	1,150	By Joint Venture A/c (commission)	210
		By Joint Venture A/c (share of profit)	700
	8,710		8,710

Ledger of Babloo

Joint Venture Account

Dr. Cr.

	Rs.		Rs.
To Arvind (Goods purchased)	2,500	By Cash A/c (Sales)	7,000
To Cash A/c (Good)	7,000	By Arvind (Sales)	5,000
To Arvind (Expenses)	500	By Purchases A/c (Stock taken over)	560
To Cash A/c (Expenses)	800		
To Commission A/c	210		
To Arvind (Commission)	150		
To Profit transferred to:			
Arvind 700			
Profit & Loss A/c 700	1,400		
	12,560		12,560

Arvind's Account

	Rs.		Rs.
To Joint Venture A/c (sales)	5,000	By Joint Venture A/c (goods purchased)	2,500
		By Joint Venture A/c (expenses)	500
		By Joint Venture A/c (commission)	150
		By Joint Venture A/c (share of profit)	700
		By Cash A/c (Balance due received)	1,150
	5,000		5,000

17.5.3 मेमोरेंडम संयुक्त उपक्रम खाता विधि

इससे पहले लेखा रखने की जो विधि हमने पढ़ी है इसके अन्तर्गत प्रत्येक सह-उपक्रमी अपनी लेखा पुस्तकों में संयुक्त उपक्रम खाता खोलता है तथा उपक्रम से संबंधित समस्त लेन-देन इसमें रिकार्ड किए जाते हैं। परन्तु 'मेमोरेंडम संयुक्त उपक्रम विधि' के अन्तर्गत प्रत्येक सह-उपक्रमी अपनी लेखा पुस्तकों में केवल वही लेन-देन रिकार्ड करता है जो उसने उपक्रम के लिए किया है अर्थात् अन्य सह-उपक्रमियों के लेन-देन को रिकार्ड नहीं करता। इस विधि के अन्तर्गत प्रत्येक उपक्रमी अपनी लेखा पुस्तकों में अन्य सह-उपक्रमियों के नाम सहित एक संयुक्त उपक्रम खाता खोलता है, वह व्यक्तिगत खाते की तरह माना जाता है। उदाहरण के लिए यदि उपक्रम में **A** तथा **B** दो उपक्रमी हैं तब **A** अपनी पुस्तकों में Joint Venture with B Account खोलेगा तथा **B** की पुस्तकों में यह Joint Venture with A Account होगा। प्रत्येक सह-उपक्रमी अपनी पुस्तकों में केवल उन्हीं लेन-देनों को रिकार्ड करेगा जो स्वयं उसने उपक्रम के लिए किया है। उदाहरण के लिए यदि **A** ने संयुक्त उपक्रम के लिए अपना माल खरीदा है तो केवल **A** ही इस लेन-देन को अपनी पुस्तक में रिकार्ड करेगा, अन्य उपक्रमी इसे रिकार्ड नहीं करेंगे। इसी प्रकार यदि **B** द्वारा कुछ माल बेचा जाता है तो केवल **B** ही इसे अपनी पुस्तकों में रिकार्ड करेगा। यह खाता व्यक्तिगत खाते के समान होता है। अतः उपक्रम से हुए लाभ-हानि का पता इस खाते से नहीं चलेगा। उपक्रम पर लाभ-हानि को जानने के लिए मेमोरेंडम संयुक्त उपक्रम खाता बनाया जाता है, यह लाभ-हानि खाते की तरह होता है।

मान लीजिए कि किसी उपक्रम में **A** तथा **B** दो व्यक्ति शामिल होते हैं और वे उपक्रम के लिए कुछ लेन-देन करते हैं, इसके लिए प्रत्येक उपक्रमी अपनी पुस्तकों में निम्नलिखित प्रविष्टियां करेगा :

1. **A नकद माल खरीदता है :**

   इस लेन-देन को केवल **A** की पुस्तकों में ही लिखा जाएगा। इसके लिए प्रविष्टि होगी :

   Joint Venture with B A/c Dr.
   To Cash A/c

2. **संयुक्त उपक्रम के लिए A कुछ व्यय करता है :**

   इसे केवल **A** की पुस्तकों में ही रिकार्ड किया जाएगा और निम्नलिखित प्रविष्टि होगी :

   Joint Venture with B A/c Dr.
   To Cash A/c

3. **B ने नकद माल बेचा :**

   इसके लिए **A** की पुस्तकों में कोई प्रविष्टि नहीं की जाएगी। परन्तु इसके लिए **B** की पुस्तकों में निम्नलिखित प्रविष्टि की जाएगी :

   Cash Account Dr.
   To Joint Venture with A A/c

4. **B कुछ राशि A को भेजता है :**

अ) **B** की पुस्तकों में इसकी निम्नलिखित प्रविष्टि होगी :

Joint Venture with A A/c Dr.
To Cash/Bank A/c

ब) **A** की पुस्तकों में इसकी प्रविष्टि निम्नलिखित प्रकार से की जाएगी :

Cash/Bank A/c Dr.
To Joint Venture with B A/c

जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि उपक्रम पर हुए लाभ-हानि ज्ञात करने के लिए हम एक 'मेमोरेंडम संयुक्त उपक्रम खाता' बनाते हैं। यह खाता ठीक लाभ-हानि खाते की ही तरह बनाया जाता है। क्योंकि यह खाता दोहरी प्रविष्टि प्रणाली का अंग नहीं होता। इसलिए इस खाते के नाम के पहले मेमोरेंडम शब्द जोड़ दिया जाता है।

इस खाते को बनाने की विधि बहुत ही सरल है। अन्य सह-उपक्रमियों द्वारा दी गई सूचनाओं के आधार पर इस खाते को बनाया जाता है। प्रत्येक सह-उपक्रमी के व्यक्तिगत खाते के डेबिट पक्ष में जो प्रविष्टियां की गई हैं उन्हें ही 'मेमोरेंडम खाते' के डेबिट में लिख देते हैं और इसी प्रकार उनके व्यक्तिगत खाते के क्रेडिट में जो प्रविष्टियां हैं उन्हें मेमोरेंडम खाते के क्रेडिट पक्ष में लिख देते हैं। हां, इस संबंध में यह ध्यान रहे कि ऐसे लेन-देन, जो व्यय या आय से संबंधित नहीं है, उन्हें 'मेमोरेंडम खाते' में शामिल नहीं किया जाता है। इस खाते के डेबिट और क्रेडिट पक्षों के योग का अंतर उपक्रम पर लाभ या हानि दर्शाता है। इस प्रकार लाभ-हानि की जो राशि ज्ञात होती है उसे सह-उपक्रमी आपस में निर्धारित लाभ-हानि के अनुपात में बांट लेते हैं।

प्रत्येक उपक्रमी केवल अपने के लाभ-हानि के लिए प्रविष्टि करता है। लाभ की स्थिति में निम्नलिखित प्रविष्टि होगी।

A की लेखा पुस्तकों में

Joint Venture with B A/c Dr.
To Profit & Loss A/c

B की लेखा पुस्तकों में

Joint Venture with A A/c Dr.
To Profit & Loss A/c

हानि होने पर इसके विपरीत निम्नलिखित प्रविष्टियां की जाती हैं :

A की पुस्तकों में

Profit and Loss A/c Dr.
To Joint Venture with B A/c

B की पुस्तकों में

Profit and Loss A/c Dr.
To Joint Venture with A A/c

अन्त में प्रत्येक उपक्रमी अपनी पुस्तक में 'Joint Venture with ..... Account" का शेष ज्ञात करते हैं और राशि को प्राप्त करके या भुगतान करके खाते का निबटारा करते हैं। मेमोरेंडम संयुक्त उपक्रम खाता विधि को अच्छी तरह से समझने के लिए उदाहरण 4 को देखिए।

उदाहरण 4

माल को खरीदने और बेचने के लिए दिल्ली के प्रेम और कलकत्ता के सतीश एक संयुक्त उपक्रम में शामिल हुए। लाभ और हानि का बंटवारा 2:1 के अनुपात में होगा।

प्रेम ने 40,000 रु. में माल खरीदा और इसे सतीश के पास भेज दिया। इस संबंध में उसे मालभाड़ा और बीमा के लिए 3,000 रु. खर्च करना पड़ा। प्रेम को 400 रु. विविध व्यय पर भी लगाने पड़े। सतीश ने कुछ माल 55,000 रु. में बेचा और 6,000 रु. खर्चों पर लगाया। 7,000 रु. के अनबिके माल को सतीश ने स्वयं ले लिया। प्रेम को शेष देय राशि को सतीश ने बैंक ड्राफ्ट से भेज दिया।

प्रत्येक पक्ष के लेजर में संयुक्त उपक्रम खाते में उसके अपने लेन-देनों का लेखा होता है।

क) मेमोरेंडम संयुक्त उपक्रम खाता, (ख) प्रेम के लेजर में सतीश के खाते के साथ संयुक्त उपक्रम खाता तथा (ग) सतीश के लेजर में प्रेम के खाते के साथ संयुक्त उपक्रम खाता बनाइए।

हलः

Ledger of Prem
Joint Venture with Satish Account

Dr. **Cr.**

Particulars	**Amount**	**Particulars**	**Amount**
	Rs.		Rs.
To Bank A/c (purchases)	40,000	By Bank A/c (In final settlement)	51,800
To Bank A/c (freight & ins.)	3,000		
To Bank A/c (Sundry Exp.)	400		
To Profit & Loss A/c (share of profit)	8,400		
	51,800		51,800

Ledger of Satish
Joint Venture with Prem Account

Dr. **Cr.**

	Rs.		Rs.
To Bank A/c (expenses)	6,000	By Bank A/c (sales)	55,000
To Profit & Loss A/c	4,200	By Purchases A/c (stock taken over)	7,000
To Bank A/c (final settlement)	51,800		
	62,000		62,000

		Rs.			Rs.
To Prem:					
Goods	40,000		By Sale Proceeds	55,000	
Freight insurance	3,000		Stock taken over	7,000	62,000
Sundry Expenses	400	43,400			
To Satish (expenses)		6,000			
To Profit transferred to					
Prem	8,400				
Satish	4,200	12,600			
		62,000			62,000

संयुक्त उपक्रम पर ब्याज का लेखा : जब सभी सह-उपक्रमी उपक्रम में पृथक्-पृथक् पूंजी लगाते हैं तथा अलग-अलग तारीखों को उन्हें राशियां प्राप्त होती हैं तो वे आपस में समझौता कर लेते हैं कि निश्चित दर पर प्रत्येक उपक्रमी को ब्याज दिया जाएगा। संयुक्त उपक्रम के व्यापार में प्रत्येक सह-उपक्रमी जितनी राशि लगाता है उसे उस राशि पर ब्याज मिलेगा तथा जो उपक्रमी संयुक्त उपक्रम की राशि को प्राप्त करता है उससे ब्याज लिया जाएगा। इस संबंध में यह ध्यान रहे कि संयुक्त उपक्रम खाते में हम केवल उपक्रमी को देय या उससे प्राप्य ब्याज की निवल राशि को ही लिखते हैं। इस प्रकार संयुक्त उपक्रम पर लाभ-हानि की राशि ज्ञात करने से पूर्व ब्याज के लिए भी लेखा कर लिया जाता है। स्पष्टीकरण के लिए उदाहरण 5 को देखिये।

उदाहरण 5

आनंद और बिमल एक संयुक्त उपक्रम में शामिल हुए तथा उसमें वे लाभ-हानि का परस्पर बंटवारा बराबर-बराबर अनुपात में करते हैं। 1 जनवरी, 2018 को आनंद ने 5,000 रु. में नकद माल खरीदा तथा बिमल ने 1,000 रु. मालभाड़ा आदि पर लगाया। उसी दिन बिमल ने 10,000 रु. का माल उधार खरीदा। अन्य व्यय निम्नलिखित प्रकार से किए गए।

1-2-2018	1,000 रु. विमल द्वारा
1-3-2018	500 रु. आनंद द्वारा

इनमें से प्रत्येक ने निम्नलिखित प्रकार से विक्रय किया :

15-1-2018	3,000 रु. आनंद द्वारा
31-1-2018	6,000 रु. बिमल द्वारा
15-2-2018	3,000 रु. आनंद द्वारा
1-3-2018	4,000 रु. बिमल द्वारा

माल के लिए लेनदारों को निम्नलिखित प्रकार से भुगतान किए गए :

1-2-2018	5,000 रु. आनंद द्वारा
1-3-2018	5,000 रु. बिमल द्वारा

1 मार्च, 2018 को बिमल ने शेष स्टॉक को 9,000 रु. में स्वयं ले लिया। उसी दिन इन दोनों सह-उपक्रमियों के बीच खाते के हिसाब का निपटारा नकद भुगतान द्वारा कर दिया गया। सह-उपक्रमियों को प्रतिवर्ष 12% की दर से ब्याज मिलता है। उपक्रमियों की लेखा पुस्तकों में मेमोरेंडम संयुक्त उपक्रम खाता विधि के द्वारा आवश्यक लेजर खाता बनाइए।

हल:

Memorandum Joint Venture Account

Dr. **Cr.**

Particulars	Amount	Particulars	Amount
	Rs.		Rs.
To Anand (Cost of goods)	5,000	By Anand (Sales)	6,000
To Bimal (Cost of goods)	10,000	By Bimal (Sales)	10,000
To Bimal (Freight etc.)	1,000	By Bimal (Interest)	50
To Anand (expenses)	500	By Bimal (Stock taken)	9,000
To Bimal (expenses)	1,500		
To Anand (interest)	135		
Anand 3,457			
Bimal 3,458	6,915		
	25,050		25,050

Anand's Ledger

Jont Venture with Bimal Account

Dr. **Cr.**

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2018		Rs.	2018		Rs.
Jan. 1	To Bank A/c (Purchases)	5,000	Jan. 15	By Bank A/c (sales)	3,000
Feb. 1	To Bank A/c (creditors)	5,000	Feb. 15	By Bank A/c (sales)	3,000
Mar. 1	To Bank A/c (expenses)	5,00	Mar. 15	By Bank (Final settlement)	8,092
Mar. 31	To Interest A/c	135			
Mar. 31	To Profit & Loss A/c	3,457			
		14,092			14,092

Bimal's Ledger

Jont Venture with Anand Account

Dr. **Cr.**

Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Amount
2018		Rs.	2018		Rs.
Jan. 1	To Bank A/c (freight)	1,000	Jan. 31	By Bank (sales)	6,000
Feb. 1	To Bank A/c (expenses)	1,500	Mar. 31	By Bank (sales)	4,000
Mar. 1	To Bank A/c (creditors)	5,000	Mar. 31	By Goods (stock taken over)	9,000
Mar. 31	To Profit & Loss A/c	3,458	Mar. 31	By Interest	50
Mar. 31	To Bank A/c (Amount in final settlement)	8,092			
		19,050			19,050

Payments by Anand

Date	Amount	Months	Product	
1-1-18	Rs.5,000	3	15,000	(5,000 × 3)
1-3-18	Rs. 500	1	500	(500 × 1)
1-2-18	Rs. 5,000	2	10,000	(5,000 × 2)
			25,500	

Interest $= 25{,}500 \times \frac{12}{100} \times \frac{1}{12} =$ Rs. 255

Receipts by Anand

15-1-18	Rs. 3,000	$2\frac{1}{2}$	7,500	(3,000 ×)
15-2-18	Rs. 3,000	$1\frac{1}{2}$	4,500	(3,000 ×)
			12,000	

Interest $= 12{,}000 \times \frac{12}{100} \times \frac{1}{12} =$ Rs.120

Net Interest due to Anand = 255 — 120 = Rs. 135

Payments by Bimal

1-1-18	Rs. 1,000	3	3,000	(1000 × 3)
1-2-18	Rs. 1,500	2	3,000	(1,500 × 2)
1-3-18	Rs. 5,000	1	5,000	(5,000 × 1)
			11,000	

Interest $= 11{,}000 \times \frac{12}{100} \times \frac{1}{12} =$ Rs.110

Receipts by Bimal

31-1-18	Rs. 6,000	2	12,000	(6,000 × 2)
1-3-18	Rs. 4,000	1	4,000	(4,000 × 1)
			16,000	

Interest $= 16{,}000 \times \frac{12}{100} \times \frac{1}{12} =$ Rs.160

Net Interest Due from Bimal

= 160–110 = Rs.50

बोध प्रश्न ख

1. सही उत्तर पर (√) निशान लगाइए।

   क) यदि लेखा रखने वाले सह-उपक्रमी ने अपने स्टॉक में से लागत मूल्य पर माल उपक्रम को दिया, तो इसे डेबिट किया जाएगा।

      i) विक्रय खाते को

      ii) क्रय खाते को

      iii) स्टॉक खाते को

   ख) मेमोरेंडम संयुक्त उपक्रम खाता विधि में, सह-उपक्रमी लेखा करता है।

      i) केवल अपने लेन-देनों का

      ii) केवल अन्य सह-उपक्रमियों के लेन-देनों का

      iii) संयुक्त उपक्रम के समस्त लेन-देनों का

   ग) मेमोरेंडम संयुक्त उपक्रम खाता यह ज्ञात करने के लिए बनाया जाता है कि

      i) सह-उपक्रमियों से प्राप्य राशि क्या है

      ii) संयुक्त उपक्रम पर लाभ-हानि कितनी है

      iii) उपरोक्त में कोई भी नहीं

   ध) लेखा करने वाले सह-उपक्रमी के लाभ के हिस्से की राशि क्रेडिट की जाती है

      i) लाभ-हानि खाते को

      ii) उसके व्यक्तिगत खाते को

      iii) उपरोक्त में से किसी में भी नहीं

   ड़) संयुक्त उपक्रम में डूबे ऋण की राशि को डेबिट किया जाता है।

      i) अशोध्य ऋण खाते में

      ii) देनदार के व्यक्तिगत खाते में

      iii) संयुक्त उपक्रम खाते को

17.5.4 पृथक् लेखा पुस्तकें रखना (Separate Set of Books)

अभी तक आपने संयुक्त उपक्रम के लेन-देनों का लेखा रखने की उन विधियों का अध्ययन किया है जिनमें पृथक् लेखा पुस्तकें नहीं रखी जाती है। अब हम संयुक्त उपक्रम के लेन-देनों को रखने की उस विधि का अध्ययन करेंगे जिसके अंतर्गत सह-उपक्रमी पृथक् पुस्तकें रखने के लिए सहमत होते हैं। जब पृथक पुस्तकें रखी जाती हैं तो दोहरी प्रविष्टि के सिद्धान्त के आधार पर पृथक् लेखा एका (separate accounting entity) के रूप में संयुक्त रूप में संयुक्त उपक्रम के लेन-देनों का लेखा किया जाता है। इस विधि के अंतर्गत निम्नलिखित खाते बनाए जाते हैं :

1. संयुक्त बैंक खाता (Joint Bank Account)
2. संयुक्त उपक्रम खाता (Joint Venture Account)
3. प्रत्येक उपक्रमी का व्यक्तिगत खाता (Personal Accounts of Co-Venturers)

संयुक्त बैंक खाता एक साधारण बैंक खाते के समान वास्तविक खाता होता है। सभी उपक्रमी अपने-अपने हिस्से की पूंजी इस खाते में जमा करा देते हैं। संयुक्त उपक्रम लाभ-हानि खाते के समान है जिसमें उपक्रम के समस्त व्यय एवं आय लिखी जाती हैं। उपक्रमियों के व्यक्तिगत खाते केवल यही दर्शाते हैं कि उन्होंने क्या व्यय किया और उन्होंने क्या रकम प्राप्त की।

इस विधि के अंतर्गत की जाने वाली जर्नल प्रविष्टियों को अब देखते हैं।

1. सह-उपक्रमियों द्वारा अपने हिस्से की पूंजी लगाने पर :

Joint Bank A/c Dr.
To Co-venturers Personal A/c

2. सह-उपक्रमियों द्वारा उपक्रम के लिए माल दिए जाने पर :

Joint Venture A/c Dr.
To Co-venturers Personal A/c

3. संयुक्त उपक्रम के लिए माल खरीदे जाने पर :

क) नकद खरीद पर

Joint Venture A/c Dr.
To Joint Bank A/c

ख) उधार खरीद पर

Joint Venture A/c Dr.
To Creditor's Personal A/c

यहां यह स्मरण रहे कि जब संयुक्त उपक्रम के लिए माल खरीदा जाता है तो इसे संयुक्त उपक्रम में डेबिट किया जाता है, क्रय खाते में नहीं।

4. संयुक्त उपक्रम पर व्ययों का भुगतान करने पर :

क) यदि संयुक्त बैंक खाते में से भुगतान किया गया है तो

Joint Venture A/c Dr.
To Joint Bank A/c

ख) यदि सह-उपक्रमी ने भुगतान किया है तब

Joint Venture A/c Dr.
To Co-venturer's Personal A/c

5. माल को बेचने पर :

क) नकद माल बेचने पर

Joint Bank A/c Dr.
To Joint Venture A/c

ख) उधार माल बेचने पर

Debtor's Personal A/c		Dr.
	To Joint Venture A/c	

6. लेनदारों का भुगतान करने पर :

Creditors' Personal A/c		Dr.
	To Joint Bank Account	

7. देनदारों से रकम प्राप्त होने पर :

Joint Bank A/c		Dr.
	To Debtor's Personal A/c	

8. किसी उपक्रमी को दिए जाने वाले कमीशन, ब्याज आदि के लिए :

Joint Venture A/c		Dr.
	To Co-venturer's Personal A/c	

9. उपक्रमी द्वारा अबिक्रीत माल लिए जाने पर :

Co-venturer's Personal A/c		Dr.
	To Joint Venture A/c	

10. अब यदि हम संयुक्त उपक्रम खाते का शेष निकाले तो यह उपक्रम पर हुए लाभ-हानि की राशि प्रकट करेगा। इस लाभ या हानि की राशि को सब सह-उपक्रमियों में लाभ-हानि के अनुपात में बांट दिया जाता है। लाभ अथवा हानि के बंटवारे के लिए निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है।

क) **लाभ होने पर :**

Joint Venture A/c		Dr.
	To Co-venturers' Personal A/cs	

ख) **हानि होने पर :**

Co-venturers' Personal A/c		Dr.
	To Joint Venture A/c	

11. इस प्रकार संयुक्त उपक्रम खाता बंद हो जाता है। लाभ या हानि की राशि प्रत्येक उपक्रमी के व्यक्तिगत खाते में अंतरित करने के बाद अब आप प्रत्येक उपक्रमी की देय राशि सरलता से ज्ञात कर सकते हैं। जब उपक्रमियों को भुगतान किया जाता है तो निम्नलिखित प्रविष्टि की जाती है।

Co-venturers' Personal A/cs		Dr.
	To Joint Bank A/c	

अब आप यह देखेंगे कि संयुक्त बैंक खाते में ठीक उतनी ही रकम शेष बची है जिससे कि सभी सह-उपक्रमियों को भुगतान किया जा सके। जब रकम का भुगतान कर दिया जाता है तो संयुक्त बैंक खाता तथा उपक्रमियों के व्यक्तिगत खाते भी समाप्त हो जाते हैं।

12. **नकद छूट का लेखा :** जब कोई लेनदार नकद छूट देता है तो संयुक्त उपक्रम के लिए यह लाभ का एक मद होता है। अतः इसे संयुक्त उपक्रम खाते में क्रेडिट किया जाता है। इसके लिए निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि की जाती है।

Creditor's Personal A/c Dr.
To Joint Venture A/c

इसी प्रकार जब देनदारों को नकद छूट दी जाती है तो यह संयुक्त उपक्रम के लिए हानि की मद होती है, अतः इसे संयुक्त उपक्रम खाते में डेबिट किया जाता है। इसके लिए निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि की जाती है।

Joint Venture A/c Dr.
To Debtor's Personal A/c

अशोध्य ऋणों के लिए भी इसी प्रकार प्रविष्टि की जाती है। संयुक्त उपक्रम व्यापार के लिए जब पृथक् लेखा पुस्तकें रखी जाती हैं, तब उनसे संबंधित खाते बनाने की विधि को समझने के लिए उदाहरण 6 देखिए।

उदाहरण 6

विकास और सलिल किसी संयुक्त स्टॉक कंपनी के लिए एक भवन बनाने के लिए संयुक्त उपक्रम में शामिल हुए। ठेके की कीमत 25 लाख रुपए तय हुई जिसमें 20 लाख रुपए का नकद भुगतान होना था और शेष राशि का भुगतान कंपनी के पूर्णतः दत्त ईक्विटी शेयरों के रूप में होना था। उन्होंने एक संयुक्त बैंक खाता खोला जिसमें विकास ने 6 लाख रु. जमा किया तथा सलिल ने 3 लाख रु. अदा किया। वे हानि और लाभ को आपस में 2:1 के अनुपात में बांटने को सहमत हुए।

उन्होंने 3 लाख रु. का सामान नकद खरीदा तथा 10 लाख रु. अनिल से उधार खरीदा। उन्होंने मजदूरी आदि के लिए 4,50,000 रु. और अन्य व्ययों के लिए 70,000 रु. का भुगतान किया। विकास और सलिल ने 2,00,000 रु. और 80,000 रु. का सामान सप्लाई किया। आर्चिटेक्ट की फी 10,000 रु. का भुगतान विकास ने किया। ठेके का काम समय से पूरा हो गया। और उसके लिए मिलने वाली कीमत समय से मिल गई। अनिल को 80,000 रु. देकर उसका हिसाब चुकता कर दिया गया। विकास कंपनी के शेयरों को 4,40,000 रु. में लेने को सहमत हो गया। शेष सामग्री को सलिल ने 70,000 रु. के सहमत मूल्य पर ले लिया।

संयुक्त उपक्रम व्यवसाय के लिए अलग से लेखा पुस्तकें रखी जाती हैं। आवश्यक लेजर खाते बनाइए।

हलः

Joint Venture Account

Dr. **Cr.**

Particulars	**Amount**	**Particulars**	**Amount**
	Rs.		Rs.
To Joint Bank A/c (Material)	3,00,000	By Joint Bank A/c	20,00,000
To Anil (Credit purchases)	10,00,000	By Equity Shares A/c	5,00,000
To Joint Bank A/c (Wages)	4,50,000	By Anil (Discount)	20,000
To Joint Bank A/c (Expenses)	70,000	By Salil (Material taken over)	70,000
To Vikas (Material)	2,00,000		
To Salil (Material)	80,000		
To Vikas (Architects fee)	10,000		

To Equity Shares A/c (Loss)		60,000			
To Profit transferred to:					
Vikas	2,80,000				
Salil	1,40,000	4,20,000			
		25,90,000			25,90,000

Joint Bank Account

	Rs.		Rs.
To Vikas	6,00,000	By Joint Venture A/c (Material)	3,00,000
To Salil	3,00,000	By Joint Venture A/c (Wages)	4,50,000
To Joint Venture A/c	20,00,000	By Joint Venture A/c (Expenses)	70,000
		By Anil (creditor paid)	9,80,000
		By Vikas	6,50,000
		By Salil	4,50,000
	29,00,000		29,00,000

Vikas's Account

	Rs.		Rs.
To Equity Shares A/c	4,40,000	By Joint Bank A/c	6,00,000
To Joint Bank A/c	6,50,000	By Joint Venture (Material)	2,00,000
		By Joint Venture(Architect fees)	10,000
		By Joint Venture (Profit)	2,80,000
	10,90,000		10,90,000

Salil's Account

	Rs.		Rs.
To Joint Venture (Material)	70,000	By Joint Bank A/c	3,00,000
To Joint Bank A/c	4,50,000	By Joint Venture A/c (Material)	80,000
		By Joint Venture A/c (Profit)	1,40,000
	5,20,000		5,20,000

Equity Shares Account

	Rs.		Rs.
To Joint Venture	5,00,000	By Vikas	4,40,000
		By Joint Venture A/c (Loss transferred)	60,000
	5,00,000		5,00,000

Anil's Account

	Rs.		Rs.
To Joint Bank A/c	9,80,000	By Joint Venture A/c (Materials)	10,00,000
To Joint Venture A/c (Discount)	20,000		
	10,00,000		10,00,000

शेयरों का अभिगोपन (Underwriting of Shares) : आइए अब हम एक ऐसा उदाहरण लेते हैं जिसमें सह-उपक्रमियों ने किसी सीमित पूंजी वाली कंपनी के शेयर या डिबेन्चर अभिगोपन करने की अपनी स्वीकृति दी हो। सरल शब्दों में अभिगोपन का अर्थ है कि जितने शेयर जनता द्वारा नहीं खरीदे गये हैं उन्हें अभिगोपक स्वयं खरीद लेगा। इस सेवा के लिए अभिगोपक को कुछ कमीशन दिया जाता है जो कि अंशतः शेयरों में तथा शेष नकद होता है। अभिगोपन कमीशन के लिए जो शेयर प्राप्त होते हैं उन्हें या तो जनता में बेच दिया जाता है या कोई उपक्रमी उन्हें निश्चित मूल्य पर खरीद लेता है। संयुक्त उपक्रम के लिए पृथक् लेखा पुस्तकें रखी जाने पर जब शेयरों के अभिगोपन के लिए संयुक्त उपक्रम व्यापार किया जाता है तो खाते रखने की विधि को समझने के लिए उदाहरण 7 देखिये।

उदाहरण 7

A और **B** किसी लिमिटेड कंपनी के 10 रु. के प्रत्येक शेयर के मूल्य के 1,00,000 शेयरों के सममूल्य पर अभिदान की गारंटी देने के लिए तथा लाभ और हानि को आपस में 2:3 के अनुपात में बांटने के लिए एक संयुक्त उपक्रम में शामिल हुए। कंपनी के साथ शर्तें हैं : नकद देय 4½% कमीशन तथा कंपनी के 6,000 पूर्णतः दत्त शेयर। शेयरों को जारी करने संबंधी खर्चों को देने को वे सहमत हो गए। ये खर्च किए गए : विज्ञापन 5,000 रु., मुद्रण और लेखन सामग्री 2,000 रु. और डाक टिकट 600 रु.। इन सभी खर्चों का भुगतान **A** ने किया। जनता ने केवल 88,000 शेयर ही खरीदे। करार के अधीन के शेष शेयरों को **A** और **B** ने ले लिया और इसके लिए उन्होंने आवश्यक नकद राशि बराबर मात्रा में दिया। कमीशन की प्राप्ति नकद रूप में होती है और इसे सह-उपक्रमी 4:5 के अनुपात में आपस में बांट लेते हैं। उसके पश्चात् संयुक्त उपक्रम की समस्त घृति (holding) को बाजार में दलालों के माध्यम से इस प्रकार से बेच दिया जाता है : 9 रु. प्रति शेयर की दर से 25%, 8.75 रु. प्रति शेयर की दर से 50%, 8.50 रु. प्रति शेयर की दर से 15% तथा 10% को क और ख न बराबर मात्रा में 8 रु. प्रति शेयर की सहमत कीमत पर ले लिया। संयुक्त उपक्रम खाता, संयुक्त बैंक खाता, शेयर खाता तथा अंतिम निपटारा खाते को दिखाते हुए **A** और **B** के खाते बनाइए।

हलः

Joint Venture Account

Dr. Cr.

Particulars		Amount	Particulars	Amount
		Rs.		Rs.
To A			By Joint Bank A/c (commission)	45,000
Advertisement	5,000		By Shares A/c (commission)	60,000
Printing	2,000			
Postage	600	7,600		
To Shares A/c (loss on sale)		23,400		
To Profit transferred to :				
A	29,600			
B	44,400	74,000		
		1,05,000		1,05,000

Joint Bank Account

		Rs.		Rs.
To A (contribution)		60,000	By Shares A/c	1,20,000
To B (contribution)		60,000	By A (commission)	20,000
To Joint Venture A/c (commission)		45,000	By B (commission)	25,000
To Shares A/c (sale for cash)			By A (final settlement)	70,000
25%	40,500		By B (final settlement)	72,200
50%	78,750			
10%	22,950	1,42,200		
		3,07,200		3,07,200

Shares Account

Particulars	Amount	Particulars	Amount
	Rs.		Rs.
To Joint Bank A/c	1,20,000	By Joint Bank A/c (Sale of shares)	40,500
To Joint Venture (Commission)	60,000	By Joint Bank A/c (Sale of shares)	78,750
		By Joint Bank A/c (Sale of shares)	22,950
		By A (shares taken over)	7,200
		By A (shares taken over)	7,200
		By Joint venture A/c (Loss)	23,400
	1,80,000		1,80,000

A's Account

Particulars	Amount	Particulars	Amount
	Rs.		Rs.
To Joint Bank A/c (Commission)	20,000	By Joint Venture A/c (Expenses)	7,600
To Shares A/c	7,200	By Joint Venture A/c (Contribution)	60,000
To Joint Bank A/c (Final settlement)	70,000	By Joint Venture A/c (Profit)	29,600
	97.200		97.200

B's Account

Particulars	Amount	Particulars	Amount
	Rs.		Rs.
To Joint Bank A/c (Commission)	25,000	By Joint Bank A/c (Contribution)	60,000
To Shares A/c	7,200		
To Joint Bank A/c (Final settlement)	72,200	By Joint Venture A/c (Profit)	44,400
	1,04,400		1,04,400

Working Notes

1. **Distribution of commission received in cash**

   4 ½ % of 10,00,000 = Rs. 45,000

   A's share 4/9 × 45,000 = Rs. 20,000

   B's share 5/9 45,000 = Rs. 25,000

2. **Treatment of shares received:**

   Shares received by way of commission 6,000

   Shares not subscribed by public 12,000

   Total no. of shares received 18,000

a) Sold for Cash Rs.

25% of 18,000 i.e... 4,500 shares sold @ Rs. 9 per share 40,500

50% of 18,000 i.e.. 9,000 shares sold @ Rs. 8.75 per share 78,750

15% of 18,000 i.e.. 2,700 shares sold @ Rs. 8.50 per share 22,950

b) Divided amongst A and B

10% of the remaining shares i.e. 1,800 shares are taken over equally by A & B at an agreed price of Rs. 8 per share.

A: 900 shares @ Rs. 8 per share Rs. 7,200

B: 900 shares @ Rs. 8 per share Rs. 7,200

बोध प्रश्न ग

1. संयुक्त उपक्रम के लिए पृथक् लेखा पुस्तकें रखने की क्या आवश्यकता है ?

   .....

   .....

   .....

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

   i) संयुक्त बैंक खाता ..... खाते के समान होता है।

   ii) जब कोई सह-उपक्रमी माल के रुप में अपना भाग प्रदान करता है तो ..... खाते को डेबिट किया जाता है।

   iii) संयुक्त बैंक खाते में से भुगतान की जाने वाली समस्त राशियां .... खाते को क्रेडिट की जाती हैं।

   iv) जब सह-उपक्रमी अपने हिस्से की राशि नकद देता है तो इसे संयुक्त बैंक खाते के डेबिट पक्ष में तथा ..... के क्रेडिट पक्ष में लिखते हैं।

   v) शेयरों के अभिगोपन की स्थिति में ..... शेयर अभिगोपक द्वारा ले लिए जाते हैं।

17.6 सारांश

संयुक्त उपक्रम दो या अधिक व्यक्तियों के मध्य अस्थायी साझेदारी होती है जो किसी विशेष व्यापार या उद्यम को संयुक्त रूप से करने के लिए सहमत होते हैं। निश्चित कार्य या उद्यम के पूर्ण होते ही संयुक्त उपक्रम अपने आप समाप्त हो जाता है। संयुक्त उपक्रम कई तरह से साझेदारी तथा प्रेषण से भिन्न होता है। संयुक्त उपक्रम व्यापार के लेखों को चार तरीकों से रखा जा सकता है : (i) समस्त लेन-देन किसी एक सह-उपक्रमी की लेखा पुस्तकों में रखे जाते हैं, (ii) प्रत्येक उपक्रमी अपनी-अपनी पुस्तकों में उपक्रम का लेखा करता है, (iii) प्रत्येक उपक्रमी अपनी पुस्तकों में केवल स्वयं के लेन-देन ही लिखता है तथा कार्य के पूर्ण हो जाने पर लाभ-हानि ज्ञात करने के लिए मेमोरेंडम संयुक्त उपक्रम खाता बनाया जाता है, या (iv) संयुक्त उपक्रम के व्यापार के लिए पृथक् पुस्तकें रखी जाएं एवं बैंक में एक संयुक्त खाता खोला जाए।

पहली विधि में केवल एक उपक्रमी ही उपक्रम के लेन-देनों का लेखा करता है, इसके लिए वह एक संयुक्त उपक्रम खाता तथा उपक्रमियों के व्यक्तिगत खाते बनाता है। दूसरी विधि के अंतर्गत, प्रत्येक उपक्रमी अपनी पुस्तकों में संयुक्त उपक्रम खाता तथा अन्य सह-उपक्रमियों के व्यक्तिगत खाते खोलता है। संयुक्त उपक्रम खाता लाभ-हानि खाते का कार्य करता है। तीसरी विधि में कोई संयुक्त उपक्रम खाता नहीं खोला जाता। प्रत्येक उपक्रमी अपनी पुस्तकों में अन्य सह-उपक्रमियों के नाम सहित एक उपक्रम खाता खोलता है तथा उपक्रम पर हुए लाभ-हानि को ज्ञात करने के लिए मेमोरेंडम संयुक्त उपक्रम खाता बनाया जाता है।

उपरोक्त तीन विधियों में संयुक्त उपक्रम व्यापार के लिए पृथक लेखा पुस्तकें नहीं रखी जाती बल्कि सब लेन-देन सह-उपक्रमियों की पुस्तकों में ही रिकार्ड कर लिए जाते हैं। परन्तु चौथी विधि के अंतर्गत संयुक्त उपक्रम व्यापार को एक पृथक् लेखा एका मानकर,

दोहरी प्रविष्टि प्रणाली के नियमों के अनुसार, पृथक् लेखा पुस्तकों में उपक्रम के लेन-देन को रिकार्ड किया जाता है। इस विधि के अंतर्गत मुख्यतः निम्नलिखित खाते बनाये जाते हैं। : (i) संयुक्त उपक्रम खाता, (ii) संयुक्त बैंक खाता, तथा (iii) सह-उपक्रमियों के व्यक्तिगत खाते। इस स्थिति में भी संयुक्त उपक्रम खाता लाभ-हानि खाते का कार्य करता है।

17.7 शब्दावली

सह-उपक्रमी (Co-venturer) : ऐसे व्यक्ति जो संयुक्त उपक्रम व्यापार को चलाने के लिए सहमत हुए हैं।

संयुक्त उपक्रम (Joint Venture) : दो या अधिक व्यक्तियों के मध्य ऐसी अस्थायी साझेदारी जो किसी विशेष व्यापार या उद्यम को करने के लिए सहमत होते हैं।

मेमोरेंडम संयुक्त उपक्रम खाता (Memorandum Joint Venture Account) : जब कोई भी उपक्रमी अपनी पुस्तकों में संयुक्त उपक्रम खाता नहीं बनाता तब उपक्रम के लाभ या हानि को ज्ञात करने के लिए यह खाता बनाया जाता है।

शेयर (Share) : कंपनी की शेयर पूंजी का एक भाग।

अभिगोपन (Underwriting) : ऐसे शेयरों को खरीदने का वचन जिन्हें जनता द्वारा न खरीदा जाए।

17.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

आर. एल. गुप्ता एवं वी. के. गुप्ता : एडवांस्ड एकाउन्टेंसी, (2018), सुल्तान चंद एंड संस, नई दिल्ली

सी. एल. चतुर्वेदी : एडवांस्ड एकाउन्टेंसी, (2018), श्री महावीर बुक डिपो, दिल्ली

विलियम पिकिल्स : एकाउन्टेंसी, (2012) ई. एल. बी. एस. एवं पिटमैन, लंदन

एम. सी. शुक्ला एवं टी. एस. ग्रेवाल : एडवांस्ड एकाउन्टेंसी, (2018), एस. चांद एंड कं, नई दिल्ली

17.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

क 1. i) अ और ब ii) अ का भाग 18,000 रुपये तथा ब का भाग 27,000 रुपये

2. i) गलत ii) सही iii) गलत
iv) गलत v) सही

ख 1. क) ii ख) i ग) ii
ध) i ड़) iii

ग 2. i) बैंक ii) संयुक्त उपक्रम iii) संयुक्त बैंक
iv) सह-उपक्रमियों के व्यक्ति खाते v) जनता द्वारा न लिए गए

17.10 स्वपरख प्रश्न/अभ्यास

प्रश्न

1. संयुक्त उपक्रम के मुख्य लक्षण बताइए। इसका प्रेषण से अंतर बताइए।

2. "संयुक्त उपक्रम अस्थायी साझेदारी है।" इस कथन की व्याख्या कीजिए तथा स्पष्ट कीजिए कि यह साझेदारी से किस प्रकार भिन्न होता है ?

3. पृथक् लेखा पुस्तकें रखे बिना संयुक्त उपक्रम व्यापार के लेन-देनों को रिकार्ड करने की विभिन्न विधियों की संक्षेप में चर्चा कीजिए।

4. संयुक्त उपक्रम के लेखों को रिकार्ड करने के लिए पृथक् लेखा पुस्तक विधि की चर्चा कीजिए।

अभ्यास

1. मोहन और सोहन एक संयुक्त उपक्रम में साझेदार थे तथा वे हानि और लाभ को आपस में 3:2 के अनुपात में बांटते थे। मोहन ने 6,000 रु. के मूल्य का माल सप्लाई किया और इस संबंध में उसने 200 रु. खर्च भी किया। सोहन ने 5,000 रु. का माल सप्लाई किया तथा उसने 300 रु. खर्च किया। सोहन ने सभी माल 18,000 रु. में बेच दिया। सोहन को विक्रय पर 4% कमीशन मिलता है और मोहन को एक बैंक ड्राफ्ट भेजकर उसने अपने हिसाब को चुकता कर दिया। दोनों पक्षों की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टि कीजिए।

   (**उत्तर** : संयुक्त उपक्रम पर लाभ 5,780 रु0; कमीशन 720 रु0)

2. जापान में स्थित **ग** को कपास की गांठे जहाज से भेजने के लिए बैंगलौर का **क** बम्बई के **ख** के साथ एक संयुक्त उपक्रम में शामिल हुआ। **क** ने 30,000 रु. के मूल्य का कपास भेजा तथा रेलभाड़ा आदि के लिए 1,500 रु. का तथा विविध व्ययों के लिए 1,575 रु. का भुगतान किया। ख ने 20,750 रु. मूल्य का माल भेजा तथा माल भाड़ा और बीमा के लिए 1,200 रु., गोदी देय (dock dues) के लिए 200 रु. , ग्राहकों पर व्यय के लिए 500 रु. तथा अन्य विविध व्ययों के लिए 500 रु. का भुगतान किया। इस उपक्रम के संबंध में **क** ने **ख** को 6,000 रु., का अग्रिम भुगतान किया। **ग** ने **ख** को विक्रय विवरण तथा समस्त माल को बेचने से हुई निवल प्राप्ति की रकम 80,000 रु. को भेजा जिसे **ख** ने प्राप्त किया।

   क और **ख** की लेखा पुस्तकों में संयुक्त उपक्रम खाता और सह-उपक्रमियों का व्यक्तिगत खाता दिखाइए।

   (**उत्तर** : संयुक्त उपक्रम पर लाभ 23,775 रु0; **क** को देय राशि 50,962.50 रु0)

3. सुंदर, बिंदिया और गोरा ने 5,00,000 रु. की लागत पर एक भवन को बनाने के लिए मोहिन्द्रा लि. के साथ ठेका किया। इसमें से उन्हें 4,00,000 रु. नकद मिलेगा तथा 1,00,000 रु. डिबेंचरों के रूप में मिलेगा। लाभ और हानि का आपस में बंटवारा वे बराबर-बराबर भाग में करेंगे।

   सुंदर, बिंदिया तथा गोरा ने क्रमशः 60,000 रु0, 75,000 रु. तथा 40,000 रु. अपना-अपना अंशदान दिया। यह सभी रकम एक संयुक्त बैंक खाते में जमा की गई। सुंदर ने आर्चिटेक्ट को 7,000 रु. दिया। संयुक्त उपक्रम के लिए बिंदिया ने

25,000 रु. में कंक्रीट मिक्सचर खरीदा तथा गोरा ने 20,000 रु. में एक मोटर ट्रक खरीदा। उन्होंने 24,000 रु. में प्लांट तथा 2,40,000 रु. में सामग्री नगद रकम देकर खरीदा तथा 1,95,000 रु. मजदूरी का भुगतान किया। भवन के बन जाने के बाद शेष सामग्री को सुंदर ने 14,000 रु. में ले लिया, बिंदिया ने कंक्रीट मिक्सचर को 12,000 रु. में ले लिया और गोरा ने ट्रक को 8,000 रु. में ले लिया। प्लांट को 6,000 रु. में बेचा गया। जब ठेकेदाता (Contractee) से पूरी रकम प्राप्त हुई तब सुंदर ने 80,000 रु. के डिबेंचरों को ले लिया। संयुक्त उपक्रम खाता, संयुक्त बैंक खाता तथा सह-उपक्रमियों के व्यक्तिगत खाते बनाइए।

(**उत्तर** : लाभ 9,000 रु.; सुंदर 24,000 रु. ले आएगा, बिंदिया को 91,000 रु. मिलेगा और गोरा को 55,000 रु. मिलेगा। संयुक्त बैंक खाते का योग 6,05,000 रु.)

4. ठेके पर मकान बनाने का अलग-अलग अपना-अपना व्यवसाय करते हुए अजय और बनवारी ने एक नव-स्थापित कंपनी का 1,00,000 रु. में भवन बनाने का संयुक्त रूप से ठेका लिया। इस रकम में उन्हें 80,000 रु. नकद मिलेगा तथा शेष 20,000 रु. कंपनी के पूर्णतः दत्त शेयरों के रूप में मिलेगा। उनके नाम में एक संयुक्त बैंक खाता खोला गया जिसमें अजय ने 25,000 रु. जमा किया तथा बनवारी ने 15,000 रु. जमा किया। आपस में वे लाभ और हानि का बंटवारा 2:1 के अनुपात में करेंगे। उनके लेन-देन निम्लखित थे :

	रु.
भुगतान की गई मजदूरी	30,000
सामग्री खरीदी गई	70,000
अजय द्वारा सप्लाई की गई सामग्री	5,000
बनवारी द्वारा सप्लाई की गई सामग्री	4,000
अजय द्वारा आर्किटेक्ट को दी गई फी	2,000

ठेके का काम संपन्न हो गया और कीमत (नकद और शेयरों के रूप में) मिल गई।

संयुक्त उपक्रम को इस प्रकार से समाप्त कर दिया गया कि अजय ने 16,000 रु. के सहमत मूल्य पर कंपनी के सभी शेयरों को ले लिया तथा बनवारी ने 3,000 रु. के सहमत मूल्य पर सामग्री के स्टॉक को ले लिया। आवश्यक लेजर खाता दिखाइए।

(**उत्तर** : हानि 12,000 रु., अजय को भुगतान 8,000 रु., बनवारी को भुगतान 12,000 रु.)

5. **क**, **ख** और **ग** एक संयुक्त पूंजी कंपनी का भवन बनाने के लिए संयुक्त उपक्रम में शामिल होते हैं। ठेके की कीमत 2,00,000 रु. है।

सह-उपक्रमियों द्वारा अदा किए गए प्रासंगिक व्ययों की प्रतिपूर्ति, वास्तविक व्यय या 10,000 रु., इनमें से जो भी कम हो उससे की जाएगी। **क** 8,000 रु. खर्च करता है तथा **ख** और **ग** क्रमशः 10,000 रु. और 12,000 रु. खर्च करते हैं। लाभ और हानि का उनके बीच बंटवारा बराबर अनुपात में करना है लेकिन क्योंकि **ग** तकनीकी व्यक्ति है अतः उसे उपक्रम के लाभ पर 10% कमीशन मिलता है जिसकी गणना कमीशन को देने के बाद की जाती है। एक संयुक्त बैंक खाता खोला जाता

है जिसमें **क**, **ख** और **ग** क्रमशः 40,000 रु., 30,000 रु. और 30,000 रु. जमा करते हैं। **क** 16,000 रु. लेकर अपना प्लांट उपक्रम को दे देता है। सामग्री के लिए 40,000 रु. और मजदूरी के लिए 60,000 रु. का भुगतान संयुक्त बैंक खाते से किया गया।

ठेका का काम संपन्न होने के बाद कंपनी सहमत ठेके की कीमत का भुगतान कर दिया। (20,000 रु. प्रतिधारण-राशि रख कर)। ठेके की कीमत का भुगतान 60,000 रु. की नकद राशि में तथा शेष कंपनी के प्रति शेयर 10 रु. के ईक्विटी शेयरों के रूप में, जिन्हें प्रति शेयर 12 रु. के सहमत मूल्य पर लिया गया, कर दिया गया। इन शेयरों को बाद में 13 रु. प्रति शेयर की दर से बाजार मूल्य पर बेचा गया। काम में लाई गई सामग्री को **क** ने 2,000 रु. में ले लिया। **ख** ने प्लांट को 4,000 रु. के सहमत मूल्य पर खरीद लिया तथा **ग** ने प्रतिधारण-राशि को 14,000 रु. में ले लिया। संयुक्त उपक्रम की पुस्तकों में आवश्यक लेजर खाते बनाइए।

संकेत : प्राप्त ठेके की कीमत 1,80,000 रु.

नकद रूप में 60,000 रु. और प्रति शेयर 12 रु. की दर से 1,20,000 रु. के मूल्य के शेयर। अतः प्राप्त शेयरों की संख्या 1,20,000 / 12 = 10,000

(**उत्तर** : लाभ 60,000 रु.; अंतिम निपटान : **क** 66,000 रु.; **ख** 72,000 रु. और **ग** 52,000 रु.0)

6. रेलवे की पुरानी सामग्री को खरीदने और बेचने के लिए देवेन्द्र और रविन्द्र एक संयुक्त उपक्रम में शामिल हुए। इससे होने वाले लाभ और हानि का वे आपस में बंटवारा बराबर के अनुपात में करते हैं। खरीदे गए माल की लागत 42,500 रु. थी जिसका भुगतान देवेन्द्र ने किया जिसने रविन्द्र के नाम दो माह का 30,000 रु. के लिए बिल लिखा। देवेन्द्र ने 240 रु. की लागत पर इस बिल को भुनाया।

संयुक्त उपक्रम में से संबंधित लेन-देन यों थे : क) देवेन्द्र ने रेलभाड़ा के लिए 300 रु.; विक्रय पर कमीशन के लिए 500 रु. तथा यात्रा भत्ते के लिए 200 रु. का भुगतान किया। (ख) रविन्द्र ने यात्रा भत्ते के लिए 100 रु. और विविध व्ययों के लिए 150 रु. का भुगतान किया। (ग) देवेन्द्र ने 20,000 रु. में माल बेचा और (घ) रविन्द्र ने 30,000 रु. में माल बेचा।

10,000 रु. और 1,500 रु. की लागत के माल (अनबिका स्टॉक) को क्रमशः देवेन्द्र और रविन्द्र ने रख लिया। इनके लिए उनसे अन्य माल के सामान की कीमत ली गई जिससे वही सकल लाभ दिखाया जा सके जो कुल विक्रय पर होता। देवेन्द्र को 400 रु. से क्रेडिट किया गया जिससे मालगोदाम और बीमा की लागत को पूरा किया जा सके। बिलों पर होने वाले खर्चों का लेखा संयुक्त उपक्रम के व्यय के रूप में किया गया।

प्रत्येक पक्ष की लेखा पुस्तकों में आवश्यक खातों को दिखाइए तथा मेमोरेंडम संयुक्त उपक्रम खाता बनाइए।

(**उत्तर** : संयुक्त उपक्रम पर लाभ 8,735 रु.; देवेन्द्र द्वारा रविन्द्र को भुगतान 2,742.50 रु., सकल लाभ की दर 25%; 1,250 रु. के मूल्य का स्टॉक देवेन्द्र ने लिया तथा 1,875 रु. के मूल्य का स्टॉक रविन्द्र ने लिया)

7. 1 जनवरी, 2018 को आकाश और विजय एक संयुक्त उपक्रम में शामिल हुए। आकाश ने 4,000 रु. लागत का माल खरीदा और उसी दिन उसे विजय से 1,500 रु. का चैक मिला। आकाश और विजय ने निम्नलिखित प्रकार से व्यय किया :

	Akash	Vijay
1 फरवरी	300	
1 अप्रैल	300	
1 मार्च		400
31 मई		1400

विजय ने माल को दो मास में बेच दिया, अर्थात 1 अप्रैल को 4,800 रु. का माल बेचा और 30 जून को 2,400 का माल बेचा। लाभ और हानि का बंटवारा वे आपस में बराबर के अनुपात में करते हैं तथा प्रतिवर्ष 5% की दर से उन्हें ब्याज मिलता है। 1 जून को विजय ने आकाश को 2,500 रु. का तीन महीने का बिल दिया। 30 जून को उपक्रम का काम संपन्न हो गया। और दोनों पक्षों के बीच चैक के द्वारा हिसाब चुकता कर दिया गया। महीनों में ब्याज की गणना कीजिए और आवश्यक खाता दिखाइए।

(**उत्तर** : आकाश 368.70 रु. और विजय 368.70 रु.; आकाश 110 रु. ब्याज लेगा और विजय 47.50 रु. ब्याज देगा।)

नोटः ये प्रश्न/अभ्यास इस इकाई को बेहतर ढंग से समझने में आपकी सहायता करेंगे। इनके उत्तर लिखने का प्रयास कीजिए। अपने उत्तर विश्वविद्यालय को न भेजें। ये केवल आपके अपने अभ्यास के लिए हैं।

NOTES

NOTES

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

NOTES